ग़ैर मुक़ल्लेदीन के

एतेराज़ात के जवाबात

सिलसिलये इशाअ़त (2)

तर्के रफे यदैन

अहादीसे सहीहा व आसारे सहाबा व ताबेईन की रौशनी में

मुसन्निफ़

मुफ्ती रज़ाउल हक़ अशरफ़ी मिस्बाही

नाशिर

अहले सुन्नत रिसर्च सेंटर मुम्बई

मुलहक़

अस्सय्यद महमूद अशरफ़ दारुत्तहक़ीक़ वत्तसनीफ़,

जामे अशरफ़ दरगाह किछौछा शरीफ़ ज़िला अम्बेडकर नगर यूपी

जुमला हुकूक बह़क़्क़े नाशिर महफ़ूज़

नाम किताब : **तर्के रफ़ेयदैन** (सह़ी अह़दीस व आसार की रौश्नी में)

मुसन्निफ़ : **मुफ्ती रज़ाउल ह़क़ अशरफ़ी मिस्बाह़ी**

कम्पोज़िन्ग : **मोह़म्मद हारून अशरफ़ी जामे अशरफ़ दरगाह किछौछा शरीफ़ (अम्बेडकर नगर) यूपी** 09258495628

नाशिर : **अहले सुन्नत रिसर्च सेंटर मुम्बई**

पहला एडीशन : **शव्वाल** 1436 **हि०/जुलाई** 2015 **ई०**

सफहात : 176

क़ीमत :

मिलने के पते

(1) अस्सय्यद मह़मूद अशरफ़ दारुत्तह़क़ीक़ वत्तसनीफ़, जामे अशरफ़ किछौछा शरीफ यूपी

(2) अहले सुन्नत रिसर्च सेंटर मुम्बई मोबाइल : 09887517751

(3) मकतबा फ़ैज़ाने सरकारे कलां जामे अशरफ़ दरगाह किछौछा शरीफ **09889757557**

(4) अल–अशरफ़ एकेडमी राजमह़ल साहिबगंज झारखन्ड ,मो0 08869998234

(5) *अल– अशरफ़ एकेडमी एल–*16 *अबुल फ़ज़्ल इनकिलेव जामेया नगर ओखला नई दिल्ली* 25, *मो०* 09013008786

फेहरिस्त

क्र०	उनवानात	प्र०
1	किताब 'तर्के रफ़ेयदैन' क्यों लिखी गई?	8
2	रफ़ेयदैन न करने की पहली हदीस	16
3	ह़ज़रत अबदुल्लाह इबने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की हदीस	16
4	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के पहले रावी	16
5	इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे तआ़ला अ़लैह	16
6	इमामे अबू ह़नीफ़ा की ह़यात में जो सह़ाबये किराम बाह़यात थे	17
7	इमामे अबूह़नीफ़ा ने जिन शुयूख़ से अह़ादीस का सिमा किया	18
8	इमामे अबू ह़नीफ़ा के चन्द ख़ास मशहूर मोह़द्दिस शागिर्द	20
9	इमामे अबू ह़नीफ़ा नाक़ेदीने ह़दीस की नज़र में	22
10	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के दूसरे रावी	23
11	इमामे ह़म्माद बिन अबी सुलैमान मौतः 120 हि0	23
12	इमामे हम्माद ताबेईन व मोह़द्दसीन की नज़र में	24
13	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के तीसरे रावी	25
14	इब्राहीम बिन यज़ीद अल नख़ई मौतः 95 या 96 हि0	25
15	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के चौथे रावी	26
16	इमामे अ़लक़मा बिन क़ैस मौतः 62 हि0	26
17	इमामे असवद इब्ने यज़ीद मौतः 74 या 75 हि0	26
18	हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो मौत 32 हि0	26
19	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की दूसरी सनद	27
20	अहले ह़दीस का एतेराज़	27
21	एतेराज़ का जवाब	28
22	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की तीसरी सनद	28
23	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की चौथी सनद	28
24	शैख़ अलबानी (अहले ह़दीस) के नज़दीक रफ़ेयदैन की ह़दीस सही है	28
25	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की पांचवी सनद	28
26	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की छटी सनद	29
27	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की सातवीं सनद	29
28	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की आठवीं सनद	29
29	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की नौवीं सनद	30
30	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की दसवीं सनद	30
31	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की ग्यारहवीं सनद	30

32	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की बारहवीं सनद	30
33	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की तेरहवीं सनद	31
34	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की चौधवीं सनद	31
35	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की पंदरहवीं सनद	31
36	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की सोलहवीं सनद	31
37	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की सतरहवीं सनद	33
38	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की अटठारहवीं सनद	33
39	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की उन्नीसवीं सनद	34
40	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की बीसवीं सनद	34
41	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की इक्कीसवीं सनद	34
42	अहले हदीस का एतेराज़ और उसका जवाब	34
43	हदीसे इब्ने मसऊद पर अहले ह़दीस का दूसरा एतेराज़ और उसका जवाब	35
44	ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की बाईसवीं सनद	40
45	दारकुत्नी के रीमार्क का जवाब	40
46	हदीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की तेईसवीं सनद	41
47	रफ़ेयदैन न करने की दूसरी ह़दीस	42
48	ह़दीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो	42
49	हदीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की इसनादी हैसियत	43
50	हदीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के पहले रावी	43
51	इमामुल मोह़द्देसीन वल फ़ुक़हा इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे तआ़ला अलैह	43
52	हदीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के दूसरे रावी	43
53	इइमामे आ़मिर बिन अ़ब्दुश्शोबी मौतः 109 हि0	43
54	हज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो मौतः 72 हि0	44
55	रफ़यदैन न करने की यह ह़दीस सनद के एतेबार से बहुत आला है	44
56	रफ़यदैन न करने की तीसरी ह़दीस	45
57	रफ़यदैन न करने की चौथी ह़दीस	46
58	रफ़यदैन न करने की पांचवीं ह़दीस	48
59	रफ़यदैन न करने की छटी ह़दीस	48
60	रफ़यदैन न करने की सातवीं ह़दीस	48
61	रफ़यदैन न करने की आठवीं ह़दीस	49
62	रफ़यदैन न करने की नौवीं ह़दीस	49
63	रफ़यदैन न करने की दसवीं ह़दीस	49
64	रफ़यदैन न करने की ग्यारहवीं ह़दीस	49
65	रफ़यदैन न करने की बारहवीं ह़दीस	50

66	रफ़यदैन न करने की तेरहवीं ह़दीस	50
67	रफ़यदैन न करने की चौधवीं ह़दीस	51
68	रफ़यदैन न करने की पंदरहवीं ह़दीस	51
69	रफ़ेयदैन न करने का सुबूत सिहाह़े सित्ता की अह़ादीस से	51
70	रफ़यदैन न करने की सोहलवीं ह़दीस	52
71	रफ़यदैन न करने की सतरहवीं ह़दीस	52
72	नमाज़ में रफ़ेयदैन न करने बल्कि सुकून इख्तियार करने का हुक्म	53
73	हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाह तआला अ़न्हो की रिवायात	54
74	रफ़यदैन न करने की अठारहवीं ह़दीस	54
75	रफ़यदैन न करने की उन्नीसवीं ह़दीस	54
76	रफ़यदैन न करने की बीसवीं ह़दीस	54
77	रफ़यदैन न करने की इक्कीसवीं ह़दीस	54
78	वह कुतुबे अह़दीस जिनमें तकबीरे तह़रीमा के सिवा मुतलक़न रफ़ेयदैन से मना है	55
79	वह कुतुबे अह़दीस जिनमें सलाम के वक़्त रफ़ेयदैन से मना है	56
80	रफ़यदैन न करने की बाईसवीं ह़दीस	57
81	रफ़यदैन न करने की तेईसवीं ह़दीस	58
82	रफ़यदैन न करने की चौबीसवीं ह़दीस	58
83	रफ़यदैन न करने की पच्चीसवीं ह़दीस	60
84	रफ़यदैन न करने की छब्बीसवीं ह़दीस	62
85	रफ़यदैन न करने की सत्ताईसवीं ह़दीस	62
86	ह़जरते अ़ब्बाद बिन जुबैर रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हो की ह़दीस	62
87	रफ़ेयदैन न करने पर आसारे सह़ाबये किराम	63
88	खुलफ़ाये राशेदीन के अ़मल से रफ़ेयदैन न करने का सुबूत	63
89	हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हो रफ़ैयदैन नहीं करते थे	63
90	एक एतेराज़ और उसका जवाब	63
91	हज़रते उमर रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हो रफ़ैयदैन नहीं करते थे	63
92	अहले ह़दीस का एतेराज़ और उसका जवाब	65
93	हज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हो रफ़ैयदैन नहीं करते थे	65
94	हज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हो रफ़ैयदैन नहीं करते थे	66
95	ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने जुबैर के नज़दीक रफ़ेयदैन की अह़ादीस मन्सूख़ हैं	67
96	ग़ैर मुक़ल्लिद सिद्दीक़ ह़सन के बक़ौल रफ़ेयदैन मन्सूख़ है	67
97	हज़रते अ़ब्दुल्ला इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हो रफ़ैयदैन नहीं करते थे	67
98	अ़शरये मुबश्शरा रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हुम रफ़ैयदैन नहीं करते थे	68
99	हज़रते अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हो रफ़ैयदैन नहीं करते थे	68

100	वह ताबेईने किराम जो रफ़ेयदैन नहीं करते थे	69
101	इब्राहीम बिन यज़ीद अल नखई मौतः 95 या 96 हि0 रफयदैन नही करते थे	69
102	हज़रते खैसुमा रफ़ैयदैन नहीं करते थे	70
103	हज़रते क़ैस बिन अबू हाज़िम रफ़ैयदैन नहीं करते थे	71
104	हज़रते आमिर शोबी रफ़ैयदैन नहीं करते थे	74
105	हज़रते इब्ने मसऊद व हज़रते अली के असहाब रफ़ैयदैन नहीं करते थे	75
106	हज़रते अब्दुर्रहमान इब्ने अबी लैला रफ़ैयदैन नहीं करते थे	76
107	हज़रते मुआविया इब्ने हिशाम मौतः 204 या 205 हि0	77
108	इमामे मालिक के नज़दीक रफ़ेयदैन नहीं	77
109	फुक़हाये किराम रफ़ैयदैन नहीं करते थे	79
110	हज़रते हज़रते अबूबक्र बिन अय्याश रहमतुल्लाहे अलैहे का बयान	79
111	क्या रफ़ेयदैन पचास सहाबा से मरवी है?	79
112	क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़िन्दगी भर रफ़ेयदैन किया?	80
113	रफ़ेयदैन करने की चार सौ रिवायात–– एक क़िस्सा	81
114	इमामे मोहम्मद रहमतुल्लाहे अलैह पर इल्ज़ाम	84
115	ग़ौसे आज़म के नाम का ग़लत इस्तेमाल	85
116	दुर्रे मुख्तार की इबारत से धोका	86
117	हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर भूलने का इल्ज़ाम	87
118	फ़िरक़ये अहले हदीस के एतेराज़ात के जवाबाद	89
119	एक हैरानकुन बात	90
120	एतेराज़ात व जवाबात	91
121	इमामे अबू हनीफ़ा और इमामे औज़ाई का मुबाहसा	93
122	ग़लत फ़हमियों का इज़ाला	105
123	पहली ग़लत फ़हमी	105
124	ग़लत फ़हमी का इज़ाला	105
125	दूसरी ग़लत फ़हमी	110
126	ग़लत फ़हमी का इज़ाला	110
127	तीसरी ग़लत फ़हमी	111
128	ग़लत फ़हमी का इज़ाला	111
129	अबू मोहम्मद अब्दुल्लाह बिन याकूब हारेसी बुख़ारी पर अक़वाले जरह का तनक़ीदी जायज़ा	111
130	अबू मोहम्मद हारिस बुख़ारी की हैसियत	112
131	हसन इब्ने ज़ियाद लोलुई पर जरह का जवाब	118
132	हसन इब्ने ज़ियाद लोलुई के तअल्लुक़ से एक मन गढ़त क़िस्सा	121
133	हसन इब्ने ज़ियाद के तक़वे का एक नादिर वाक़ेया	127

134	अ़रब मोह़क़्क़ेक़ीन के नज़दीक ह़सन इब्ने ज़ियाद सिक़ह हैं	136
135	उलमाये अहले ह़दीस जवाब दें	138
136	इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा पर एक संगीन इलज़ाम का जवाब	141
137	इमामे अबू ह़नीफ़ा के मुतअ़ल्लिक़ एक मनगढ़त वाक़ेया	142
138	रफ़ेयदैन के तअ़ल्लुक़ से एक गढ़ी हुई रिवायत	152
139	सनद का तनक़ीदी जायज़ा	153
140	ह़ाफ़िज़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई की झूटी बातें	157
141	एक अहम पैग़ाम–जवानाने अहले सुन्नत के नाम	164
142	माख़ज़ व मराजे	166
143	मुसन्निफ़ की किताबें	174

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

किताब *'तर्के रफ़ेयदैन'* क्यों लिखी गई?

नमाज़ में तकबीरे तहरीमा कहते वक्त दोनों हाथों को उठाना सुन्नत है। इस पर बहुत सारी सही हदीसें, सहाबा के आसार और ताबेईन के अक़वाल व आमाल मौजूद हैं। इस पर सब का इत्तिफ़ाक़ है। लेकिन रुकू में जाते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त तीसरी रकअ़त के लिये उठने के बाद या सजदे में जाते वक़्त या दोनों सजदों के दरमियान रफ़ेयदैन किया जाए या नहीं इसमें मोहद्दिसीन व फुक्हा का इख्तिलाफ़ है। बाज़ के नज़दीक रफ़ेयदैन करना चाहिए और बाज़ के नज़दीक रफ़ेयदैन नहीं करना चाहिए।

इस इख्तिलाफ़ की बुनियादी वजह यह है के रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और सहाबये किराम से रफ़ेयदैन के तअ़ल्लुक़ से मुख्तलिफ़ रिवायात मनकूल हैं। बाज़ रिवायात में है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे व सल्लम ने रुकू करते वक्त, रुकू से उठते वक़्त और बाज़ में है के सजदे में जाते वक़्त और दो सजदों के दरमियान और बाज़ में है के दो रकअ़त से उठते वक़्त रफ़ेयदैन किया है। बाज़ रिवायात में है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे व सल्लम ने सिर्फ़ तकबीरे तहरीमा के वक्त रफ़ेयदैन किया है और पूरी नमाज़ में कहीं रफ़ेयदैन नहीं किया। इमामे अहमद इब्ने हम्बल, इमामे शाफ़ेई वग़ैरा मुजतहेदीन ने रफ़ेयदैन करने की अहादीस को अपने उसूल व ज़वाबित की रौशनी में ज़्यादा मज़बूत व क़ाबिले तरजीह समझा और उन्होंने रफ़ेयदैन किया और इन अइम्मए मुजतहेदीन के मुक़ल्लेदीन ने भी अपने अइम्मा की तह़क़ीक़ पर एतमाद करते हुए रफ़ेयदैन किया। इस लिए शाफ़ेई व ह़म्बली ह़ज़रात रफ़ेयदैन करते हैं। लेकिन इमामे अबू हनीफ़ा और अइम्मए अहनाफ़ के नज़दीक रफ़ेयदैन न करने की अहादीस ज़्यादा क़वी और रफ़ेयदैन की अह़ादीस के लिए नासिख़ है, इस लिए उन्होंने रफ़ेयदैन न करने की अह़ादीस को तरजीह दी और उन पर अ़मल किया और उनके मुक़ल्लेदीन ने उन की तह़क़ीक़ व इजतेहाद पर एतेमाद करते हुए रफ़ेयदैन नहीं किया। यही वजह है के ह़नफ़ी ह़ज़रात रफ़ेयदैन नहीं करते। यह एक फ़िक़ही और फ़ुरूई इख्तेलाफ़ था, इस इख्तेलाफ़ की बुनियाद पर अहले सुन्नत वल जमाअ़त ने कभी भी एक दूसरे को मुखालिफ़े सुन्नत, मुनकिरे ह़दीस या गुमराह नहीं कहा। न किसी ह़नफ़ी ने किसी शाफ़ेई या ह़म्बली को मुनकिरे ह़दीस कहा न किसी शाफ़ेई या ह़म्बली ने किसी ह़नफ़ी को मुनकिरे ह़दीस कहा। चारों अइम्मा के मानने वाले अहलेसुन्नत वल जमाअ़त हैं। इस लिये इन के दरमियान क़िरअत ख़लफ़ल इमामे (इमामे के पीछे किरअत करना), आमीन बिलजहर (ज़ोर से आमीन कहना) रफ़ेयदैन (नमाज़ में तकबीरे तह़रीमा के अ़लावा दोनों हाथों को

उठाना) वगैरा फ़ुरुई व फ़िक़ही मसाइल में इख़्तेलाफ़ होने के बावजूद हर एक दोसरे को अहले हक़, अहले सुन्नत कहते हैं और कोई किसी पर लान तान नहीं करता। बल्कि लान तान करने को सख़्त गुनाह तसव्वुर करता है।

बारहवीं सदी हिजरी तक इन फ़ुरूई इख़्तेलाफ़ को किसी ने गुमराही नहीं कहा। लेकिन बारहवीं सदी हिजरी में मोहम्मद बिन अ़ब्दुल वहहाब नजदी (मौतः 1206 हि0) का फ़ितना उठा और उसने हरमैन तय्ये बैन में अहले सुन्नत व जमाअ़त पर ज़ुल्मो तशद्दुद और क़त्लो ख़ूंरेज़ी का बाज़ार गरम किया। तौहीद के नाम पर अ़ज़मते रिसालत व शाने औलिया पर हमला किया। उस वक्त हरमे काबा में चारों अइम्मये मज़ाहिब के मुसल्ले बिछते थे। उसने ह़म्बली लिबादा ओढ़ लिया लेकिन वह चारों अइम्मा का खुला दुश्मन था। उसने अपनी एक अलग जमाअ़त (वहाबी) बनाने की तहरीक चलाई। उसके नज़दीक अम्बिया से तवस्सुल, ज़ियारते कुबूर, ताज़ीमे अम्बिया व सालेहीन हराम बल्कि शिर्क था। यहां तक के गुम्बदे ख़ज़रा को उसने सनमे अकबर (सब से बड़ा बुत) कहा। अपने अक़ाइद व नज़रियात की इशाअ़त के लिए 'किताबुत्तौहीद' नाम की किताब लिखी। उसके वालिद शैख़ अ़ब्दुल वहहाब और उस के भाई शैख़ सुलैमान बिन अ़ब्दुल वहहाब दोनों उस के नज़रियात के मुख़ालिफ़ थे। जिस के नतीजे में बाप को बेटे की बदज़बानी की तकलीफ़ बरदाश्त करनी पड़ी और भाई को वतन से दूर जाना पड़ा और भाई के ख़िलाफ़ 'अस्सवाइकलु इलाहिया फिर्रद्दे अ़लल वहाबिया' नाम की किताब लिखनी पड़ी। मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहहाब की नज़र में हरमैन तय्येबैन के उ़लमा व अ़वामे अहले सुन्नत ताज़ीमे क़ुबूरे अम्बिया व शआ़यिरे इस्लाम, तवस्सुले अम्बिया व ज़ियारिते कुबूरे सालेहीन की बुनियाद पर मुश्रिक हो गए थे। लिहाज़ा मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहहाब के नज़दीक वह मुबाहुद्दम (क़त्ल होने के लाइक़) थे। उनका क़त्ल जाइज़ था। चुनांचे उस ने वालीए मक्का को अपना हमनवा बनाया और उस की मदद से बे शुमार उलमाये अहले सुन्नत का क़त्ले आ़म करवाया। शआ़इरे अम्बिया (नबियों की निशानियों) को मिटाया। शुहदा के मज़ारात को मिस्मार किया और नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की पेशगोई के मुताबिक़ फ़ित्नये खवारिज (ख़ारिजी फ़ित्ना) नज्द से वहाबी लिबास में मलबूस हो कर हरमैन पर मुसल्लत हो गया।

(मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहहाब के बारे में मालूमात के लिए अंग्रेज़ी जासूस हिमफिरे की किताब *'हिमफ़िरे के एतराफ़ात'* का मुतालआ़ करें।)

वहाबी नज़रियात की ह़ामिल आले सऊद की हुकूमत ने ह़रमैन शरीफ़ैन में वही सब किया जो उन के पेशवा मोहम्मद बिन अ़ब्दुल वहहाब नजदी का अस्ल टारगेट था। वहाबी दौरे हुकूमत में ह़रम शरीफ़ से यह कह कर चारों अइम्मा के मुसल्लों को

उठा दिया गया कि इस से उम्मते मुस्लिमां में फ़िरक़ा बन्दी पैदा होती है। हम्बली मुसल्ले पर 'वहाबी' मुसल्ला बिछा दिया गया और चारों मज़ाहिब के लागों को वहाबी इमामे की इक्तिदा का पाबन्द कर दिया गया। हरमैन तय्येबैन में मुसलमान बारहवीं सदी हिजरी तक जिन इस्लामी अक़ाइदो नज़रियात पर जमे हुए थे शेख़ मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी ने उनको कुफ़्रो शिर्क कहा। उसने कहा "छह सौ साल से तमाम दुनिया के मुसलमान काफ़िरो मुश्रिक हैं। जो मक़बरों में जाकर दुआ करे, मज़ारात को चूमे, क़ब्रों की मिटटी ले, औलिया से मदद तलब करे वह भी काफ़िर है। अम्बिया व औलिया की शफ़ाअत मानने वाला काफ़िर है, उस का मालो जान हलाल है। या रसूलुल्लाह कहने वाला काफ़िर है। वह यह भी कहता था मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की क़ब्र को, उनके मशाहिद और उनके आसार व मसाजिद और किसी नबी या वली की क़ब्र को और तमाम मज़ारात के लिए सफ़र करना शिर्क है, वह मज़ारात को मूरतियों से तश्बीह देता था।

मुजतहेदीने उम्मत का दौर गुज़र जाने के बाद अइम्मये मुजतहेदीन की तक़लीद ज़रुरी हुई। ग़ैर मुजतहेदीन फ़ुक़हा व उलमा व आम मुसलमान चारों फ़िक़ही इमामे में से किसी एक की तक़लीद करते हैं। सारे मुक़ल्लेदीन हनफ़ी, हमबली, मालेकी और शाफ़ेई अहले हक़ अहले सुन्नत हैं। फ़िक़ही इख़्तिलाफात के बावजूद बाहम शीरो शकर रहे। किसी ने किसी को फ़िक़ही मसाइल में इख़्तिलफ़ की बुनियाद पर काफ़िर, गुमराह या फ़ासिक़ नहीं कहा। लेकिन हिमफ़िरे के बक़ौल मोहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के नज़दीक हनफ़ी, शाफ़ेई, हम्बली और मालेकी मकातिबे फ़िक्र में से किसी मकतबे फ़िक्र की कोई अहमियत नहीं थी। वह कहता था के खुदा ने जो कुछ कुरआन में फ़रमा दिया है बस वही हमारे लिए काफ़ी है। वह अबू हनीफ़ा की तहक़ीर करते हुए कहता था मैं अबूहनीफ़ा से ज़्यादा जानता हूँ। हद यह है के उस का यह दावा भी था के निस्फ़े बुख़ारी (बुख़ारी शरीफ़ की आधी किताब) बिल्कुल लचर और बेहूदा है। (देखिए किताब 'हिमफ़िरे के एतराफ़ात')

हिन्दुस्तान तेरहवीं सदी हिजरी तक फ़ित्नये वहाबियत के ज़हर से महफ़ूज़ रहा। यहां अकसरियत अहले सुन्नत की थी और क़लील तादाद में शिया भी थे। ख़ानदाने शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी में मौलवी इस्माईल देहलवी (मौत 1246 हि0/1831 ई0) पैदा हुए। वह अपने पीर सय्यद अहमद राय बरेलवी के हमराह सफ़रे हरमैन शरीफ़ैन से वापसी पर वहाबी अक़ाइदो नज़रियात भी साथ लाए और हिन्दुस्तान में वहाबियत की तबलीग़ शुरु की। शैख़ मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी की किताब '*किताबुत्तौहीद*' का खुलासा उर्दू ज़बान में तकवियतुल ईमान के नाम से लिखा। इस में लिखा के अल्लाह के नबी मर कर मिटटी में मिल गए।

उनका यह भी कहना था के नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख्याल लाना अपने बैल गधे के ख्याल में डूब जाने से बदरजहा बद तर है (*सिराते मुस्तक़ीम स0 97*) हर बड़ा छोटा (नबी, वली या ग़ैर नबी वली) अल्लाह के आगे चमार से ज़्यादा ज़लील है। सारे अम्बिया आजिज़ बन्दे और हमारे भाई हैं, अल्लाह ने उन्हें बड़ाई दी वह बड़े भाई हुए। अपनी औलाद का नाम अ़ब्दुन्नबी, अ़ब्दुर्रसूल रखना शिर्क है। कुरबे क़यामत एक हवा चलेगी जिससे सारे मुसलमान मर जायेंगे सो वह हवा चल चुकी है। यानी अब कोई मुसलमान दुनिया में न रहा। (यही बात शैख़ नजदी ने कही थी कि छः सौ साल से दुनिया में कोई मुसलमान नहीं) मौलवी इस्माईल देहलवी यह भी कहते थे के खुदा झूट बूल सकता है। (रिसाला यक रोज़ी स0 149)

खुद मौलवी इस्माईल देहलवी को एहसास था के उनकी किताब तक़वियतुल ईमान से उम्मत में इख्तिलाफ़ पैदा होगा। चुनांचे उन्होंने कहा था के उसमें (तक़वियतुल ईमान में) बाज़ जगह ज़रा तेज़ अलफ़ाज़ भी आ गए हैं और बाज़ जगह तशद्दुद भी हो गया है। गो इस से शोरिश होगी मगर तवक्को है के लड़ भिड़ कर खुद ठीक हो जायेंगे। (अरवाहे सलासा स0 81)

मौलवी इस्माईल देहलवी की वह किताब जिस से मुसलमानों में इन्तिशार फैलने वाला था अन्ग्रेज़ों को इतनी पसन्द आई के उसका अंग्रेज़ी तरजमा करवा कर 1856 ई0 में लन्दन से शाये करवाया।

सर सय्यद अ़लीगढ़ी लिखते हैं : जिन चौदह किताबों का ज़िक्र डाक्टर हंटर साहब ने अपनी किताब में किया है उन में सातवीं किताब तक़वियतुल ईमान है। चुनांचे इस किताब का अंग्रेज़ी तरजमा रायल एशियाटिक सोसाइटी लन्दन के रिसाला जि0 12 1825 ई0 में छपा था। (मक़ालात सर सय्यद 9/178) शैख मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहाब नजदी तक़लीद को हराम बल्कि शिर्क समझता था अगरचे शुरू में अपने आप को छुपाये रखने के लिए खुद को ह़म्बली कहलाता था। (शैख नजदी की किताब 'रिसाला फ़ी तह़रीमित्तक़लीद' का ज़िक्र हिन्दुस्तानी वहाबी आ़लिम नवाब सिद्दीक़ ह़सन खां भोपाली ने किया है) यही नज़रिया मौलवी इस्माईल देहलवी का था। मौलवी इस्माईल देहलवी ने भी अइम्मये अरबआ़ में से किसी की तक़लीद को ज़रुरी क़रार नहीं दिया। (मुशाहदाते काबुल व याग़िस्तानः मोहम्मद अ़ली कुसूरी प्र0 156)

हिन्दुस्तान में सुन्नी मुसलमान मुक़ल्लिद थे। मौलवी इस्माईल देहलवी ने सब से पहले फितनये ग़ैर मुक़ल्लिदियत की बुनियाद डाली। हिन्दुस्तान में वहाबी तहरीक के एजेन्डे में अंग्रेज़ दोसती भी थी। क्योंकि वहाबी अ़क़ाइदो नज़रियात को फैलाकर मुसलमानों में इफ्तिराक़ो इन्तिशार पैदा करने के लिए अंग्रेज़ों की वफ़ादारी ज़रुरी थी। चुनांचे मौलवी इस्माईल देहलवी ने हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी हुकूमत की ह़िमायत की और

उसके ख़िलाफ़ फ़त्वये जिहाद को ग़लत कहा। मौलवी इस्माईल देहलवी के पैरोकार जो ग़ैर मुक़ल्लेदीन के शैखुलकुल कहलाते हैं वह हैं मौलवी मियां नज़ीर हुसैन देहलवी (मौत 1320 हि0/1902 ई0)। उन्हें तक़लीद अइम्मा के ख़िलाफ़ 'मेयारुलहक़' नामी किताब लिखने के इनआ़म में अंग्रेज़ी हुकूमत की तरफ़ से शमसुल उलमा का ख़िताब मिला था।

इब्तिदा में वहाबी तहरीक से मुसल्मानों को सख़्त बद दिली थी वह उसको अपने दीनो ईमान के लिए ख़तरनाक समझते थे क्योंकि वह जानते थे के यह फ़ित्ना सर ज़मीने नजद से निकल कर मोहम्मद बिन अ़ब्दुलवहाब नजदी के पैरोकारों के ज़रिये हिन्दुस्तान पहुँचा है। वहाबी तहरीक से आ़म मुसलमानों की बेज़ारी को देखते हुए मौलवी इस्माईल देहवली के पैरोकारों ने बड़ी होशियारी से अपनी तह़रीक का मह़वर कुरआनो हदीस को ज़ाहिर किया और भोले भाले मुसलमानों को इस तरह के खुशनुमा जुमलों से बहकाना शुरु किया " इस्लाम की बुनियाद कुरआनो हदीस है लिहाज़ा कुरआनो हदीस को मानो किसी इमामे की तकलीद करना मना है।" किसी ने कहा तक़लीद शिर्क है, किसी ने कहा गुमराही है। उनके इन खुशनुमा जुमलों के पीछे जो 'मग़रिबी साज़िश' और 'ख़ारजी फ़िक्र' पोशीदा थी उससे आ़म लोग नावाक़िफ़ थे। नतीजे में कुछ लोग उनके जाल में फंसने लगे। फ़िर भी आ़म तौर से उन्हें वहाबी कहे जाने की वजह से मुसलमानों में उनसे बेज़ारी और नफ़रत रहती थी। लिहाज़ा अब वहाबी फ़ित्ना ने अपना चोला बदला और रियासत पंजाब पाकिस्तान (ग़ैर मुनक़सिम हिन्दुस्तान का हिस्सा) के अंग्रेज़ गवरनर को एक दरख़ास्त दी कि हमारी जमाअ़त हुकूमत (अंग्रेज़) की बहीख्वाह है लेकिन हमारे नाम के साथ सरकारी दस्तावेज़ में हर जगह वहाबी लिखा जाता है जिससे आ़म मुसलमानों में हमारी तरफ़ से बेज़ारी पैदा होती है लिहाज़ा हम दरख्वास्त करते हैं के तमाम सरकारी दस्तावेज़ में हमारे नाम के साथ वहाबी न लिखा जाए बल्कि 'अहले हदीस' लिखा जाए। गवरनर पंजाब ने यह दरख्वास्त मन्जूर कर ली और उनके नाम के साथ 'अहले हदीस' लिखा जाने लगा। जब फ़ित्नये वहाबियत ने अपने नाम के साथ 'अहले हदीस' का खुशनुमा लेबिल लगाया तो रफ्ता रफ्ता लोग यह भूलने लगे के यह फ़िरक़ा दर हक़ीक़त हदीसे रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की आड़ में वहाबी अ़क़ाइद की तबलीग़ करने वाला है। यहाँ यह तारीख़ी हक़ीक़त भी ज़िक्र कर देना ज़रूरी है के हिन्दुस्तान में वहाबी तह़रीक का शायद गला घोंट दिया जाता अगर उसे उलमाये देवबन्द रशीद अह़मद गंगोही, मौलवी ख़लील अह़मद अम्बेठवी, मौलवी अशरफ़ अ़ली थानवी वग़ैरुहुम की ताईदो

हिमायत हासिल न होती। मौलवी इस्माईल देहलवी की किताब 'तक़वियतुल ईमान' जिससे मुसलमानों का शीराज़ा बिखरा, जिसमें सारे मुसलमानों को काफ़िर लिखा गया, जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम और औलिया की शान में गुस्ताख़ाना बातें लिखी गयीं उसकी तारीफ़ करते हुए मौलवी रशीद अहमद गंगोही ने यह लिखा "तक़वियतुल ईमान बहुत अच्छी किताब है और शिर्को बिदअ़त की तरदीद में बेमिसाल है।" मौलवी रशीद अह़मद गंगोही ने वहाबियों की हिमायत में यह लिखा "मोहम्मद बिन अ़ब्दुल वहाब के मुक़तदियों को वहाबी कहते हैं उनके अ़क़ाइद उम्दा थे। उनके मुक़तदी अच्छे है। मगर जो ह़द से बढ़ गए हैं उनमें फ़साद आ गया है और अ़क़ाइद सबके मुत्तफ़िक़ हैं। (फ़तावये रशीदिया ख0 1 प्र0 119)

रफ्ता तफ्ता वहाबी तहरीक ने हिन्दुस्तान में 'वहाबी फ़िरक़ा' को जन्म दिया जो बाद में चल कर दो गुरुप 'अहले हदीस' (वहाबी ग़ैर मुक़ल्लदीन) और 'देवबन्दी' (वहाबी मुक़ल्लदीन) में तक़सीम हो गया। देवबन्दी गिरोह अ़क़ाइदो नज़रियात में अहले हदीस (वहाबी) की ताईद करता है। (बल्कि उलमाये देवबन्द रशीद अह़मद गंगोही, अशरफ़ अ़ली थानवी वग़ैरहुम ने अपनी किताबों में हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की शान अक़दस में गुस्ताख़ाना इबारतें लिखीं हैं) और तक़लीद में अहले हदीस से इख़्तिलाफ़ रखता है। अकसर देवबन्दी इमामे अबू हनीफ़ा के मुक़ल्लिद होने के सबब अहले हदीस (ग़ैर मुक़ल्लेदीन) के ख़िलाफ़ तक़लीद के सुबूत पर किताबें भी लिखते हैं। लेकिन अ़क़ाइदो नज़रियात में मेल जोल होने की वजह से वहाबी जमाअ़त में वह शरीक रहते हैं। अ़क़ाइद के लिहाज़ से देवबन्दी गिरोह को वहाबी कहा जाता है और तक़लीद के मसअले में अहले हदीस से इख़्तिलाफ़ होने की वजह से उन्हें अहले हदीस (ग़ैर मुक़ल्लिद) नहीं कहा जाता। वहाबी फ़िरक़े की ह़क़ीक़त तारीख़ के आईने में अरबाबे इल्मो दानिश की नज़र में अ़यां है। इस की सियाह तारीख़ से मुसलमान वाक़िफ़ होने की वजह से इस से बेज़ार रहते हैं, इसलिए ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी (अहले हदीस) और मुक़ल्लिद वहाबी (देवबन्दी) दोनों अपने आप को वहाबी कहलाना पसंद नहीं करते।

वहाबी तहरीक का अस्ल मक़सद मोहम्मद बिन अ़ब्दुल वहाब नजदी के इस्लाम मुख़ालिफ़ अ़क़ाइदो नज़रियात को आ़म करना है और मुसल्मानों को अहले सुन्नत वल जमाअ़त से अलग करके वहाबी बनाना है। ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी, अहले सुन्नत के चार फ़िक़ही स्कूल (ह़नफ़ी, शाफ़ई, हम्बली और मालिकी) को गुमराह फ़िरक़ा कहते हैं। खुसूसन हनफ़ी अइम्मा, फुक़हा, उलमा और अ़वाम को अपने इनादो दुश्मनी का

निशाना बनाते हैं। इसलिए ह़नफ़ियों के ख़िलाफ़ उनकी शाज़िशें ज़ोरों पर रहती हैं। वह स्कूल कालिज के नौजवान तलबा के हाथों में कुरआन और सहीह बुख़ारी का इंगलिश तरजमा थमा देते हैं। उन्हें चन्द कुरआनी आयात व बुख़ारी की कुछ अहादीस सूरह नं0 और हदीस नं0 के साथ रटा देते हैं फिर उन्हें इस खुश फहमी में मुब्तिला कर देते हैं के अब तुम खुद से कुरआन व हदीस समझने वाले हो गये । कुरआन की वह आयात जो मुश्रिकीन और बुतों के बारे में नाज़िल हुई हैं उन आयात के तरजमे नौजवानों को देकर उन्हें यह समझातें हैं के देखो मुशरिकीन अपने बुतों को जिस तरह पुकारते हैं, उनसे मदद मांगते हैं सुन्नी लोग भी मज़ारात पर जाकर वैसा ही करते हैं। उन्हे यह गुमराह कुन उसूल समझाया जाता है के सिर्फ़ सह़ीह़ अह़ादीस मानो, बुख़ारी व मुस्लिम में जो है उसी को मानो। सह़ीह़ बुख़ारी में है कि रुकू में जाते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन करना चाहिए। बुख़ारी की किसी ह़दीस में नहीं है के रफ़ेयदैन नहीं करना चाहिए। सह़ीह़ ह़दीस के मुक़ाबिले में किसी इमामे की बात कैसे मानी जायेगी?

उनकी खुशनुमा गुमराह कुन बातों से बहुत से नौजवान प्रभावित हो जातें हैं और वहाबी जाल में फंस जाते हैं। वह पहले रफ़ेयदैन करना शुरू करते हैं फिर ज़ोर से आमीन कहने लगते हैं। फिर पहले मज़ारात पर ह़ाज़िरी देने से बाज़ आ जाते हैं फिर हाज़िरी देने वालों को रोकते हैं। फिर औलिया की अज़मत दिल से धीरे धीरे मिटाई जाती है। जब औलिया की अज़मत दिल से निकल जाती है तो अम्बिये किराम की अ़ज़मत पर दस्त दराज़ी (हस्तक्षेप) की जुरअत पैदा की जाती है और क़यामत यह कि दिल से यह एह़सास भी निकाल दिया जाता है कि वह औलिया या अम्बिया की शान में गुस्ताखी व तौहीन के मुरतकिब हो रहे हैं बल्कि उन्हें यह बावर कराया जाता है कि वह अल्लाह की अ़ज़मत और उसकी तौह़ीद के सच्चे अ़लमबरदार बन रहे हैं और शिर्क व बिदअ़त का ख़ातिमा कर रहे हैं।

फ़ित्नये ख़ारजियत का यह नया रूप इतना ख़तरनाक है के उसके जाल में फंस जाने वाला इन्सान गुमराही में दिन ब दिन धंसता जाता है फिर अपने आप को औरों के मुक़ाबिल सच्चा मुवहह़िद और कामिल मोमिन तसव्वुर करता है। मौला तआ़ला तमाम मुसलमानों को इस फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रखे।

ज़ेरे नज़र किताब "तर्के रफ़ेयदैन" फित्नये वहाबियत के जाल में फंसे हुए उन ज़ेहनों को आज़ाद करने की एक कोशिश है जो यह समझते हैं कि नमाज़ में रूकू के

वक़्त और रूकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन न करना किसी सहीह़ ह़दीस से साबित नहीं। इमामे अबू ह़नीफ़ा रहमतुल्लाह अ़लैह और उनके मुक़ल्लेदीन अपनी तबीअ़त से रफ़ेयदैन नहीं करते और नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वस्सम की सुन्नत की मुख़ालफ़त करते हैं। हमारे सुन्नी भाई शाफ़ई व ह़म्बली जो नमाज़ में रफ़ेयदैन करते हैं किताबे हाज़ा में मेरा रूये सुख़न उनकी तरफ़ नहीं। हमारे मुख़ातब वह लोग हैं जो इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाह अ़लैह और आप के मुक़ल्लेदीन को रफ़ेयदैन न करने की बिना पर लान तान करते हैं और उन्हें मुख़ालिफ़े सुन्नत व मुनकिरे सहीह हदीस कहते हैं।

इस मुख़्तसर किताब में सही अहादीस व आसारे सहाबा व ताबेईन से साबित किया गया है के रूकू में जाते वक़्त, रूकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन न करना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम और सहाबा व ताबेईन के अ़मल से साबित है। यह ख़िलाफ़े सुन्नत नहीं। इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाह अ़लैह ने सही हदीस की मुख़ालफ़त नहीं की है। इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाह अ़लैह को रफ़ेयदैन न करने की ह़दीस सब से ज़्यादा सहीह़ सनद के साथ मिली है।

मौला तआ़ला से दुआ़ है के यह किताब ज़ेहनों पर पड़े हुए गर्दो गुबार को साफ़ करने का ज़रीया बने और मेरे लिए सवाबे आख़िरत का बाइस हो। आमीन बिजाहे सय्येदिल मुरसलीन व आलेही व असह़ाबेही अजमईन।

रज़ाउल हक़ अशरफ़ी मिसबाही
अस्सय्यद मह़मूद अशरफ़ दारुत्तह़क़ीक़ वत्तसनीफ़
जामे अशरफ़ दरगाह किछौछा शरीफ़ (यूपी)

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

नह़मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलेहिल करीम व आलेही व असह़ाबेही अजमईन।

नमाज़ में तकबीरे तह़रीमा के अ़लावा रुकू में जाते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त, तीसरी रकअ़त के लिए उठने पर, सजदे में जाते वक़्त और दोनों सजदों के दरमियान दोनों हाथों को ऊपर उठाना चाहिए या नहीं। यह एक फुरूई मसअला है। इस तअ़ल्लुक़ से दो तरह़ की अह़ादीस कुतुबे अह़ादीस में मौजूद हैं। रफ़ेयदैन करने पर भी अह़ादीस हैं और न करने पर भी। इमामे शाफ़ई और इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने उन अह़ादीस पर अ़मल किया जिन में रुकू में जाते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त और तीसरी रकअ़त के लिए उठने के बाद रफ़ेयदैन करने का ज़िक्र है और इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाह अ़लैह ने उन अह़ादीस पर अ़मल किया है जिनमें रफ़ेयदैन न करने का ज़िक्र है।

ज़ैल में हम वह अह़ादीसे करीमा दर्ज करते हैं जिनमें तकबीरे तह़रीमा के सिवा रुकू करते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त, सजदे में जाते वक़्त और सजदे से उठते वक़्त पूरी नमाज़ में कहीं रफ़ेयदैन न करने की सराह़त मौजूद है।

रफ़ेयदैन न करने की पहली ह़दीस

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो की ह़दीस

पहली सनदः

1. ह़ज़रते अबू हनीफा रहमतुल्लाहे अ़लैह ने फरमाया कि हमसे हम्माद ने हदीस बयान की उन्होंने इब्राहीम से, उन्होनें अ़ल्क़मा और असवद से, दोनों ने हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सिर्फ तकबीरे इफ्तेताह़ (तह़रीमह) के वक़्त हाथों को उठाते थे। इस के सिवा पूरी नमाज़ में हाथों को नहीं उठाते थे।

हदीसे इब्ने मसऊद के पहले रावी

इमामे अबू ह़नीफा रज़ियल्लाहो अन्होः

नामः नोमान बिन साबित, कुन्नियतः अबू ह़नीफा, इमामे आज़म के लक़ब से मशहूर हैं। सन् 80 हि0 में कूफा में पैदा हुए। इमामे अबू ह़नीफा ने जब कूफे में शुऊ़र की आंखें खोलीं तो उस वक़्त कूफा उलूमे हदीसो

फिक़्ह का सब से बड़ा मरकज़ था। खुद इमामे बुख़ारी का बयान है के मैंने इल्मे हदीस हासिल करने के लिए बेशुमार मरतबा कूफे का सफ़र किया। इमामे अबू ह़नीफा ताबेईन में से थे। (किताबुस्सिक़ात लेइब्ने हब्बान) सहीह़ रिवायत से साबित है कि आप ने हज़रते अनस रज़ियल्लाहो अन्हो से शरफे मुलाक़ात ह़ासिल किया है। (मनाक़िबे अबी हनीफा लिज़्ज़हबी प्र0 114, अल मआ़रिफुन्नोमानिया हैदराबाद, (तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़ 1/168)

मोह़द्दिस मुल्ला अ़ली क़ारी (मौत सन 1014 हि0) ने फरमाया : इमामे अबू हनीफा ने आठ सहाबा से मुलाक़ात की है, उनमें हज़रते अनस, हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अबी औफा, हज़रत सहल इब्ने सअ़द हैं। इमामे सैमरी और अबू नुऐम व दीगर ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने हारिस बिन जज़्अ रज़ियल्लाहो अन्हो के नाम भी ज़िक्र किये हैं। (मिरक़ातुल मफ़ातीह जि0 1 स0 29)

इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैह की ह़यात में जो सहाबये किराम बाह़यात थे

1. हज़रत अनस इब्ने मालिक रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत बसरा 93 हि0।
2. हज़रत मालिक इब्ने हुवैरिस रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत बसरा 94 हि0।
3. हज़रत सहल इब्ने सअ़द रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत मदीना 91 हि0।
4. हज़रत मालिक इब्ने औस रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत मदीना 92 हि0।
5. हज़रत वासिला इब्ने असक़ा रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत शाम 86 हि0।
6. हज़रत मिक़दाम इब्ने मादीकरब रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत शाम 87 हि0।
7. हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत शाम 87 हि0।
8. हज़रत अबुत्तुफ़ैल आ़मिर इब्ने वासिला रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत मक्का 100 या 110 हि0।
9. हज़रत अ़म्र बिन हुरैस रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत कूफ़ा 87 हि0।
10. हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने औफा रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत कूफा 85 हि0।
11. हज़रत अबू उमामा अंसारी रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 100 हि0।
12. हज़रत साइब इब्ने ख़ल्लाद रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 91 हि0।
13. हज़रत अबुल बदाह़ रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 117 हि0।
14. हज़रत मह़मूद इब्ने रबी रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 91 हि0।

15.हज़रत मह़मूद इब्ने वलीद रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 96 हि0।
16.हज़रत कुबैसा इब्ने जुवैब रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 86 हि0।
17.हज़रत अ़ब्दुर्रह़माद इब्ने अ़ब्दुल क़ारी रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 81 हि0।
18.हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने ह़ारिस इब्ने जज़्अ रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 96 हि0 या बाद।
19.हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 70 या 91 या 94 हि0। (उसुदुल ग़ाबा स0 322 इसाबा स0 2/13)

और अगर बाज़ मुह़क्क़ेक़ीन की तह़क़ीक़ के मुताबिक़ इमामे आज़म की तारीख़े विलादत 70 हि0 मानी जाये तो दरज ज़ैल सह़ाबये किराम का ज़माना भी आप को नसीब हुआ।

20. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत मदीना 74 हि0।
21. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत मदीना 74 हि0।
22. हज़रत सल्मा इब्ने अकवा रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत मदीना 74 हि0।
23. हज़रत राफ़े बिन खुदैज रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत मदीना 73 हि0।
24. हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत कूफ़ा 74 हि0।
25. हज़रत अबू जुह़ैफ़ा रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत कूफ़ा 74 हि0।
26. हज़रत ज़ैद इब्ने ख़ालिद रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत कूफा 78 हि0।
27. हज़रत मोह़ममद बिन ह़ातिब रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत कूफ़ा/मदीना 74 हि0।
28. हज़रत अबू सालबा खुश्नी रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 75 हि0।
29. हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने बसर रज़िल्लाहो अ़न्हो मौत 74 हि0।
30. हज़रत साइब इब्ने खुबाब मौत 77 हि0। (उसुदुल ग़ाबा 2/313)

इमामे आज़म ने दरज ज़ैल मशहूर शुयूख़ से अह़ादीस का सिमा किया है

1. हज़रते अनस रजियल्लाहो अ़न्हो 2. हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने हारिस इब्ने जज़्अ रजियल्लाहो अ़न्हो 3. हज़रते ह़म्माद इब्ने अबी सुलैमान ताबेई 4. आ़मिर इब्ने शराह़ील शाबी : इन्होनें 500 सहाबये किराम को पाया था। इमामे ज़हबी ने फ़रमाया के वह अबू ह़नीफ़ा के अकाबिर असातिज़ा में थे। 5. सल्मा बिन कुहैल (मशहूर मोह़द्दिस ताबेई) 6. अबू इसह़ाक़ सबीई (अकाबिर ताबेईन मे से थे, 48 सह़ाबा से मुलाक़ात की थी,

सिहाहे सित्ता के रावियों में से हैं) 7. समाक बिन हरब (80 सहाबये किराम से मुलाक़ात की थी) 8. मुहारिब बिन दिसार (ताबेई इन्होंने हज़तर उमर व अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अनहुमा से सिमाए हदीस किया था।) 9. हिशाम बिन उरवा (मशहूर ताबेई, कसीर सहाबा से सिमाए हदीस किया था) 10. सुलैमान बिन मेहरान अल मारूफ़ आमश कूफ़ी (मशहूर मोहद्दिस ताबेई) 11. क़तादा (मशहूर मोहद्दिस ताबेई) 12. शोबा (अमीरुल मोमेनीन फ़िलहदीस माने जाते थे) मशहूर मोहद्दिस व नाक़िदे हदीस उस्ताज़े इमामे बुख़ारी यहया बिन मईन से किसी ने पूछाः अबू हनीफ़ा के बारे में आपका क्या ख्याल है? उन्होंने कहाः मेरे नज़दीक उनके कामिल होने की यही दलील काफ़ी है कि शोबा जेसे मुहद्दिस ने उन्हें अहादीस रिवायत करने की इजाज़त दी थी। 13. अता बिन अबी रुबाह मौत 114 या 115 हि0 (मशहूर ताबेई, मुहद्दिस, फ़क़ीह, और मुजतहिद थे। उनके बारे में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते थे कि लोग अता के होते हुए मुझ से फ़त्वा क्यों पूछते हैं? हज के ज़माने में सलतनत की तरफ़ से एलान होता था के अता के होते हुए कोई शख़्स फ़त्वा देने का मुजाज़ नहीं। इमामे औज़ाई, जुहरी, अम्र बिन दीनार वग़ैरुहम आपके हल्क़ये दरस से निकल कर इल्मो फ़ज़्ल के आफ्ताब कहलाए। इमामे अबू हनीफ़ा ने इल्मे हदीस व फ़िक़्ह में बहुत ज्यादा इस्तिफ़ादा किया है। दरस मे इमामे अबू हनीफ़ा को अपने पहलू में बिठाया करते थे। ज़हबी ने उन्हें इल्म का पहाड़ क़रार दिया है) (अलकाशिफ़ात 3797, तक़रीबुस्सिक़ात स0 854 दारुल मारेफ़ा बौरूत) 14. अम्र बिन दीनार (ताबेईन में से थे, इमामे ज़हबी ने उन्हें इमामे हदीस लिखा है, इब्ने हजर असक़लानी ने सिक़ह, सबत (कामिल हाफ़िज़ा वाला) लिखा है। 130 हि0 में वफ़ात हुई) (अत्तक़रीब त 5649, अलकाशिफ़ त0 4152) 15. इब्राहीमे नख़ई (जलीलुलक़दर ताबेई मोहद्दिस फ़क़ीह थे)

बतौरे मिसाल यह चन्द मोहद्देसीन के असमा ज़िक्र किये गये , उलमाये मोहक्क़ेक़ीन की राय के मुताबिक़ इमामे अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहे अलैह ने 400 अइम्मये ताबेईन से सिमाये हदीस किया है। (जामेउल मसानीद खारज़मी 1/32, उक़ूदुल जमान स0 63, अलख़ैरातुल हिसान 36)

इमामे अबू ह़नीफ़ा रहमतुल्लाहे अ़लैह के चन्द ख़ास मशहूर मोहद्दिस तलामिज़ा

1. अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारकः इमामे, मोहद्दिस, फ़क़ीह और ह़ाफ़िज़ुल हदीस थे। इब्ने हजर ने फ़रमाया है के ऐसे आ़लिम थे जिनमें ख़ैर की सारी फ़ज़ीलतें जमा थीं, सिक़ह थे। (अस्सिक़ात 7/7, अत्तक़रीब त 3954, अलकाशिफ़ लिज़्ज़हबी त 2941) अ़ब्दुल्ला इब्ने मुबारक फ़रमाते थेः अगर अल्लाह ने अबू ह़नीफ़ के ज़रिये मेरी मदद न की होती तो मैं आ़म आदमियों की तरह़ होता। हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक इमामे बुख़ारी के शैख़ के शैख़ हैं। यानी इमामे बुख़ारी के दादा उस्ताज़ इमामे आज़म के शागिर्द हैं। इमामे बुख़ारी कहीं दो वास्तों से भी इमामे आज़म के शागिर्द होते हैं, वह इस तरह़ से हैः इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ यह़या इब्ने मईन उनके उस्ताज़ अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक और उनके उस्ताज़ इमामे अबू ह़नीफ़ा रहमतुल्लाहे अ़लैह।

2. यह़या इब्ने सईद अलक़तानः मशहूर मोहद्दिस, नाक़िदे हदीस, फ़क़ीह थे। ह़ाफ़िज़ ज़हबी ने लिखा है के वह इमामे अबू ह़नीफ़ा के क़ौल पर फ़त्वा दिया करते थे। ह़ाफ़िज़ इब्ने हजर ने तहज़ीब में यह़या इब्ने सईद अलक़तान का यह क़ौल नक़्ल किया हैः मैंने अबू ह़नीफ़ा के अकसर अक़वाल को क़बूल किया है। उनका यह क़ौल भी है : हमने अबू ह़नीफ़ा की मजलिसों में शिरकत की है और उनसे अह़ादीस का सिमा किया है। वल्लाह मैं जब भी उनके चेहरे को देखता था तो मुझे यह महसूस होता था के यह शख़्स अल्लाह का तक़वा दिल में रखता है। (तारीख़े बग़दाद 13/352)

3. वकीअ़ बिन अल जर्राहः इमामें शाफ़ई के उस्ताज़ और सिह़ाह़े सित्ता के रावियों में से हैं। इमामे बुख़ारी व मुसलिम वग़ैरह के उस्ताज़ के उस्ताज़ हैं। यह इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा के शागिर्द थे। इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने *'अल इन्तिक़ा'* में लिखा है के वकीअ़ इब्ने अल जर्राह (इमामे अबू यूसुफ़ और इमामे मोह़म्मद की तरह़) इमामे अबू ह़नीफ़ा के अक़वाल पर फ़त्वा दिया करते थे।

4. इमामे अबू यूसुफ़ः मोहद्दिस, मुजतहिद, फ़क़ीह, इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा के ख़ास शागिर्दों में थे। फ़िक़्ह की तदवीन व जमा में आप की मजलिस के रुकने अज़ीम थे। तबये ताबेईन में से थे, कामिल ह़िफ्ज़ो इत्क़ान वाले थे। स0 181 या 182 हि0 में वफ़ात हुई। (अस्सिक़ात लेइब्ने ह़िब्बान 7/645)

5. इमामे मोह़म्मदः मोह़द्दिस, फ़क़ीह, इमामे आज़म के ख़ास शागिर्द व फ़िक़्ह की तदवीन में अहम रुक्न की हैसियत रखते थे।

6. इमामे ज़ुफ़रः मोहद्दिस, मुजतहिद, फ़क़ीह, इमामे आज़म के ख़ास शागिर्दों और तबये ताबेईन में से थे, ह़ाफ़िज़, मुतक़िन और क़लीलुल ख़ता थे। (अस्सिक़ात 6/339)

7. हसन बिन ज़ियादः मोहद्दिस, मुजतहिद, फ़क़ीह, इमामे आज़म के खास शगिर्दों में से थे। तबये ताबेईन में से थे। इब्ने ज़ुरैह से रिवायते हदीस किया करते थे। (किताबुस्सिक़ात लेइब्ने ह़िब्बान 8/168) आप का क़ौल है के हम ने इब्ने ज़ुरैह से बारह हज़ार अह़ादीस ऐसी लिखी हैं जिन की फ़ुक़हा को ज़रूरत है।

8. मुसइर बिन कुदाम अबू सलमाः इमामे ज़हबी ने फ़रमाया है के वह इबादत गुज़ार और खुशू व खुज़ू वाले बन्दों मे से थे। इमामे इब्ने हजर असक़लानी ने फ़रमायाः सिक़ह, सबत (मज़बूत हाफ़िज़ा वाले) फ़ाज़िल थे। (अलकाशिफ़ त 5395, अत्तक़रीब 7443) सिह़ाह़े सित्ता में आप की रिवायात हैं। 153 हि0 में वफ़ात पाई।

9. मक्की बिन इब्राहीमः विलादत 126 हि0, वफ़ात 215 हि0ः इमामे बुख़ारी की सुलासियात के उस्ताज़ हैं। सह़ीह़ बुख़ारी में उनसे रिवायात मौजूद हैं। यह इमामे अबू हनीफ़ा के शागिर्द थे। इमामे ज़हबी ने उनके तरजमे में तह़रीर फ़रमाया है ''मक्की इब्ने इब्राहीम ने जाफ़रे सादिक़ और अबू ह़नीफ़ा से हदीस ली और उनसे बुख़ारी व अह़मद ने ली है'' (तज़किरये हुफ्फ़ाज़ 1/365) मालूम हुआ के इमामे अबू ह़नीफ़ा इमामे बुख़ारी के दादा उस्ताज़ हैं।

10. क़ासिम बिन मअ़नः इमामे आज़म के उन शागिर्दों में से थे जिन्हें इमामे आज़म {तुम सब मेरे दिल के सुरूर और मेरे ग़म का मदार हो} कहा करते थे। इमामे इब्ने हजर अ़सक़लानी ने फ़रमायाः फ़ाज़िल थे। इमामे ज़हबी ने फ़रमाया के इमामे अहमद ने उनको सिक़ह कहा और यह भी कहा गया है के वह अपने ज़माने में आमिर शाबी की तरह़ थे। (अत्तक़रीब त 6175 , अलकाशिफ़ त 4533)

इमामे अबू ह़नीफ़ा नाक़ेदीने हदीस की नज़र में

1. इमामे बुख़ारी व मुसलिम के उस्ताज़ यह़या इब्ने मईन ने फ़रमायाः इमामे हदीस अबू ह़नीफ़ा सिक़ह थे। (तहज़ीबुत्तहज़ीब 1/150) अबू ह़नीफ़ा में जरह़ो तादील की रू से कोई ऐब नहीं, उन पर कभी बुराई की तुहमत नहीं रखी गई। (तज़किरतु हुफ्फ़ाज़ 1/152)

2. इमामे अबू दाऊद साहिबे सुनन ने फरमायाः इबू ह़नीफ़ा इमामे शरीअ़त थे। (तजकिरतुल हुफ्फ़ाज़ 1/152)

3. इमामे अ़ली मदीनी ने फ़रमायाः अबू ह़नीफ़ा से सुफ़ियाने सौरी, इब्ने मुबारक, ह़म्माद बिन ज़ैद, हिशाम, वकी, अ़ब्बाद बिन अ़व्वाम और जाफ़र बिन औ़न ने हदीसें ली हैं। उनमें कोई ऐब नहीं है। (अलख़ैरातुल ह़िसान फ़0 48 प्र0 13)

4. इमामे सुफ़ियाने सौरी ने फ़रमायाः इबू ह़नीफ़ा हदीसो फ़िक़्ह दोनों में सिक़ह और सदूक़ (सच्चे) हैं। (अलख़ैरातुल प्र0 13)

5. यह़या बिन मईन ने फ़रमायाः अबू ह़नीफ़ा सिक़ह हैं, मैंने नहीं सुना कि किसी ने उनको ज़ईफ़ कहा हो। (बिनाया ख0 1 प्र0 79)

मज़कूरा बाला शवाहिद से मालूम हुआ कि इमामे अबू ह़नीफ़ा ताबेई, हदीसो फ़िक़्ह के इमामों के इमाम थे। सिह़ाह़े सित्ता के मुसन्नेफ़ीन इमामे बुख़ारी, मुसलिम, तिरमिज़ी, अबू दाऊद, निसाई और इब्ने माजा के बिलवास्ता उस्ताज़ हैं। आप की सिक़ाहत, तक़वा, अ़दल और ह़िफ़्ज़ो इत्क़ान पर आपके हासेदीन या ग़लत फ़हमी के शिकार लोगों के अ़लावा किसी ने उंगली नहीं उठाई। इमामे अबू ह़नीफ़ा अपने ज़माने के इमामुल मुहद्देसीन भी थे और इमामुल फ़ुक़्हा भी। आप के ज़िक्र करदा मसाइल और मरवियात को आपके शागिर्द इमामे अबू यूसुफ़ व इमामे मोह़म्मद ने

जमा किया है। इमामे मोह़म्मद की किताब *'अलआसार'* जो दर ह़क़ीक़त इमामे अबू ह़नीफ़ा की मरवियात हैं वह चालीस हज़ार अह़ादीस से मुन्तख़ब करके लिखी गई है। (मनाक़िबुल इमामे अबी ह़नीफ़ा लिलअ़ल्लामा अलमुवफ्फ़िक़ अल मक्की ख0 1 प्र0 95, हैदराबाद दकन 1321 हि0)

नाक़ेदीने ह़दीस इमामे ज़हबी, यह़या बिन मईन, सुफ़ियाने सौरी और इब्ने मुबारक वग़ैरुहुम का मुत्तफ़ेक़ा फ़ैसला है कि इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा रह़तुल्लाह अ़लैह ह़दीस की रिवायत में सिक़ह और क़ाबिले एतिमाद थे। वह ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस थे और हुफ्फ़ाज़े ह़दीस व सिक़ह रावी ही से रिवायात लेते थे। इमामे आ़ज़म ने खुद फ़रमाया कि जब सह़ी ह़दीस मुझे मिल जाती है तो मैं उसे अपना मज़हब बनाता हूं।

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के दूसरे रावी

हम्माद बिन अबी सुलैमान रह़मतुल्लाहे अ़लैह मौत 120 हि0ः

कुन्नियत उबू इस्माईल है। अपने दौर में इ़राक़ में सबसे बड़े फ़क़ीह थे। विला के लिह़ाज़ से अशअ़री और कूफ़ी कहलाते थे। (किताबुस्सिक़ात लेइब्ने ह़िब्बान 4/159)

सहाबये किराम में से हज़रते अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अ़न्हो से हदीस सुनी है और ताबेईन में से इब्राहीमे नख़ई से इल्मे फ़िक़्ह ह़ासिल किया और दर्ज ज़ैल ताबेईन से इल्मे ह़दीस ह़ासिल किया है।

1. इमामे अबू वाइल 2. इमामे ज़ैद बिन वहब 3. इमामे सईद बिन मुसय्यब 4. इमामे सईद बिन जुबैर 5. इमामे आ़मिर शाबी 6. इमामे इकरमा 7. इमामे ह़सन इब्ने यसार बसरी 8. इमामे अ़ब्दुल्लाह इब्ने यज़ीद 9. इमामे अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने साद मौला आले उमर रह़ेमाहुमुल्लाहो तआ़ला (सियरे आलामुन्नुब्ला ख0 5 प्र0 231)

2. इमामे ह़म्माद ने इब्राहीमे नख़ई से इल्मे फ़िक़्ह ह़ासिल किया। इमामे नख़ई के शागिर्दों में से आप सबसे ज़्यादा ज़हीन थे। सबसे बड़े फ़क़ीह, सबसे बेहतर क़यास वाले और मुनाज़रा व बह़स में सबसे ज़्यादा बसीरत रखने वाले और सबसे बड़े अहले राय (फ़क़ीह) थे। (सियरे आलामुन्नुब्ला ख0 5 प्र0 231)

इमामे अबू ह़नीफ़ा ने आपकी शागिर्दी में अट्ठरह साल गुज़ारे हैं। इमामे अबू ह़नीफ़ा अपने उस्ताज़ ह़म्माद के बारे में खुद फ़रमाते हैंः

" मैं बसरा में पहुँचा, मुझे अन्दाज़ा हुआ कि मुझसे जो मसअला भी पूछा जायेगा मैं उसका जवाब दे दूंगा। लोगों ने मुझ से कुछ ऐसे मसाइल पूछे जिनका जवाब मेरे पास न था उसी वक़्त मैंने दिल में ठान लिया कि ह़म्माद से उनकी ह़यात में जुदा न होंगा। चुनॉचे मैंने अट्ठरह साल उनकी शागिर्दी में गुज़ारे।

इमामे ह़म्माद ताबेईन और मुह़द्दिसीन की नज़र में

1. इमामे शोबा (मौतः 160 हि0) ने फ़रमयाः ह़म्माद मेरे नज़दीक मुग़ीरा से ज़्यादा पसन्दीदा हैं। (मुसनदे इब्ने जअ़द 1/66, सियरे आलामुन्नुब्ला 5/233)
2. इब्राहीमे नख़ई (मौतः 96 हि0) की नज़र मेंः
   इमामे अ़ब्दुल मलिक इब्ने अयास अश्शैबानी ने इब्राहीमे नखई से पूछाः हम आपके बाद किससे मसाइल पूछें? तो इब्राहीमे नख़ई ने जवाब दियाः हम्माद से मसाइल पूछना। (मुसनदे इब्ने जअ़द ख 1 प्र0 65)
3. इमामे मअ़मर (मौतः 154 हि0) की नज़र मेंः मैनें उन (मुहद्देसीनो फ़ुक़्हा) में से ज़ुहरी, ह़म्माद और क़तादा से बड़ा कोई फ़क़ीह नहीं देखा।
4. इमामे ह़कम (मौत : 115 हि0) ने फ़रमायाः लोगों में यानी फ़ुक़्हाए अहले कूफ़ा में ह़म्माद की तरह़ कौन है? (अल जरह़ो वत्तादील लेइब्ने अबी ह़ातिम 3/146)
5. इमामे जह़बी की नज़र मेंः ह़म्माद क़ाबिले एतेमाद, इमामे, मुजतहिद, बाकरामत और सख़ी थे। (अलकाशिफ़ तरजमा 1221)
6. इमामे बुख़ारी व असह़ाबे सिह़ाह़े सित्ता की नज़र मेंः
   इमामे बुख़ारी ने अपनी किताब '*अल अदबुलमुफ़रद*' में, इमामे मुसलिम ने मुसलिम शरीफ़ में और इमामे तिरमिज़ी ने तिरमिज़ी शरीफ़ में, अबू दाऊद ने अपनी सुनन में और निसई व इब्ने माजा ने भी इमामे ह़म्माद से रिवायात ली हैं। जलीलुलक़द्र ताबेईनो

मुहद्देसीन व नाक़ेदीन के मुताबिक़ इमामे ह़म्माद बड़े ह़ाफ़िज़े ह़दीस, फ़क़ीह, सिक़ह, मुजतहिद थे और सिह़ाह़े सित्ता के इमामों के असातिज़ा में से थे। उन्होंने अपनी किताबों में उनसे अह़ादीस रिवायत की हैं। लिहाज़ा ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के दूसरे रावी के क़ाबिले एतेबार, मज़बूत और क़ाबिले क़बूल हाने में कोई शक नहीं।

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़िल्लाहो अ़न्हो के तीसरे रावी

इब्राहीम बिन यज़ीद बिन अ़म्र अन्नख़ई मौत 95 हि0 या 96 हि0

1. इमामे इब्ने ह़जर अ़सक़लानी ने फ़रमयाः इब्राहीम सिक़ह थे मगर बहुत ज़्यादा इरसाल करने वाले थे। (अत्तक़रीब,तरजमा 301)
2. इमामे ज़हबी ने फ़रमयाः इब्राहीमे नख़ई फ़क़ीह थे, नेकी व तक़वा में उनका अजीब ह़ाल था। बुराई से बहुत बचते थे और इल्म के सरदार थे। (अल काशिफ़, तरजमा 221)
3. इमामे आमश ने फ़रमायाः इब्राहीमे नख़ई ह़दीस के सर्राफ़ (खूब जांच परख करने वाले) थे (अल ह़ीस लिलक़ज़वीनी ख0 2 प्र0 655)
4. इस्माईल इब्ने अबी ख़ालिद ने फ़रमायाः इमामे शाबी, इब्राहीम और अबुद्दुहा मस्जिद में बैठ कर अह़ादीस का मुज़ाकरा किया करते थे। उनके पास कोई मसअला आता तो वह इब्राहीमे नख़ई की जानिब आंख से इशारा करते थे। (इनके पास ज़रूर कोई ह़दीस होगी)

   इमामे शाबी ने फ़रमायाः इब्राहीमे नखई ने अपने से ज़्यादा साह़िबे इल्म अपने बाद किसी को न छोड़ा, न ह़सन न इब्ने सीरीन न कोई अहले कूफ़ा न कोई अहले बसरा न अहले ह़िजाज़ और न ही अहले शाम में से। (तबक़ातुल हुफ्फ़ाज़ लिस्सुयूती 1/4)
5. इमामे अबू ज़रआ़ ने फ़रमायाः इब्राहीमे नख़ई मुसलमानों के उलमा में एक अ़ज़ीम इल्म का पहाड़ और उनके फ़ुक़्हा में से एक अ़ज़ीम फ़क़ीह थे। (किताबुल जरह़ लेअबी ह़ातिम अर्राज़ी तबए अव्वल दायरतुल मआ़रिफ़ अन्नोमानिया हैदराबाद दकन 1371 हि0 1952 ई0)
6. इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने फ़रमायाः इब्राहीमे नख़ई ज़की, ह़ाफ़िज़ और साह़िबे सुन्नत थे। (तारीखुल इस्लाम, ज़हबी ख0 2 प्र0 1052)

हदीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के चौथे रावी

इमामे अलक़मा बिन क़ैस कूफ़ी (मौतः 62 हि0)

1. इमामे इब्ने हिब्बान ने तहरीर फ़रमायाः अलक़मा इब्ने क़ैस ताबेई थे। इबादत, इल्मो फ़ज़्ल और फ़िक़्ह में अहले कूफ़ा के सरदार थे। अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़िल्लाहो अन्हो की तरह हुस्ने सीरत वाले थे। वह असवद इब्ने यज़ीद के चचा और इब्राहीमे नख़ई के मामूं हैं। 60 हि0 में वफ़ात हुई।
2. इमामे इब्ने हजर असक़लानी ने फ़रमायाः अलक़मा क़ाबिले एतेमाद, कामिल हाफ़िज़े वाले, फ़क़ीह और आबिद थे। (अत्तक़रीब तरजमाः 5260)
3. इमामे ज़हबी ने फ़रमायाः अलक़मा फ़क़ीह थे, अबू मअमर ने कहा कि हमें उस आदमी के पास ले चलो जो आदतो अतवार और हुस्ने सीरत में लोगों के अन्दर अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद के सबसे ज़्यादा मुशाबेह है तो हम अलक़मा के पास जाते थे।

असवद इब्ने यज़ीद इब्ने क़ैस मौतः (74 या 75 हि0)

1. इमामे अलक़मा इब्ने क़ैस के भतीजे थे। इमामे इब्ने हिब्बान ने लिखाः असवद इब्ने यज़ीद ताबेई थे। कसरत से रोज़ा रखने वाले, इबादत में शब बेदारी करने वाले, फ़क़ीह और ज़ाहिद थे। स0 74 या 75 हि0 में वफ़ात हुई। (अस्सिक़ात 4/31)

   इमामे ज़हबी ने फ़रमायाः असवद इब्ने यज़ीद ने 80 हज व उमरा किए थे। इतने ज्यादा रोज़े रखते थे कि नक़ाहत की वजह से उनके जिस्म का रंग सब्ज़ हो गया था। दो रात में एक ख़त्मे कुरआन पढ़ते थे। (अलकाशिफ़ तरजमाः 427)

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो (मौतः 32 हि0)

अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी ने फ़रमायाः हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पहले इस्लाम लाने वाले सहाबा में से थे और सिहाबये किराम में बड़े उलमा में से थे। आपके मनाक़िब बहुत हैं। (अत्तक़रीब तरजमाः 4001)

इमामे ज़हबी ने फ़रमायाः ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो पहले इस्लाम लाने वाले सह़ाबये किराम में से थे। (अलकाशिफ़ तरजमाः2979)

मुह़द्दिस मुल्ला अ़ली क़ारी (मौतः 1014 हि0) ने तह़रीर फ़रमायाः ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो खुलफ़ाए अरबआ़ के बाद तमाम सह़ाबा से ज़्यादा कुरआनो हदीस को समझने वाले थे। (मिरक़ातुल मफ़ातीह़ ख0 1 प्र0 272 बाबुल एतेसाम बिल किताब वस्सुन्नह)

सनदे हदीसः ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो की ह़दीस की सनद के तमाम रावी आ़ला दरजे के सिक़ह और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस हैं।

हुक्मे हदीसः यह ह़दीस आ़ला दरजे की सह़ीह है।

मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से रफ़ेयदैन का अ़मल दाइमी तौर पर मनकूल नहीं। बल्कि आपने रफ़ेयदैन तर्क फ़रमा दिया था।

हदीसे इब्ने मसऊद की दूसरी सनद

इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ मुह़द्दिस इब्ने अबी शैबा ने फ़रमायाः हमसे हदीस बयान की वकी ने उन्होंने सुफ़ियान से उन्होंने आ़सिम इब्ने कुलैब से उन्होंने अब्दुर्रह़मान इब्ने अलअसवद से उन्होंने अ़लक़मा से उन्होंने अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो से। आख़ीर तक।

(मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/213, हदीस न0 2441, तह़क़ीक़ कमाल यूसुफ़ अलहूत मकतबतुर्रशीद अ़र्रियाज़ 1409, सुनने अबू दाऊद 1/99 तह़क़ीक़ मुह़य्युद्दीन अ़ब्दुल ह़मीद मकतबा अ़सरियह बैरूत ह़दीस न0 747, सुनने निसई 2/182 ह़दीस 1026, 1058 तह़क़ीक़ अ़ब्दुल फ़त्ताह़ अबू ग़द्दह 1406 हि0, मुसन्नफ़े अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ 2/71 ह़दीस 2533 तह़क़ीक़ ह़बीबुर्रह़मान आ़ज़मी अलमकतबुल इस्लामी बैरूत 1403 हि0, मुसनदे अह़मद 6/203 ह़दीस 3681, 7/260 ह़दीस 4211 सुनने कुबरा बैहक़ी 2/112 ह़दीस 2531)

अहले हदीस का एतेराज़

ग़ैर मुक़ल्लिद ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई ने लिखा हैः यह हदीस इल्लते क़ादिह़ा के साथ मालूल हैं। और सनद व मतन दोनों तरह़ से ज़ईफ़ है। (नूरुलऐन प्र0 130)

एतेराज़ का जवाबः ''यह ह़दीस सनद और मतन दोनों तरह़ ज़ईफ़ है'' यह मह़ज़ दावा है जिस पर कोई मज़बूत दलील नहीं। अगर होती तो ज़ुबैर अ़ली ज़ई ज़रूर पेश करते।

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की तीसरी सनदः

3. हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्ला तआ़ला अ़न्हो दोनों हाथों को सिर्फ़ तकबीरे इफ्तेताह के वक़्त उठाते थे फिर कहीं नहीं उठाते थे।

हदीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हो की चौथी सनद

इमामे अबू दाऊद ने फ़रमायाः हमसे हदीस बयान की उसमान बिन अबी शैबा ने उन्होंने कहा महसे हदीस बयान की वकी ने वह सुफ़ियान से वह आ़सिम बिन कुलैब से वह अ़ब्दुर्रह़मान बिन असवद से वह अ़लक़मा से, उन्होंने कहा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने सह़ाबये किराम से फ़रमायाः क्या मैं तुम को रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम की नमाज़ पढ़ कर न बताऊँ? फ़िर उन्होंने नमाज़ पढ़ कर बताई तो सिर्फ़ एक मरतबा (पहली तकबीर कहते वक्त) रफ़ेयदैन किया। (तह़क़ीक़ मुह़य्युद्दीन अ़ब्दुल ह़मीद मकतबा मियरियह बैरूत)

शैख़ अलबानी के नज़दीक रफ़ेयदैन न करने की ह़दीस सह़ीह़ है।

ग़ैर मुक़ल्लिद आ़लिम शैख़ अल बानी ने इस ह़दीस को सह़ीह़ लिखा है। अबू दाऊद ने यह लिखा है कि इन अलफ़ाज़ के साथ यह ह़दीस सह़ीह़ नहीं। यह उनके नज़दीक है लेकिन इमामे आ़ज़म रह़मतुल्लाहे अ़लैहे के नज़दीक यह सह़ीह़ है। तफ़सील आगे आयेगी।

हदीसे इब्ने मसऊद की पांचवीं सनदः

5. ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने फ़रमायाः किया मैं तुमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ पढ़कर न बताऊँ? फिर उन्होंने नमाज़ पढ़कर बताया तो सिर्फ़ पहली मरतबा दोनों हाथों को उठाया।

हदीसे इब्ने मसऊद के बारे में इमामे तिरमिज़ी का मौक़फ़

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो ह़दीसे ह़सन है। यही (रफ़ेयदैन न करना) बहुत से अहले इल्म सह़ाबा, ताबेईन और सुफ़ियाने सौरी व अहले कूफ़ा का मज़हब है।

हदीसे इब्ने मसऊद की छटी सनद

इमामे निसई ने फ़रमायाः हमसे हदीस बयान की सुवैद बिन नस्र ने उन्होंने कहा हमें ख़बर दी अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ने उन्होंने सुफ़ियाने सौरी से, उन्होंने आ़सिम बिन कुलैब से, उन्होंने अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अल असवद से, उन्होंने अ़लक़मा से उन्होंने अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से, उन्होंने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ न बताऊँ? फिर वह खड़े हुए तो दोनों हाथों को पहली बार उठाया फिर दोबारा नहीं उठाया। (अस्सुननुस्सुग़रा लिन्नसई ख0 2 प्र0 182 हदीस न0 1026 तह़क़ीक़ अ़ब्दुल फ़त्ताह अबू ग़द्दा नाशिर मकतबुल मतबूआ़ अल स्लामिया ह़ल्ब तबये सानी 1406)

ग़ैर मुक़ल्लिद आ़लिम शैख़ अलबानी ने इसको ह़ाशिये नसई में सही लिखा है।

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो की सातवीं सनद

इमामे निसई ने फ़रमायाः हमसे मह़मूद बिन ग़ैलान अलमरूज़ी ने ह़दीस बयान की उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की वकी ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की सुफ़ियान ने वह आ़सिम इब्ने कुलैब से वह अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने असवद से वह अ़लक़मा से वह अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से, उन्होंने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ पढ़कर न बताऊँ? फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ी तो सिर्फ़ एक बार (तकबीरे तह़रीमा में) हाथों को उठाया। (अस्सुननुलकुबरा लिन्नसई ख02 प्र0 195 ह़दीस 1058)

अहले ह़दीस आ़लिम शैख़ अलबानी ने इस सनद को भी सह़ीह़ लिखा है।

हदीसे इब्ने मसऊद की आठवीं सनद

इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ के उस्ताज़ मुहद्दिस अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने फ़रमायाः सुफ़ियाने सौरी से मरवी है उन्होंने हुसैन से उन्होंने इब्राहीमे नख़ई से उन्होंने इब्ने मसऊद से रिवायत की है कि वह सिर्फ़ नमाज़ के शुरू (तकबीरे तह़रीमा) में दोनों हाथों को उठाते थे फिर उसके बाद नहीं उठाते थे। (मुसन्नफ़े अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ख0 2 प्र0 71 ह़दीस 2533 तह़क़ीक़ ह़बीबुर्रह़मान अल आज़मी नाशिर अलमकतबुल इस्लामी बैरूत तबये सानी 1402 हि0)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की नवीं सनद

अ़बदुर्रज़्ज़ाक़ से, उन्होंने इब्ने ओऐना से, उन्होंने हुसैन से, उन्होंने इब्राहीमे नख़ई से, उन्होंने इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो से इसी तरह़ रिवायत की है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो पहली मरतबा (तकबीरे तह़रीमा में) रफ़ेयदैन करते थे उसके बाद नहीं करते थे। दोनों सनद के रावी सिक़ह मोतबर हैं।

ह़दीसे इब्ने मसऊद की दसवीं सनद

हमसे ह़दीस बयान की वकी ने, वह सुफ़ियान से वह आ़सिम से, वह अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने असवद से, वह अ़लक़मा से वह इब्ने मसऊद से, उन्होंने फ़रमायाः क्या मैं तुमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ पढ़ाऊँ? फिर उन्होंने (पूरी नमाज़ में) सिर्फ़ एक बार दोनों हाथों को उठाया। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा ख0 1 प्र0 391 ह़दीस 323 तह़क़ीक़ आ़दिल बिन यूसुफ़ अल अज़ाज़ी, अह़मद बिन फ़रीद अलमज़ीद नाशिर दारुल वहन अर्रियाज़ तबये अव्वल 1997 ई0)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की ग्यारहवीं सनदः

इब्ने अबी शैबा ने फ़रमायाः हमसे वकी ने ह़दीस बयान की उन्होंने मुसइर से, उन्होंने अबू माशर से, उन्होंने इब्राहीमे नख़ई से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से कि अ़बदुल्लाह इब्ने मसऊद नमाज़ के शुरू में दोनों हाथों को उठाते थे।

(मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा ख0 1 प्र0 213 तह़क़ीक़ कमाल यूसुफ़ अलहूत नाशिर मकतबा अर्रुश्द अर्रियाज़ तबये अव्वल 1409 हि0)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की बारहवीं सनदः

इमामे अह़मद बिन ह़म्बल ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की वकी ने, उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की सुफ़ियान ने, वह आ़सिम बिन कुलैब से, वह अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अलअसवद से, वह अ़लक़मा से, उन्होंने कहा कि इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ न पढ़ाऊँ? फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ी तो दोनों हाथों को सिर्फ़ एक बार उठाया। इस सनद के सारे रावी सिक़ह हैं।

(मुसनदे अह़मद तख़रीज शुदा ख0 6 प्र0 203 तह़क़ीक़ शोऐब अरनऊत, आ़दिल, मुरशिद वग़ैरहुम नाशिर मुअस्सेसतुर्रिसाला तबये अव्वल 1429 हि0)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की तेरहवीं सनद

इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की वकी ने उन्होंने सुफ़यान से उन्होंने आसिम बिन कुलैब से उन्होंने अ़बदुर्रह़मान इब्ने अल असवद से उन्होंने अ़लक़मा से उन्होंने कहा कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद ने फ़रमायाः मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ मढ़ाता हूं। फिर उन्होंने पहली मरतबा (तकबीरे तह़रीमा में) दोनों हाथों को उठाया। (मुसनदे अह़मद ख0 7 प्र0 260 ह़दीस 4211)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की चौदहवीं सनद

इमामे निसई ने फ़रमायाः हमें खबर दी मह़मूद बिन ग़ैलान अलमरूज़ी ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की सुफयान ने वह आ़सिम बिन कुलैब से वह अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अल असवद से वह अ़लक़मा से वह अ़ब्दुल्लाह से उन्होंने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ न मढ़ाऊँ? फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ी तो सिर्फ़ एक बार हाथ उठाया। (अस्सुननुल कुबरा लिन्नसई ख0 1 प्र0 332 तह़क़ीक़ ह़सन अ़ब्दुल्लाह अल मुनइम अशलबी नाशिर मुअस्ससतुर्रिसाला बैरूत तबये अव्वल 1421 हि0)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की पंदरहवीं सनद

इमामे निसई ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की सुवैद बिन नस्र ने, उन्होंने कहा हमें खबर दी अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ने, वह सुफ़यान से वह आ़सिम बिन कुलैब से, वह अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अल असवद से, वह अ़लक़मा से, वह अ़ब्दुल्लाह से, उन्होंने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें बताऊँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़? फिर वह खड़े हुए और दोनों हाथों को सिर्फ़ पहली बार उठाया। (अस्सुननुल कुबरा लिन्नसई ख0 2 प्र0 31 ह़दीस 1100)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की सोलहवीं सनद

ह़ाफ़िजुल ह़दीस अबू याला अल मूसली (मौत : 307 हि0) ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की इसह़ाक़ बिन अबी इस्राईल ने, उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की मोह़म्मद बिन जाबिर ने, उन्होंने ह़म्माद से, उन्होंने इब्राहीम से, उन्होंने अ़लक़मा से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह से, उन्होंने फ़रमायाः

मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम, अबूबक्र और उमरे फ़ारूक़ के साथ नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने सिर्फ़ नमाज़ के शुरू में रफ़ेयदैन किया।

(मुसनदे अबूयाला अलमूसली ख0 8 प्र0 453 ह़दीस 5039 तह़क़ीक़ हुसैन सलीम असद नाशिर दारुलमामून लित्तुरास दिमश्क़ तबये अव्वल 1404 हि0)

सनदे मज़कूर में मोह़म्मद बिन जाबिर रावी सदूक़ सिक़ह हैं। इमामे ज़हबी ने इब्ने अबू ह़ातिम के ह़वाले से लिखाः वह मेरे नज़दीक इब्ने लहया से ज़्यादा मह़बूब हैं। (अलकाशिफ़ 2/61)इब्ने अबू ह़ातिम ने कहा है कि उनकी वह मुतफ़र्रिद रिवायात जिनमें उनके इख्तेलाफ़ होने पर दलीद मौजूद है वह नामक़बूल है। उन्होंने कहाः उनके मरवियात के उसूल सह़ीह़ हैं। (अल जरह वत्तादील 7/219) इब्ने अ़दी ने कहा उनसे अय्यूब, औ़न वग़ैरा मुहद्देसीन ने रिवायात ली हैं। अगर वह इस लाइक़ न होते तो यह अकाबिर उनसे अह़ादीस क्यों लेते? हॉ कुछ अह़ादीस में उनकी मुख़ालफ़त है। उन पर बाज़ लोगों का कलाम होने के बावजूद उनकी ह़दीस लिखी जाती है। (अलकवाकेबुन्नय्येरात फ़ी मारेफ़ते मिनर्रुवातिस्सिक़ात लेइब्निलकय्याल 1/495) इमामे ज़हबी ने लिखा कि वह इब्ने लह़या की तरह़ हुज्जत नहीं, उनकी कुछ रिवायात मुनकर हैं। यानी मुताबेअ़ात व शवाहिद से उनकी रिवायत दरजये ह़सन की है। (सियरुल आलामिन्नुब्ला 8/238) अबुल वलीद अत्तयालिसी ने कहा हम मोह़म्मद बिन जाबिर से ह़दीस लेने को मना करके उन पर ज़ुल्म करते हैं। (अलजर्ह़ वत्तादील 7/220)

मोह़म्मद बिन जाबिर कूफ़ी के सदूक़ व सिक़ह अ़ादिल होने में कलाम नहीं अलबत्ता उनकी किताबों के मदफ़ून होने के बाद वह ह़ाफ़िज़ा पर एतेमाद करके रिवायत करते थे इसलिए इख्तिलात वाक़े होता था। लिहाज़ा उनकी वही मुतफ़र्रिद रिवायत नामक़बूल है जो इख्तिलात के बाद हो। इस पर कोई दलील नहीं कि ह़दीसे मज़कूर बादे इख्तिलाफ़ात की है। नीज़ ह़म्माद से ह़दीसे मज़कूर रिवायत करने में मोह़म्मद बिन जाबिर तनहा नहीं बल्कि उसको ह़म्माद बिन इब्राहीम की सनद से मुतअ़द्दिद रावियों ने रिवायत किया है अगरचे बाज़ मुरसल मौकूफ़ हैं लेकिन ह़दीसे मौकूफ़ में ग़ैर क़यासी क़ौल या फ़ेल हो तो वह ह़दीस मरफ़ू के हुक्म में है इसके अ़लावा इब्ने मसऊद की दोसरी रिवायाते मर्फ़ूआ़ सह़ीह़ा उसकी ताईद करती हैं लेहाज़ा

सनदे मज़कूर के साथ ह़दीसे मज़कूर को नामक़बूल नहीं कह सकते बल्कि दरजये ह़सन को पहुँची हुई है।

इमामे आज़म की सनद से यह ह़दीस सहीह़ है। इमामे आज़म की सनद में मोह़म्मद बिन जाबिर नहीं। आप ने इस को ह़म्माद से रिवायत किया है। (मुसनदे अबू ह़नीफ़ बशरह़िल क़ारी प्र0 90, ह 97, मुसनदे अबू ह़नीफ़ा बरिवायतुल ह़ारिस ह 394)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की सतरहवीं सनद

इमामे बैहक़ी ने फ़रमायाः अबू अ़ली अर्रूदबारी ने कहा, हमसे ह़दीस बयान की अबूबक्र बिन दासह ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अबू दाऊद ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की उसमान बिन अबी शैबा ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की वकी ने उन्होंने सुफ़यान से उन्होंने आ़सिम बिन कुलैब से उन्होंने अ़ब्दुर्रह़मान बिन अलअसवद से उन्होंने अ़लक़मा से उन्होंने कहाः अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने कहाः मैं तुमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ न पढ़ाऊँ? फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ी और दोनों हाथों को सिर्फ़ एक बार उठाया।

(मारेफ़तुस्सुनन वल आसार लिलबैह़क़ी ख0 2 प्र0 422 ह़दीस 328 तह़क़ीक़ अ़ब्दुल मुअ़त्ता जामेअतुद्दिरासातिल इस्लामिया कराची पाकिस्तान तबये अव्वल 1412 हि0)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की अठारहवीं सनद

इमामे तह़ावी ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की मोह़म्मद बिन असक़ती ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की यह़या बिन यह़या अन्नीसापुरी ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की वकी ने वह सुफ़यान से वह आ़सिम बिन कुलैब से वह अ़ब्दुर्रह़मान बिन अलअसवद से वह अ़लक़मा से वह अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद से वह नबी सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम से कि आप पहली तकबीर में दोनों हाथों को उठाते थे फ़िर दोबारा नहीं उठाते थे।

(शरहे मुश्किलुल आसा़र लित्तह़ावी ख0 10 प्र0 35 ह़दीस 5826, तह़क़ीक़ शुऐब अल अरनऊत)

ह़दीसे इब्ने मसऊद की उन्नीसवीं सनद

इमामे तिबरानी ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने उन्होंने अ़ब्दुर्रज्ज़ाक़ से उन्होंने हुसैन से उन्होंने इब्राहीम से कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो इब्तिदाये नमाज़ में दोनों हाथों को उठाते थे फिर उसके बाद नहीं उठाते थे। (अलमूजमुल कबीर लित्तिबरानी ख0 9 प्र0 361ह़दीस 9298, तह़क़ीक़ अह़मद इब्ने अ़ब्दुल मजीद अस्सलफ़ी मकतबा इब्ने तैमिया अलक़ाहिरा)

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो की बीसवीं सनद

इमामे तिबरानी ने फ़रमायाः हमसे हदीस बयान की मोह़म्मद बिन अब्दुल्लाह अलह़ज़रमी ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अह़मद इब्ने यूसुफ़ ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अबुल अह़वस़ ने वह हुसैन से वह इब्राहीम से उन्होंने कहाः अ़ब्दुल्लह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो नमाज़ में तकबीरे तह़रीमा के सिवा किसी और जगह रफ़ेयदैन नहीं करते थे। (अल मुजमुल कबीर लित्तबरानी ख0 9 प्र0 361 ह़दीस न0 9299)

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो की इक्कसवीं सनद

इमामे तिबरानी ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की अ़ली बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की ह़ज्जाज बिन अल मिनहाल ने वह ह़म्माद इब्ने सलमा से वह ह़म्माद से वह इब्राहीम से वह अ़ब्दुललाह इब्ने मसऊद से कि जब वह नमाज़ शुरू करते तो दोनों हाथों को उठाते फिर उसके बाद नहीं उठाते।

अहले ह़दीस का एतेराज़ः मज़कूरा तीनों सनदें इब्राहीमे नख़ई की मुरसल हैं, लिहाज़ा ज़ईफ़ हैं।

इतेराज़ का जवाबः अह़नाफ़ के नज़दीक मुरसले सह़ीह़ हुज्जत है। बिलखुसूस इब्राहीमे नखई की मुरसल रिवायात को मोह़द्देसीन ने सही कहा है और आ़मिर शाबी की मुरसल रिवायात ज़्यादा सह़ीह़ हैं। अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़सक़लानी ने आजुरी के ह़वाले से इमामे अबू दाऊद का यह क़ौल नक़ल किया हैः मेरे नज़दीक शाबी की मुरसल नख़ई की मुरसल से ज्यादा मह़बूब है। मालूम हुआ कि नख़ई की

मुरसल भी मह़बूब है। (तहज़ीबुत्तहज़ीब 5/58) इमामे आमश से इब्राहीमे नखई ने फ़रमाया थाः जब मैं आप से कहूँः अ़ब्दुल्लाह ने कहा तो जान लें मैनें उस वक्त तक नहीं कहा जब तक उनसे एक जमाअ़त ने मुझसे ह़दीस बयान नहीं की और जब मैं कहूँः मुझसे फुलां ने ह़दीस बयान की तो उसका मतलब है उसी ख़ास फुलां ने अ़ब्दुल्लाह से वह ह़दीस मुझे सुनाई है। सनदे मज़कूर में इब्राहीमे नख़ई ने किसी ख़ास फर्द का नाम नहीं लिया है इसका मतलब यह है कि ह़दीसे इब्ने मसऊद को उन्होंने किसी एक आदमी से नहीं बल्कि एक जमाअ़त से सुना है। (शरहे़ अबू दाऊद, ऐनी 3/98) इमामे नखई के इस क़ौल से इमामे तह़ावी के क़ौल को ताईद ह़ासिल हो गई कि ह़दीस इब्ने मसऊद इमामे नखई के नज़दीक मोतबर है। इमामे तह़ावी ने फ़रमायाः अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद की इसी रिवायत को इब्राहीमे नख़ई मुरसल रिवायत करते थे जो उनके नज़दीक सह़ीह़ होती और उनसे तवातुर से मरवी होती थी। (ऐज़न) इससे मालूम हुआ कि ह़दीसे इब्ने मसऊद इब्राहीम की बाज़ सनद से मुरसल होने के बावुजूद सह़ीह़ मुतवातिर है। लिहाज़ा तरके रफ़ेयदैन पर यह बहुत मज़बूत दलील है।

ह़दीसे इब्ने मसऊद पर अहले ह़दीस का दूसरा एतेराज़ः

इमामे अबूदाऊ ने ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अन्हो को सह़ी नहीं कहा। इमामे तिरमिज़ी के अ़लावा सब मुतक़द्देमीन का इस ह़दीस के ज़ईफ़ होने पर इत्तिफ़ाक़ है। (नूरुल ऐनैन प्र0 132)

एतेराज़ का जवाबः मैंने ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की 23 सनदें ज़िक्र की हैं। उनमें एक सनद है " आ़सिम बिन कुलैब से वह अ़ब्दुर्रह़मान बिन अलअसवद से वह अलक़मा से वह इब्ने मसऊद से" इस सनद को इमामे तिरमिज़ी ने ह़सन कहा है। " सब मुतक़द्देमीन का इस ह़दीस के ज़ईफ़ होने पर इत्तेफ़ाक़ है " यह ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली साहब का मह़ज़ दावा है, इस पर उन्होंने कोई दलील पेश नहीं की।

"इमामे दाऊद और बाज़ मोह़द्देसीन ने इसको सही नहीं कहा।" ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली साह़ब भी यह आसान बात जानते होंगे कि हदीस

सही न हो तो उसका ज़ईफ़ होना ज़रूरी नहीं। फिर जुबैर अ़ली साहब यह भी जानते होंगे कि बाज़ मोह़द्देसीन के नज़दीक कोई ह़दीस सही न हो तो ज़रूरी नहीं वह ह़दीस सारे मोह़द्देसीन के नज़दीक सही न हो। क्योंकि ह़दीस की सेह़त व ज़ोफ़ के शराइत मोह़द्देसीन ने अलग अलग मुक़र्रर किये हैं। खुद सहीहैन को लीजिए, सही मुसलिम की बहुत सी अह़ादीस इमामे बुख़ारी की शर्त पर न होने की वजह से सही नहीं लेकिन क्या इन सब अह़ादीस को ज़ईफ़ व नामक़बूल कहा जाएगा? खुद जुबैर अ़ली साहब इसके क़ाइल नहीं होंगे। तो क्या वजह है कि ह़दीसे इब्ने मसऊद को इमामे दाऊद एक ख़ास सनद से ख़ास अलफ़ाज़ के साथ सही नहीं मानते तो ह़ाज़िफ़ जुबैर अ़ली साह़ब अपनी ज़िद पर अड़े हुये हैं कि सारे के सारे मोह़द्देसीन को यह मान लेना लाज़िम है कि ह़दीस इब्ने मसऊद सही नहीं। इमामे अबू दाऊद ने ह़दीसे इब्ने मसऊद को मख़सूस अलफ़ाज़ के साथ ''सही नहीं'' कहा है। वह फ़रमाते हैं कि यह ह़दीस मुख्तसर है लम्बी ह़दीस से और उन अलफ़ाज़ के साथ यह सही नहीं। एक तो इमामे अबू दाऊद ने यह ज़िक्र नहीं किया कि वह लम्बी ह़दीस कौनसी है और किन अलफ़ाज़ के साथ सही है? और यह मुख्तसर ह़दीस उन अलफ़ाज़ के साथ सही नहीं है तो क्यों? मह़ज़ किसी ह़दीस को सही नहीं कह देने से वह ग़ैर सही या ज़ईफ़ नहीं होती। जब तक उसके सही न होने या ज़ईफ़ होने की दलील न ज़िक्र की जाये। हाफ़िज जुबैर अ़ली साह़ब ने लिखा कि इमामे तिरमिज़ी के अ़लावा सब मुतक़द्देमीन का ह़दीस इब्ने मसऊद के ज़ईफ़ होने पर इत्तेफ़ाक़ है। ह़ालांकि बहुत से मुतक़द्देमीन मोह़द्देसीन और फ़ुक़्हा ने ह़दीस इब्ने मसऊद को सही कहा है।

1. इब्राहीमे नख़ई (मौतः 95/96 हि0) जलीलुल क़द्र इमामे आमश ने इब्राहीमे नख़ई को इल्मे ह़दीस का सर्राफ़ कहा है। उन्होंने ह़दीसे इब्ने मसऊद को मुसनदन भी ज़िक्र किया है और मुरसलन भी। बहर ह़ाल इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से उनकी रिवायत सही बल्कि मुतवातिर होती है।

चुनॉचे इमामे तह़ावी (मौतः 321 हि0) ने फ़रमायाः

इब्राहीमे नख़ई ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से वही ह़दीस मुरसलन रिवायत करते थे जो उनके नज़दीक सही़ और मुतवातिर होती थी। (शरहे़ अबू दाऊद लिलऐनी 3/298)

मोह़द्दिस इमामे आमश ने फ़रमाया कि उनसे इमामे नख़ई ने फ़रमायाः जब मैं आपसे कहूँ कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद ने कहा तो जान लीजिए कि मैंने आपसे वह बात उस वक़्त तक नहीं कही जब तक कि एक जमाअ़त ने मुझसे नहीं कही। और जब मैं कहूं कि फुलां ने अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से मुझे यह ह़दीस सुनाई तो उसी ख़ास आदमी ने सुनाई। (शरहे़ अबूदाऊद लिलऐनी 3/298)

2. यह़या बिन सईद क़त्तान (मौतः 191/200 हि0) जलीलुल क़द्र नाकेदीने ह़दीस यह़या बिन मईन, अ़ली बिन मदीनी, अब्दुर्रह़मान बिन मेंहदी वग़ैरह के उस्ताज़ थे। वह इमामे आज़म की शगिर्दी पर फ़ख्र किया करते थे। वह फ़रमाते है कि हम अल्लाह पर झूट नहीं बोलते, हमने अबू ह़नीफ़ा के निकाले हुऐ मसअले से बेहतर नहीं सुना। हमने उनके अकसर अक़वाल को क़बूल किया है। (तारीख़े इस्लाम 3/990)

इससे पता चलता है कि यह़या बिन सईद क़त्तान इमामे आज़म की तरह़ रफ़ेयदैन न करने का फ़त्वा देते थे और रफ़ेयदैन न करने की ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हो उनके नज़दीक सही़ थी।

3. ह़म्माद बिन अबी सुलैमान (मौतः 120 हि0) इमामे नख़ई के जलीलुल क़द्र शागिर्द और इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा के उस्ताज़ थे। ह़ज़रते इब्ने मसऊद की ह़दीस के रावी सिक़ह, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, फ़क़ीह, मुजतहिद थे। इमामे नख़ई के बाद कूफ़ा के मुफ्ती थे।

इब्ने आबिस ने कहाः मैंने ह़म्माद बिन सलमा को कहते हुए सुना कि इब्राहीमे नख़ई की वफ़ात के बाद फ़िक़्ह में लोगों के मन्ज़ूरे नज़र और कूफ़ा के मुफ्ती ह़म्माद बिन अबी सुलैमान थे। लोग उनकी वजह से दूसरों से बेनियाज़ थे। (अख़बारे इब्ने अबी ह़नीफ़ा लिस्सैमरी 1/21)

ह़म्माद बिन अबी सुलेमान ने ह़दीसे इब्ने मसऊद को अपना मज़हब बनाया है जो इस बात की दलील है कि उनके नज़दीक यह ह़दीस सही़ है।

4. इमामे अबू ह़नीफ़ा (मौतः 150 हि0) इमामुल मोह़द्देसीन वल फुक़्हा थे। अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक, यह़या बिन सईद क़त्तान, वकी बिन जर्राह़, मुसइर बिन कुद्दाम, मक्की बिन इब्राहीम, क़ासिम बिन मअ़न वग़ैरह मोह़द्देसीन जिनमें बहुत से ह़ज़रात इमामे बुख़ारी व मुसलिम के उस्ताज़ या उस्ताज़ के उस्ताज़ हैं, उन्होंने इमामे अबू ह़नीफ़ा को सिक़ह, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस और सिक़ात से रिवायत लेने वाला कहा है।

सिह़ाह़े सित्ता के रावी इस्राईल ने कहा हैः

नोमान (अबू ह़नीफ़ा) कितने अच्छे आदमी हैं! वह हर उस ह़दीस को बहुत उम्दा तरीक़े से रखने वाले थे जिसमें कोई शरई मसअला होता। ऐसी ह़दीस की वह बहुत ज़्यादा छानबीन करने वाले हैं । उन्होंने ह़म्माद से ऐसी अह़ादीस को बहुत अच्छी तरह़ मह़फ़ूज़ रखा है। खुलफ़ा व उमरा का बहुत इकराम करते थे। कोई आदमी फ़िक़्ह में उनसे मुनाज़रा करता तो उसे पशेमानी का सामना करना पड़ता था। (अख़बारे इब्ने अबी ह़नीफ़ा लिस्सैमरी 1/21)

सुफ़याने सौरी ने इमामे आज़म का यह क़ौल नक़्ल किया हैः

मैं (शरई मसाइल में) किताबुल्लाह से दलील पकड़ता हूँ। अगर उसमें नहीं पाता हूं तो अह़ादीसे रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम और सही आसार से दलील पकड़ता हूं जिनके बारे में यह मशहूर हो कि उन्हें सिक़ह रावियों ने सिक़ह रावियों से रिवायत की है। अगर सुन्नते रसूल में भी नहीं पाता (और सह़ाबा के अक़वाल मुख्तलिफ़ होते हैं) तो बाज़ के अक़वाल (जिसको क़वी पाता हूं) लेता हूं और बाज़ के अक़वाल को तर्क कर देता हूं। लेकिन सह़ाबा के क़ौल को छोड़ कर दूसरे के क़ौल को नहीं लेता। और मुआ़मला जब इब्राहीमे नखई, शाबी, बसरी, इब्ने सीरीन और सईद बिन मुसय्यब वग़ैरह मुजतहेदीन के क़ौल का होता है तो जिस तरह़ उन्होंने इजतेहाद किया है मैं भी इजतिहाद करता हूं। (अख़बार इब्ने अबी ह़नीफ़ा लिस्सैमरी 1/21)

इमामे आज़म ने ह़दीसे इब्ने मसऊद को अपना मज़हब बनाया है। इमामे आज़म के क़ौल से मालूम हुआ कि उनके नज़दीक यह ह़दीस सही मशहूर है।

5. इमामे अबू यूसुफ़ (मौतः 182 हि0) मोह़द्दिस, हाफ़िज़ुल ह़दीस, फ़क़ीह मुजतहिद थे। मोह़द्दिस इब्ने अब्दुल बर्र क़रतबी मालेकी (मौतः 463 हि0) ने मोह़द्दिस, मुफ़स्सिर, फ़क़ीह मोअर्रिख़ इब्ने जरीर तिबरी (मौतः 310 हि0) का यह क़ौल नक़्ल किया हैः

अबू यूसुफ़ याकूब बिन इब्राहीम क़ाज़ी फ़क़ीह आलिम और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस थे। इब्ने जरीर ने कहा कि वह ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस से मशहूर थे। वह किसी मोह़द्दिस के पास बैठते तो उसी वक़्त पचास साठ हदीसें याद कर लेते थे और वहां से उठकर लोगों को इमला करा देते थे। वह कसीरुल ह़दीस थे। (अल इन्तिफ़ा 1/172)

इब्ने ह़िब्बान ने लिखाः

अबू यूसुफ़ याकूब बिन इब्राहीम बिन ह़बीब बिन सअ़द बिन हबता कूफ़ी ने यह़या बिन सईद अन्सारी से रिवायत ली है। उनसे बशर बिन वलीद और अहले इराक़ ने ह़दीस रिवायत की है। वह साहिबे इतक़ान शैख़ थे। सिर्फ़ फुरू (मसाइले इजतेहादिया) में इमामे अबू ह़नीफ़ा और इमामे मोह़म्मद के मसलक पर चलते थे। (अस्सिक़ात 7/645)

जिन लोगों ने इमामे अबू यूसुफ़ पर जरह़ की उनकी जरह़ ग़लत फ़हमी पर मबनी है। यही वजह है कि बाज़ लोगों ने ग़लत फ़हमी दूर होने और ह़क़ीक़ते ह़ाल ज़ाहिर होने के बाद इमामे अबू यूसुफ़ की तौसीक़ की है।

चुनॉचे इब्ने अबू ह़ातिम बयान करते हैंः

हमने जुफ़र और अबू यूसुफ़ को सिक़ात में दाख़िल कर लिया बज हमारे सामने ज़ाहिर हो गया कि दोनों अह़ादीस के मुआ़मले में आ़दिल हैं। (अस्सिक़ात लेइब्ने ह़िब्बान 7/646)

इमामे अबू दाऊद व इब्ने माजा के उस्ताज़ मोह़म्मद बिन अस्सबाह़ (मौतः 240 हि0) ने कहाः

मैंने अबू यूसुफ़ को लाज़िम पकड़ा। वह नेक आदमी थे। मुसलसल रोज़ा रखा करते थे। (अस्सिक़ात 7/664)

यह़या बिन मईन ने कहाः

अबू यूसुफ़ ज़्यादा तर मोहद्देसीन की तरफ़ माइल रहते थे। हमने उनसे अहादीस लिखी हैं। हमेशा से मोहद्देसीन उनसे अहादीस लिखते रहें हैं। (अल जरह वत्तादील 9/201)

6. इसहाक़ बिन अबी इस्राईल (मौतः 245 हि0) इमाम, मोहद्दिस, हाफ़िजुल हदीस, सिक़ह, मुतक़िन, साहिबे वरा व तक़्वा मुजतहिद फ़क़ीह थे। (सियरो आलामिन्नुब्ला 11/476)

उन्होंने हदीसे इब्ने मसऊद के तअल्लुक़ से फ़रमाया हैः

हम पूरी नमाज़ में इसी को इख्तियार करते हैं। (तकबीरे तहरीमा के सिवा पूरी नमाज़ में रफ़ेयदैन नहीं करते)

7. इमामे तिरमिज़ी ने हदीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को हसन कहा। इन तमाम मोहद्देसीन व फ़ुक़्हा के नज़दीक हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हो की तर्के रफ़ेयदैन वाली हदीस सही है। फिर भी शैख़ जुबैर अली को ज़िद है कि उसे वह ज़ईफ़ ही कहेंगे तो ज़िद का आख़िर क्या इलाज? हालांकि खुद ग़ैर मुक़ल्लेदीन के इमाम शैख़ अलबानी ने भी उसको सही कहा है।

हदीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हों की बाइसवीं सनद

इमामे दारकुतनी ने फ़रमायाः अब्दुल्लाह से मरवी है कि उन्होंने फ़रमायाः मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के साथ नमाज़ पढ़ी है उन हज़रात ने अपने हाथों को नमाज़ के शुरू में सिर्फ़ पहली तकबीर के वक़्त उठाया। (सुनने दार कुत्नी ख0 2 प्र 52 बाबो ज़िक्रित्तकबीर व रफ़इलयदैन हदीस 1133 तहक़ीक़ शुऐब अलअरनऊत व असहाबे मुअस्ससतुर्रिसाला बैरूत 1424 हि0)

दार कुत्नी के रीमार्क का जवाबः दार कुत्नी ने इस हदीस को नक़ल करने के बाद लिखा कि इस हदीस की सनद में रावी मोहम्मद बिन जाबिर ज़ईफ़ हैं और उन्होंने तन्हा हम्माद से यह रिवायत ज़िक्र की है। हम्माद के सिवा दूसरों ने अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के फ़ेल को मुरसलन रिवायत किया है मरफ़ूअन नहीं।

पहली बात तो यह है कि हदीसे इब्ने मसऊद को हम्माद से मरफ़ूअन रिवायत करने में मोहम्मद बिन जाबिर तन्हा नहीं बल्कि इमामुल मुहद्देसीन

वलफुक़्हा, इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैह (मौत : 150 हि0) ने भी ह़म्माद से रिवायत की है। और इमामे अबू ह़नीफ़ा की रिवायत सही बल्कि ज़्यादा सही है। नीज़ ह़दीसे इब्ने मसऊद को ह़म्माद से ह़म्माद बिन सलमा ने भी रिवायत किया है और ह़म्माद बिन सलमा सिक़ह इमाम, शैखुल इस्लाम थे। बुख़ारी व मुसलिम के रावी थे। (सियरे आलामुन्नुब्ला 7/444)

दूसरी बात यह है कि मोह़म्मद बिन जाबिर बिन सय्यार अलकूफ़ी (मौत :170 हि0) को अगरचे बाज़ मोह़द्देसीन ने ज़ईफ़ लिखा है लेकिन इब्ने हजर ने उन्हें सदूक़ लिखा है और यह लिखा है कि उनकी किताबें ज़ाये होने की वजह से ह़ाफ़िज़ा पर एतेमाद करके अह़ादीस बयान करते थे लिहाज़ा इख़्तिलात वाक़े होता था। लेकिन अबू ह़ातिम राज़ी ने उन्हें इब्ने लह़या पर तरजीह़ दी है। इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने कहाः उनकी ह़दीस अहले सिदक़ की ह़दीस के मुशाबेह है। फ़ल्लास ने कहाः सालेह़ हैं। (सियरुल आलाम वन्नुबला 8/236) अ़लाई ने कहा कि निसई ने उन्हें ज़ईफ़ कहा लेकिन सुफ़यान सौरी और सुफ़ियान बिन उऐना जैसे जलीलुल क़द्र मुह़द्देसीन ने उनसे रिवायात ली हैं। (अलमुख़्तेलेतीन, अ़लाई 1/108) ज़हबी ने मोह़म्मद बिन जाबिर अ़न ह़म्माद अ़न इब्राहीम की सनद से बाज़ सही अ़ह़ादीस ज़िक्र की हैं उनमें मोह़म्मद बिन जाबिर की यह ह़दीस भी है। (मीज़ानुल एतेदाल 3/496)

मोह़म्मद बिन जाबिर, अबूदाऊद व इब्ने माजा के रावियों में से है। अगर मोह़म्मद बिन जाबिर की यह रिवायत सिक़ह मुतक़िन रावी के ख़िलाफ़ होती तो वह तन्हा नाक़ाबिले हुज्जत होती लेकिन इतनी कसीर तादाद में सिक़ह रावियों ने ह़दीसे इब्ने मसऊद को मरफ़ूअ़न जिक्र किया है लेहाज़ा मोह़म्मद बिन जाबिर की रिवायते मजकूरह क़ाबिले हुज्जत है।

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो मरफ़ू सही है और मौकूफ़ सही भी लेहाज़ा इससे रफ़ेयदैन न करने पर इस्तिदलाल बहरह़ाल दुरुस्त है।

हदीसे इब्ने मसऊद की तेईसवीं सनद

इमामे बैहक़ी ने फ़रमायाः हमें ख़बर दी अबूताहिर अलफ़क़ीह ने, उन्होंने कहा हमें ख़बर दी अबू ह़ामिद बिन बिलाल ने, उन्होंने कहा हमें ख़बर दी मोह़म्मद बिन इस्माईल अर्रह़मी ने, वह कहते हैं हमसे ह़दीस

बयान की वकी ने, वह सुफ़यान से, वह आ़सिम यानी इब्ने कुलैब से, वह अ़ब्दुर्रह़मान बिन अलअसवद से, वह अ़लक़मा से, उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अ़ब्दुल्लाह यानी इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने कि मैं ज़रूर तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ की तरह़ नमाज़ पढ़ाता हूँ कहा कि आप ने नमाज़ पढ़ी तो सिर्फ़ एक मरतबा अपने हाथों को उठाया।

इस ह़दीस के तमाम रावी सिक़ह हैं।

(अस्सुननुल कुबरा लिलबैहेक़ी ख0 2 प्र0 112 बाब मल्लम यज़कुरिर्रफ़अ़ इल्ला इन्दा इफ़तिताहिस्सलात हदीस 2531)

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हों जिसमें रसलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा बयान किया गया है कि आप सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ैयदैन करते थे, सिर्फ़ इमामे अबू ह़नीफ़ा ने इसकी रिवायत नहीं की है मैंने मुखतलिफ़ कुतुबे अह़ादीस के ह़वाले से इसकी 23 सनदें ज़िक्र कीं जो सह़ीह और मोतबर हैं। लिहाज़ा यह कहना कि ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो जिसमें रफ़ेयदैन न करने का ज़िक्र है वह सिर्फ़ अबू ह़नीफ़ा ने रिवायत की है, ग़लत है।

रफ़ेयदैन न करने की दूसरी ह़दीस

हदीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्ला तआ़ला अ़न्हो (मौत 72 हि0)

हज़रते अबू ह़नीफ़ा फ़रमाते हैं कि इमामे शाबी यह फ़रमाते थे कि मैंने बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो को यह फ़रमाते हुए सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते थे तो दोनों हाथों को उठाकर अपने दोनों कांधों के मुक़ाबिल ले जाते थे और सलाम फेरने तक दोबारा अपने हाथों को नहीं उठाते थे।

(इसकी तख़रीज अबू नुऐम ने अपनी मुसनद प्र0 156 में की है, मुसनदे अह़मद 4/301, निसई 2/195, अबू दाऊद 1/281 हदीस 750, मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/264, मुसनदे अबू याला 4/295 ह़दीस 1653)

फ़ायदाः सुनने अबूदाऊद के हाशिये मे अहले ह़दीस आ़लिम शैख़ अलबानी ने इसे सही क़रार दिया है और अह़मद शाकिर ने ह़ाशिये

तिरमिज़ी में इसे सही लिखा। निसई के हाशिये में शैख़ ग़द्दा ने इसे सही लिखा।

हदीसे मज़कूर से साफ़ साफ़ मालूम हो गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सिर्फ़ तकबीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथों को उठाते थे और पूरी नमाज़ में फिर कहीं दोनों हाथों को नहीं उठाते थे।

हदीसे बरा इब्ने आज़िब रज़ियल्लाहो अन्हो की इसनादी हैसियत

इस हदीस के रावी आला दर्जे के सिक़ह, फ़क़ीह, मोहद्दिस, हाफ़िज़ुल हदीस, आदिल और कामिल हाफ़िज़े वाले थे। लिहाज़ा इस हदीस की सनद के सही होने बल्कि रफ़ेयदैन के सुबूत वाली तमाम रिवायात से ज़्यादा सही हाने में शक नहीं।

रावियों के हालात मुलाहज़ा करें:–

हदीसे बरा इब्ने आज़िब रज़ियल्ला तआला अन्हो के पहले रावी इमामुल मुहद्देसीन वलफुक़हा इमामे अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहे अलैह (मौतः 150 हि0):

आपके हालात पिछले सफ़हात में हदीस न0 1 के तहत तफ़सील के साथ मुलाहज़ा फ़रमाये । आप बइत्तिफ़ाक़े मोहद्देसीन व नाक़ेदीने हदीस, इमामुल मुहद्देसीन वल फुक़हा, हाफ़िज़ुलहदीस, और सिक़ह थे और सिक़ह व हाफ़िज़ुल हदीस से हदीसें रिवायत करने वाले ताबेईन में से थे।

हदीसे बरा इब्ने आज़िब के दूसरे रावी

आमिर बिन अब्दुश्शाबी अबू अम्र (मौत 109 हि0):

इमामे इब्ने हिब्बान ने तहरीर फ़रमायाः आमिर बिन शराहील अहले कूफ़ा में से थे, उन्होंने डेढ़ सौ सहाबये किराम से अहादीस सुनी हैं। फ़क़ीह व शाइर थे, 109 हि0 में वफ़ात हुई और एक क़ौल के मुताबिक़ 105 हि0 और बाज़ क़ौल के मुताबिक़ 104 हि0 में वफ़ात हुई। (अस्सिक़ात 5/185) इमामे बुख़ारी ने फ़रमायाः पॉच सौ या उससे ज़्यादा सहाबा का ज़माना पाया। (अत्तारीखुल कबीर, इकमाल तहज़ीबु कमाल ख0 7 प्र0 173)

इमामे इब्ने हजर असक़लानी ने फ़रमायाः इमामे शाबी सिक़ह, मशहूर फ़क़ीह, फ़ाज़िल थे। (अत्तक़रीब तरजमाः 3417)

इमामे ज़हबी की नज़र में: इमामे ज़हबी ने इमामे शाबी का यह क़ौल नक़्ल किया है "मैंने पांच सौ सहाबये किराम से मुलाक़ात की है और बयाज़ में जो कुछ भी मैंने लिखा और जो ह़दीस भी सुनी उसे अपने ह़ाफ़िज़ा में मह़फ़ूज़ कर लिया" (अलकाशिफ़ तरजमा:2531)

इमामे मकहूल ताबेई ने फ़रमाया: मैं (इमामे मकहूल) ने आ़मिर शाबी से बड़ा फ़क़ीह नहीं देखा और एक (ताबेई) ने कहा कि आ़मिर शाबी अपने ज़माने में ऐसे फ़क़ीह थे जैसे सहाबीये रसूल हज़तरे इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो अ़न्हो अपने ज़माने में फ़क़ीह थे। (अलकाशिफ़ तरजमा:2531)

हज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो (वफातः 72 हि0)

आप रसूले पाक सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के चहीते सहाबी थे। ज़ौक़े जिहाद का यह ह़ाल था कि ग़ज़वये बद्र के मौक़े पर नौउम्र होते हुए जिहाद में शरीक होने के लिए मुजाहिदीन के लश्कर में शरीक हो गए थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने उनकी कमसनी की बुनियाद पर उन्हें वापस फ़रमा दिया था, लेकिन गज़वये उह़द में शरीक थे।

क़ारेईने किराम! मुलाह़ज़ा फ़रमाया आपने कि ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो की ह़दीस में साफ़ लिखा हुआ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम नमाज़ में सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त हाथों को उठाते थे और पूरी नमाज़ में कहीं भी हाथों को नहीं उठाते थे।

रफ़ेयदैन न करने की यह ह़दीस सनद के एतेबार से बहुत आला है।

मोह़द्देसीने किराम सनद की तक़वियत की वजूह में यह भी ज़िक्र करते हैं कि अगर किसी ह़दीस में रावियों की तादाद दूसरी ह़दीस के रावियों के मुक़ाबले में कम हो तो कम रावियों वाली ह़दीस को बुलन्द इसनाद की बुनियाद पर ज़्यादा क़वी और ज़्यादा सही कहा जाता है। ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाह अ़न्हो की ह़दीसे मज़कूर जिसमें रफ़ेयदैन न करने का ज़िक्र है वह सनद के एतेबार से बहुत आ़ली (बुलन्द) है। क्योंकि नबीये करीम सल्लल्लाहो

अ़लैहे वसल्लम की यह ह़दीस इमामे अबू ह़नीफ़ा तक सिर्फ़ दो वास्तों से चहुंती है। एक वास्ता जलीलुलक़द्र ताबेई, फ़क़ीहे ज़माना, ''अपने वक़्त के इब्ने अ़ब्बास'' इमामे आ़मिर शाबी की सूरत में है और दूसरा वास्ता जलीलुलक़द्र सह़ाबीये रसूल, सितारये रुश्दो हिदायत ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो का नामे नामी है। लिहाज़ा बुलन्द इसनाद के एतेबार से यह ह़दीस सिर्फ़ दो वास्तों से इमामे अबू ह़नीफ़ा तक पहुंचने की वजह से रफ़ेयदैन करने की जुम्ला अह़ादीस जो अह़ादीस की किताबों में हैं, सबसे आला दर्जे की है और तरजीह़ की दूसरी वजह का लिहाज़ किया जाए यानी रावियों के 'तफ़क़्क़ोह फ़िद्दीन' का तो इस एतेबार से भी इमामे अबू ह़नीफ़ा की यह रिवायत बहुत क़वी (मज़बूत) है। क्योंकि इमामे अबू ह़नीफ़ा की इमामत व तफ़क़्क़ोह पर सब का इत्तेफ़ाक़ है और आ़मिर शाबी को तो इजतिहाद व तफ़क़्क़ोह में अपने ज़माने का 'इब्ने अ़ब्बास' माना गया है। मालूम हुआ कि तकबीरे तह़रीमा के सिवा नमाज़ में कहीं भी रफ़ेयदैन न करने की अह़ादीस ज़्यादा आला दर्जे की और ज़्यादा क़वी हैं।

रफ़ेयदैन न करने की तीसरी ह़दीस

मुसनदे इमामे अबू ह़नीफ़ा (लेअबी नुऐम) के ह़वाले से हज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो की ह़दीस गुज़री, जिससे साबित होता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम नमाज़ में सिर्फ़ तकबीरे इफ़्तेताह़ के वक़्त रफ़ेयदैन करते थे। अब ज़ैल में मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा के ह़वाले से ह़दीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो को ज़िक्र कर रहे हैं। ह़दीस के अल्फ़ाज़ यह हैं:–

ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो से रिवायत है कि नबीय करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते थे तो दोनों हाथों को उठाते थे फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक हाथों को नहीं उठाते थे। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/213, बाबो मन काना यरफ़अ़ो यदैहे फ़ी अव्वले तकबीरतिन सुम्मा ला यऊद, ह़दीस 2440, सुनने अबू दाऊद ह़दीस 749,750)

इस ह़दीस की सनद यह है:–

''हमसे ह़दीस बयान की वकी ने वह इब्ने अबी लैला से वह ह़कम से वह ईसा से वह अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अबी लैला से वह बरा इब्ने आ़ज़िब से''

इस सनद के तमाम रावी सिक़ह हैं।

रफ़ेयदैन न करने की चौथी ह़दीस

ह़ज़रते अब्दुल्लह इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने बयान फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को देखा है कि आप तकबीरे इफ्तेताह़ (तकबीरे तह़रीमह) के सिवा नमाज़ में कहीं रफ़ेयदैन नहीं करते थे।

यह ह़दीस मुस्तख़रजे अबू अ़वाना में इस सनद के साथ मरवी हैः ''हमसे ह़दीस बयान की अ़ब्दुल्लाह इब्ने अय्यूब अल–मख़रमी व सादान बिन नस्र व शुऐब बिन अ़म्र आख़ेरीन ने उन सभों ने कहाः हमसे ह़दीस बयान की सुफ़यान बिन उऐना ने, वह जुहरी से, वह सालिम से, वह अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को देखा, जब आप नमाज़ शुरू करते थे तो दोनों हाथों को उठाकर अपने कंधों के मुक़ाबिल ले जाते थे और जब रुकू में जाते या रुकू से उठते तो दोनों हाथों को नहीं उठाते थे। (मुस्तख़रजे अबू अ़वाना बयाने रफ़ेयदैन फ़ी इफ्तेताह़िस्सलात 3/446, ह़दीस 1251,1263)

ह़दीसे मज़कूर की सनद सही है। इसको इमामे अबू अ़वाना ने सुफ़यान इब्ने उऐना तक दर्ज ज़ैल चार असानीद के साथ ज़िक्र किया है।

पहली सनदः जो ऊपर लिखी गई (सही अबू अ़वाना ख0 2 प्र0 90 मुस्तख़रज अबू अ़वाना ह़दीस 1251,1263)

दूसरी सनदः मुसनदे हुमैदी में इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ इमामे अ़ब्दुल्लाह इब्ने जुबैर इब्ने ईसा अल–क़रशी अल–हुमैदी मौत 219 हि0 की है। (मुसनदे हुमैदी 1/515 हदीस 626)

मुसनदे हुमैदी की रिवायत सनद के साथ यह हैः–

''हुमैदी ने कहा हमसे ह़दीस बयान की जुहरी ने उन्होंने कहा मुझे ख़बर दी सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने वह अपने वालिद से उन्होंने कहः मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को देखा जब आपने नमाज़ शुरू की तो अपने दोनों हाथों को अपने दोनों शानों के बराबर उठाया और जब रुकू में जाने का इरादा किया और रुकू से अपने सर को उठाने का इरादा किया

तो आपने (हाथों को) नहीं उठाया और दोनों सजदों के दरमियान (नहीं उठाया)। (मुसनदे हुमैदी 1/515, ह़दीस 626)

मालूम हुआ कि इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ इमामे हुमैदी के नज़दीक रफ़ेयदैन न करने की ह़दीस सही मोतबर है।

तीसरी सनदः इब्ने वहब और अबुल क़ासिम ने मालिक से उन्होंने इब्ने शहाब से उन्होंने सालिम से उन्होंने अपने वालिद से (रिवायत की) कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू फ़रमाते तो अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कांधों के बराबर उठाते थे। (अल–मुदव्वनतुल कुबरा)

इस ह़दीस में भी सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक्त हाथ उठाने का ज़िक्र है, बाक़ी जगहों में नहीं।

चौथी सनदः इमामे बुख़ारी ने जुज़्ए रफ़ेयदैन में बैहक़ी, हाकिम, तिबरानी और इब्ने अबी शैबा ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लहो अ़न्हुमा दोनों से रिवायत किया है। बाज़ ने मरफ़ूअ़न और बाज़ ने मौक़ूफ़न, फ़रमायाः

''सिर्फ़ सात जगहों में (बतौरे इबादत) हाथ बुलन्द किये जायंगे। नमाज़ शुरू करते वक़्त, बैतुल्लाह शरीफ़ सामने देखते वक़्त, सफ़ा व मरवा पर, अ़रफ़ात में, मुज़दलेफ़ा में और रमिये जिमार के वक़्त।

(अल–आसार लेअबी यूसुफ़ बाबो इफ्तेताह़िस्सलात 1/21, मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा ख0 1 प्र0 214 बाबो मन काना यरफ़अ़ो यदैहे फ़ी अव्वले तकबीरतिन हदीस 2450, नसबुर्राया 1/390)

मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा, सही इब्ने अ़वाना और मुसनदे हुमैदी की ह़दीसे मज़कूर से मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम और आपके फ़क़ीह सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हुमा नमाज़ में सिर्फ़ तकबीरे इफ्तेताह़ के वक़्त रफ़ेयदैन करते थे और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लहो अ़न्हो से रफ़ेयदैन के सुबूत पर जो ह़दीसें मनकूल हैं वह रफ़ेयदैन के सुन्नते दायमा, लाज़िमा होने पर दलालत नहीं करतीं। बल्कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने पहले कुछ दिनों

तक रफ़ेयदैन किया था बाद में छोड़ दिया। जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने सह़ाबये किराम के सामने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा बयान करने के लिये नमाज़ पढ़कर दिखाया तो सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा में रफ़ेयदैन किया और रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन नहीं किया।

रफ़ेयदैन न करने की पांचवीं ह़दीस

इमामे अबूदाऊद ने सुनने अबूदाऊद में एक उनवान यह क़ायम फ़रमाया हैः'' उसका बयान जिसने ह़दीस में रुकू के वक़्त रफ़ेयदैन का ज़िक्र नहीं किया'' इमामे अबू दाऊद ने इस उनवान के तह़त यह ह़दीस शरीफ़ ज़िक्र की हैः

हज़रते अबूहुरैरह रज़ियल्लाहो अ़न्हो से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते थे तो दोनों हाथों को ऊपर उठाते थे। इमामे अबूदाऊद के नज़दीक यह ह़दीस सही है। उन्होंने इसकी सनद में कोई कलाम नहीं किया है। इस ह़दीस में रफ़ेयदैन का ज़िक्र सिर्फ़ तकबीर तह़रीमा के वक़्त है। (अबू दाऊद 1/126, तिरमिज़ी 1/33)

रफ़ेयदैन न करने की छटी ह़दीस

इमामे अबूदाऊद व तिरमिज़ी ने तख़रीज की हैः ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो नें फ़रमाया कि किया मैं तुम को रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अ़लैहे वसल्ल की नमाज़ की तरह़ नमाज़ पढ़कर न बताऊँ? फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ी और सिर्फ़ एक मरतबा (तकबीरे तह़रीमा के वक़्त) दोनों हाथों को उठाया। (सुनने अबू दाऊद ह़दीस 794, जामेये तिरमिज़ी ह़दीस 257, निसई ह़दीस 1026)

रफ़ेयदैन न करने की सातवीं ह़दीस

इमामे निसई ने तख़रीज की हैः ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हों से रिवायत है उन्होंने फ़रमायाः क्या मैं तुमको नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ पढ़कर न बताऊँ, फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ी तो सिर्फ़ एक बार दोनों हाथों को उठाया। यह

ह़दीस आला दर्जे की सही है क्योंकि इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैहे को जिस सनद के साथ मिली है वह आला दर्जे की सही है और इमामे निसई की सनद के साथ यह ह़दीस ह़सन है। (अस्सुननुल कुबरा लिन्नसई 1/132 ह़दीस न0 645)

रफ़ेयदैन न करने की आठवीं ह़दीस

मुसनदे अबू याला की रिवायत सनद के साथ दर्ज हैः

ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू फ़रमाते तो दोनों हाथों को सर की तरफ़ उठाते थे फिर दोबारा नहीं उठाते थे। (मुसनदे अबू याला अल–मूसली 4/259 ह़दीस न0 1654)

मुसनदे अबू याला में ह़दीसे मज़कूर दर्ज ज़ैल सनदों के साथ भी मरवी है।

रफ़ेयदैन न करने की नवीं ह़दीस

ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो से मरवी है कि मैंने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को देखा जब आपने नमाज़ के लिए तकबीरे इफ्तेताह़ कही तो दोनों हाथों को दोनों कानों के मुक़ाबिल ले गये फिर दोबारा पूरी नमाज़ में ऐसा नहीं किया। (मुसनदे अबू याला अल–मूसली ह़दीस न0 1655)

रफ़ै सदैन न करने की दसवीं ह़दीस

ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को देखा आपने नमाज़ शुरू करते वक़्त दोनों हाथों को उठाया यहां तक कि मैंने देखा आपके दोनों अंगूठे कानों के क़रीब थे फिर दोबारा हाथों को नहीं उठाया। (मुसनदे अबू याला ह़दीस न0 1656, कन्जुल उम्माल ह़दीस न0 36408)

रफ़ै सदैन न करने की ग्यारहवीं ह़दीस

यही ह़दीस सुनने अबू दाऊद में इस तरह़ हैः हमसे ह़दीस बयान की मोह़म्मद बिन सबाह़ अल–बज़्ज़ाज़ ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की शुरैक ने वह यज़ीद बिन अबी ज़ियाद से वह अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला से

वह बरा से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू फ़रमाते थे तो अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कानों के क़रीब तक उठाते थे फिर नहीं उठाते थे। (सुनने अबू दाऊद, उन लोगों का बयान जिन्होंने रुकू के वक़्त रफ़ेयदैन का ज़िक्र नहीं किया ख0 1 प्र0 191, ह़दीस न0 749)

रफ़ेयदैन न करने की बारहवीं ह़दीस

यही ह़दीस सुनने दारे कुत्नी में इस तरह़ हैः

हमसे ह़दीस बयान की अह़मद इब्ने अ़ली इब्ने अ़ला ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अबुल अशअ़स ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की मोह़म्मद बिन बक्र ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की शोबा ने वह यज़ीद इब्ने अबी ज़ियाद से उन्होंने कहा कि मैंने अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अबी लैला को यह कहते हुए सुना कि बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने इस मजलिस में एक जमाअ़त के सामने ह़दीस बयान की, वहां ह़ज़रते कअ़ब बिन अ़जरा भी थे उन्होंने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को देखा कि आपने नमाज़ शुरू करते वक़्त पहली तकबीर में दोनों हाथों को उठाया।

मुसनदे अबू याला, अबू दाऊद और दार कुत्नी की सनद के साथ ह़दीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो ह़सन है और ह़ज़रते इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैहे की सनद के साथ आला दर्जे की सही है। इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैहे को ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो की ह़दीस सिर्फ़ एक वास्ते यानी ह़ज़रते आ़मिर शाबी से मिली है और आ़मिर शाबी के सिक़ह और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस होने में किसी को कुछ कलाम नहीं। उन्होंने डेढ़ सौ सह़ाबये किराम से अह़ादीस सुनी थीं। लिहाज़ा ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो अ़न्हो की ह़दीस इमामे आज़म के नज़दीक आला दर्जे की सही है।

रफ़ेयदैन न करने की तेरहवीं ह़दीस

दारे कुत्नी ने ह़दीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अन्हो को इस तरह़ ज़िक्र किया हैः

हमसे ह़दीस बयान की यह़या बिन मोह़म्मद बिन साइद ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की मोह़म्मद बिन सुलैमान बिन लोई ने उन्होंने कहा हमसे

ह़दीस बयान की इस्माईल बिन ज़करिय्या ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ने वह अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अबी लैला से वह बरा से कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को देखा जब आपने नमाज़ शुरू की तो दोनों हाथों को ऊपर उठाकर दोनों कांधों के मुक़ाबिल ले आए फिर पूरी नमाज़ में कहीं पर दोबारा ऐसा नहीं किया, यहां तक कि नमाज़ से फ़ारिग़ हो गये । (सुनने दार कुत्नी 3/353 ह़दीस न0 1139)

रफ़ेयदैन न करने की चौधवीं ह़दीस

ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लहो अ़न्हो को मुसनदे इमामे अबू ह़नीफ़ा में एक और सनद से ज़िक्र किया है, वह यह हैः अबू ह़नीफ़ा ने ह़म्माद से उन्होंने इब्राहीम और असवद से रिवायत की कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो सिर्फ़ पहली तकबीर मे दोनों हाथ उठाते थे और इसके सिवा नमाज़ में कहीं हाथ नहीं उठाते थे और इस फ़ेल को वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के ह़वाले से बयान फ़रमाते थे। (मुसनदे इमामे अबू ह़नीफ़ा बरिवायते अबू नुऐम 355)

रफ़ेयदैन न करने की पंदरहवीं ह़दीस

ह़ज़रते अ़ब्बाद इब्ने ज़ुबैर की सही मुरसल ह़दीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू फ़रमाते थे तो नमाज़ के शुरू में दोनों हाथ उठाते थे फिर कहीं नहीं उठाते थे, यहां तक कि नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते थे। यह ह़दीस अगरचे मुरसल है लेकिन सही मोतबर है, दूसरी अह़ादीस इसकी ताईद भी करती हैं। (नसबुर्राया इमामे ज़ैलई 1/404)

रफ़ेयदैन न करने का सुबूत सिह़ाह़े सित्ता की अह़ादीस से

सही मुसलिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी और निसई की ह़दीसों में साफ़ लफ़्ज़ों के साथ नमाज़ में सकून से रहने का हुक्म दिया गया है। यानी तकबीरे तह़रीमा के सिवा दूसरे मक़ामात मसलन रुकू में जाते, रुकू से उठते, सजदे में जाते और सजदे से उठते वक़्त यानी जहां–जहां अल्लाहु अकबर कहा जाता है वहां दोनों हाथों को उठाने से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने मना फ़रमाया है।

जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने अपने सहाबा को नमाज़ में रफ़ेयदैन करने से मना नहीं फ़रमाया था उस वक्त तक वह रफ़ेयदैन करते थे। जैसा कि मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा की रिवायत 2432 में ह़ज़रते ह़सन बसरी की रिवायत से है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के असहाब अपनी नमाज़ों में रुकू करते वक़्त इस तरह़ अपने हाथों को उठाते गोया वह पंखे हों। इससे इशारह मिलता है कि जब आपने हाथों को घोड़ों की दुम की तरह़ हिलाने से मना फ़रमाया और नमाज़ में सकून से रहने का हुक्म दिया तो सहाबये किराम ने रफ़े सदैन तर्क कर दिया।

रफ़ेयदैन न करने की सोलहवीं ह़दीस

सह़ी मुस्लिम में ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लहो अ़न्हो की रिवायत के अल्फ़ाज़ हैंः हमारे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम आये (और हम रफ़ेयदैन करके नमाज़ पढ़ रहे थे) तो आपने फ़रमायाः क्या बात है? मैं तुम्हें देख रहा हूँ तुम अपने हाथों को ऐसे उठाते हो जैसे वह बेक़रार घोड़ों की दुम हों, नमाज़ में सुकून इख़्तियार करो। (सह़ी मुसलिम बाबुल अम्र बिस्सकून फ़िस्सलात, बाब 72, ह़दीस न0 996)

रफ़ेयदैन न करने की सतरहवीं ह़दीस

यही रिवायत ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहो अ़न्हो से अबूदाऊद में इन अलफ़ाज़ के साथ हैः हमारे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम आये , और लोग अपने हाथों को उठाये हुए थे, जुहैर कहते हैं कि मेरा ख़्याल यह है कि आमश ने यह कहा कि नमाज़ की ह़ालत में लोग अपने हाथ उठाये हुए थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमायाः क्या वजह है? मैं देख रहा हूँ कि तुम बेक़रार घोड़ों की दुम की तरह़ अपने हाथों को उठाते हो, नमाज़ में सुकून से रहो। (सुनने अबूदाऊद बाब फ़िस्सलाम ह़दीस न0 1002, निसई ह़दीस न0 1193)

सिह़ाहे़ सित्ता की ह़दीसे मज़कूर से साफ़ मालूम हुआ कि नमाज़ में सुकून से रहना चाहिए और तकबीरे तह़रीमा के सिवा किसी और जगह हाथों को न उठाना चाहिए, क्योंकि इससे नमाज़ में सुकून बरक़रार नहीं रहता। सलाम के वक़्त रफ़ेयदैन से हुज़ूर सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम

का मना फ़रमाना सही ह़दीस से साबित है और इसकी वजह नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने खुद ''सुकून इख़्तियार करो'' कह कर बयान फ़रमाई। इससे उन अह़ादीस को ताईद ह़ासिल होती है जिनमें तकबीरे इफ्तेताह़ के सिवा दूसरी जगह रफ़ेयदैन से मना किया गया है क्योंकि यहॉ भी सुकून की वजह ही मक़सूद है, जो बार–बार रफ़ेयदैन करने से फ़ौत हो जाता है।

ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहो अ़न्हो की ह़दीसे मज़कूर में इफ्तेताह़ के अ़लावह नमाज़ में किसी भी ह़ालत में रफ़ेयदैन न करने और नमाज़ में सुकून बरक़रार रखने का हुक्म है। चुनॉचे ह़दीसे जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाह अ़न्हो के अलफ़ाज़ में ग़ौर किया जाए तो मालूम होता है कि किसी मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने बाज़ सह़बा को सलाम के वक़्त रफ़ेयदैन करते हुए देखा तो उससे मना फ़रमाया और फ़रमाया कि सलाम के वक़्त हाथ न उठाओ, बल्कि अपने साथी की तरफ़ मुड़कर सलाम कह दो, हाथ से इशारह न करो।

इसकी वज़ाह़त ह़दीस के इस टुकड़े से हाती हैः जब कोई सलाम फेरे तो अपने असह़ाब की तरफ़ रुख़ करे और हाथ से इशारह न करे। ह़ज़रत जाबिर रज़ियल्लहो अ़न्हो की रिवायत के अलफ़ाज़ यह भी हैंः तुममें से हर एक को काफ़ी है कि अपने हाथ अपनी रानों पर रखे फिर अपने दाएं और बाएं तरफ़ वाले भाई पर सलाम करे।

ह़दीसे मज़कूर के यह दोनों टुकड़े वाज़ेह़ कर रहे हैं कि नमाज़ में सलाम के वक़्त हाथों से इशारह नहीं करना है।

नमाज़ में रफ़ेयदैन न करने बल्कि सुकून इख़्तियार करने का हुक्म

अब ज़रा ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की उन रिवायात के अलफ़ाज़ में ग़ौर करें जिनमें सलाम का ज़िक्र नहीं बल्कि तकबीरे इफ्तेताह़ के सिवा कहीं रफ़ेयदैन न करने और नमाज़ में सुकून से रहने का हुक्म दिया गया है।

हज़रते जाबिर रज़ियल्लाहो अ़न्हो की रिवायात

रफ़ेयदैन न करने की अटठारहवीं ह़दीस

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमायाः क्या वजह है मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुम अपने हाथों को उठाते हो ऐसे जैसे बेक़रार घोड़े दुम हिलाते हैं, नमाज़ में सुकून से रहो। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 2/370)

रफ़ेयदैन न करने की उन्नीसवीं ह़दीस

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम मस्जिद में दाख़िल हुए तो देखा कि लोग नमाज़ में रफ़ेयदैन कर रहे हैं तो आपने फ़रमायाः इन्हें क्या हुआ है! कि अपने हाथों को ऐसे उठाते हैं जैसे वह बेक़रार घोड़ों की दुम हों, नमाज़ में सुकून इख़्तियार करो। (मुसन्नफ़े अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ 2/252, ह़दीस न0 3252)

रफ़ेयदैन न करने की बीसवीं ह़दीस

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम हमारे (ह़ज़रते जाबिर और सहाबये किराम रज़ियल्लाहो अ़न्हुम के) पास तशरीफ़ लाए और हम नमाज़ में रफ़ेयदैन कर रहे थे, आपने फ़रमयाः इन्हें क्या हुआ है, नमाज़ में हाथों को ऐसै उठाते हैं जैसे वह बेक़रार घोड़ों की दुम हों, नमाज़ में सुकून रखो। (अस्सुननुल कुबरा लिन्नसई 1/197, बाबुल अम्र बिस्सुकून फ़िस्सलात)

इमामे निसई ने इस ह़दीस के बाद ''नमाज़ में कलाम की रुख़सत'' का बाब क़ायम फ़रमाया है। इससे पहले ''नमाज़ में सुकून के हुक्म का'' बाब क़ायम फ़रमाया है। इससे इशारा मिलता है कि जिस तरह़ इब्तिदा में नमाज़ के अन्दर कलाम की रुख़सत थी बाद में नमाज़ में कलाम से मना कर दिया गया इसी तरह़ आंह़ज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने इब्तेदाअन नमाज़ में तकबीरे इफ़्तेताह़ के अ़लावह बाज़ जगहों पर रफ़ेयदैन फ़रमाया था लेकिन बाद में इससे मना फ़रमा दिया था।

रफ़ेयदैन न करने की इक्कीसवीं ह़दीस

नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम मस्जिद में दाख़िल हुए लोगों को रफ़ेयदैन करते हुए देखा तो फ़रमायाः इन्हें क्या हुआ है कि

नमाज़ में अपने हाथों को बे क़रार घोड़ों की दुम की तरह उठा रहे हैं, नमाज़ में सुकून से रहो। (अलमोजम लित्तिबरानी 2/284, ह़दीस 1709,1797)

ज़ैल में हम एक इजमाली फ़ेहरिस्त दर्ज करते हैं कि कितनी कुतुबे अह़ादीस में सलाम के वक़्त रफ़ेयदैन न करने और कितनी कुतुबे अह़ादीस में तकबीरे तह़रीमा के सिवा मुतलक़न नमाज़ में रफ़ेयदैन न करने बल्कि सुकून के साथ नमाज़ अदा करने का ज़िक्र है। मुलाह़ज़ा फ़रमाये :–

वह कुतुबे अह़ादीस जिनमें तकबीरे तह़रीमा के सिवा मुतलक़न नमाज़ में रफ़ेयदैन से मना फ़रमाया है।

1. मुसन्नफें इब्ने अबी शैबा ख0 2 प्र0 370
2. मुसन्नफ़े अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ख0 6 प्र0 252 ह़दीस न0 3252
3. अस्सुननुल कुबरा लिन्नसई ख0 प्र0 197 ह़दीस न0 552, 1107
4. अलमोजमुल कबीर लित्तिबरानी ख0 2 प्र0 284 ह़दीस न0 1795, 1797, 1798, 1800, 1801, 1822
5. मुस्तख़रज अबी अ़वाना ख0 3 प्र0 425 ह़दीस 1233, 1825, 1826, 1827, 1828
6. मुसनदे अबी याला ख0 15 प्र0 280 ह़दीस न0 7306, 7314
7. सह़ी इब्ने ह़िब्बान ख0 8 प्र0 246 बाब सिफ़तिस्सलात ह़दीस न0 1878, 1879, 1910, 1911
8. मुसनदे अत्तयालसी ख0 2 प्र0 362 ह़दीस न0 815
9. मुश्किलुल आसार लित्तह़ावी ख0 13 प्र 137 ह़दीस न0 5178
10. जामेउल अह़ादीस ख0 19 ह़दीस न0 20281
11. अस्सुननुल कुबरा लिलबैहक़ी ख02 प्र0 362 बाबुल खुशू फ़िस्सलात ह़दीस न0 3335, 3336, 3661, 3663
12. सह़ीह़ मुस्लिम बाबुल अम्र बिस्सकून फ़िस्सलात ह़दीस न0 996, 119,
13. सुनने अबू दाऊद ख0 3 प्र0 333 ह़दीस न0 1002
14. मुसनदे अह़मद ह़दीस न0 21447, 21550, 21554, 21619

वह कुतुबे अहादीस जिनमें सलाम के वक़्त रफ़ं यदैन से मना किया गया है।

1. अस्सुननुल कुबरा लिन्नसई ख01 प्र0 354 ह़दीस न0 1108
2. सहीह़ इब्ने हि़ब्बान ख0 5 प्र0 198 ह़दीस न0 119

मैंने कुतुबे अहादीस में ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहों तआला अ़नहो की ह़दीसे मज़कूर को तलाश किया तो 14 कुतुबे अहादीस में ह़दीसे मज़कूर में तकबीरे तह़रीमा के सिवा मुतलक़न नमाज़ में रफ़ेयदैन न करने और सकून इख्तियार करने का ज़िक्र है। लेकिन सलाम के वक़्त की क़ैद के साथ रफ़ेयदैन न करने की सराह़त दो किताबों में मुझे मिली।

ह़ज़रत जाबिर रजियल्लाहो अ़न्हो की ह़दीस में रफ़ेयदैन न करने और नमाज़ में सुकून से रहने का हुक्म यह इशारह कर रहा है कि रफ़ेयदैन करने का हुक्म मन्सूख़ हो चुका है। इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैहे के नज़दीक वह तमाम अहादीस जिनमें रफ़ेयदैन करने का ज़िक्र है अगरचे उनमें कुछ अहादीस सहीह़ हैं फिर भी इसलिए क़ाबिले अ़मल नहीं कि वह रफ़ेयदैन न करने की अहादीस के मुक़ाबले में मन्सूख़ व मरजूह़ हैं। इसलिए उन्होंने रफ़ेयदैन करने की अहादीस को क़ाबिले अ़मल नहीं समझा। बरख़िलाफ़ इमामे शाफ़ई रह़मतुल्लाहे अ़लैहे के कि उनके नज़दीक रफ़ेयदैन करने की अहादीस ज़्यादा राजेह़ हैं वह मरजूह़ या मन्सूख़ नहीं। इसलिए उन्होंने रफ़ेयदैन वाली अहादीस पर अ़मल किया। लेकिन इमामे शाफ़ेई ने रफ़ेयदैन न करने पर इमामे आज़म इबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैह पर मुख़ालफ़ते ह़दीस का इलज़ाम नहीं लगाया, न ही रफ़ेयदैन करने वालों को बुरा भला कहा। लेकिन फ़िरक़ये ग़ैर मुक़ल्लेदीन (वहाबियह) जो खुद को अहले ह़दीस कहता है वह न जाने क्यों इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैह को लान–तान करता है और उनपर सहीह़ ह़दीस की मुख़ालफ़त करने का इलज़ाम लगाता है। ह़ालांकि इमामे अबू ह़नीफ़ा ताबेई हैं। उनका मुत्तबेये सुन्नत होना और उनका ज़ुहदो तक़वा मुसल्लम है। उन्हें जम्हूरे मुह़द्देसीन ने सिक़ह ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस कहा है। आप इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ के उस्ताज़ इमामे इब्ने मुबारक के उस्ताज़ हैं। आपके

नज़दीक रफ़ेयदैन न करने के सुबूत पर सहीह़ अह़ादीस मोजूद हैं। लिहाज़ा आप पर मुख़ालफ़ते ह़दीस का इलज़ाम लगाना या तो जिहालत है या इनादो हटधरमी। अल्लाह तआ़ला फ़िरक़ये वहाबिया ख़वारिजे ज़माना को हिदायत नसीब फ़रमाये । आमीन।

रफ़ेयदैन न करने की बाइसवीं ह़दीस

मोह़म्मद बिन अ़म्र इब्ने अ़ता सह़ाबये किराम की एक जमाअ़त के साथ बैठे हुए थे वहां नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तज़किरा हुआ तो सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने फ़रमाया कि मैं तुममें सबसे ज़्यादा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ को याद रखने वाला हूँ। फिर अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने फ़रमाया कि मैंने आंह़ज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा आप तकबीरे तह़रीमा कहते वक़्त दोनों हाथों को दोनों शानों के मुक़ाबिल ले गये और जब रुकू किया तो दोनों हाथों को अपने दोनों घुटनों पर जमा दिया फिर अपनी पुश्त को झुका दिया, रुकू से सर उठाया तो सीधे खड़े हो गये और हड्डी का हर जोड़ अपनी जगह आ गया। फिर सजदा किया तो दोनों हाथों को ज़मीन पर रखा, हाथों को बिछाया नहीं, दोनों हाथों को पहलू से अलग रखा, दोनों क़दमों की उंगलियों को क़िबला की तरफ़ रखा, फिर जब दो रकअ़त पर बैठे तो बाये पैर पर बैठे और दाहिने को खड़ा किया। (बुख़ारी बाबो सुन्नतिल जुलूस फ़ित्तशहहुद ख0 1 प्र0 165 ह़दीस न0 828)

सह़ाबीये रसूल ह़ज़रते अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने एक जमाअ़ते सह़ाबये किराम को मुतवज्जेह करते हुए पूरे एहतेमाम के साथ रसूले अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा बताया कि आंह़ज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त हाथों को उठाया। रुकू में जाते वक़्त रुकू से उठते वक़्त हाथों के उठाने का ज़िक्र नहीं फ़रमाया। एक जमाअ़ते सह़ाबह के सामने ह़ज़रते अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो का यह फ़रमाना कि मैं तुममें सबसे ज़्यादा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ को याद रखने वाला हूँ और फिर उनका सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के रफ़ेयदैन को ज़िक्र करना

और सहाबये किराम की जमाअ़त का उस वक़्त ख़ामोश रहना क्या इस बात की मज़बूत दलीन नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा यही था कि आप सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन फ़रमाते थे?

रफ़ेयदैन न करने की तेइसवीं ह़दीस

इब्ने अबी शैबा ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की इब्ने इदरीस ने उन्होंने आ़सिम बिन कुलैब से उन्होंने अपने वालिद से उन्होंने ह़ज़रते वाइल बिन ह़जर रज़ियल्लाहो अ़न्हो से उन्होंने फ़रमायाः मैं मदीना आया तो मैंने कहा मैं ज़रूर नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ देखूंगा, उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने तकबीर कही और दोनों हाथों को उठया मैनें आपके अंगूठे को आपके दोनों कानों के क़रीब देखा। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/1214, ह़दीस न0 2410) सुनने अबू दाऊद में भी ह़ज़रत वाइल की रिवायत है, उसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा ज़िक्र करते हुए सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन का ज़िक्र है। (अबू दाऊद 1/193)

ह़ज़रते वाइल इब्ने ह़जर रज़ियल्लाहो अ़न्हो की इस ह़दीस में सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने रफ़ेयदैन फ़रमाया। इसके अ़लावा कहीं रफ़ेयदैन करना साबित होता तो ह़ज़रत वाइल बिन ह़जर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ज़रूर बयान करते। क्योंकि वह ऑह़ज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के रफ़ेयदैन को एहतेमाम के साथ बयान कर रहे हैं, और उसूल यह है कि किसी चीज़ को बयान करने की जगह पर बयान न करना उसके न होने की दलील है। लिहाज़ा इस ह़दीस मे तकबीरे इफ्तेताह़ के सिवा नमाज़ के दूसरे मक़ामात में रफ़ेयदैन का ज़िक्र न करना रफ़ेयदैन के साबित न होने की दलील है।

रफ़ेयदैन न करने की चौबीसवीं ह़दीस

हमसे ह़दीस बयान की अबूबक्र बिन अबी शैबा ने, उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अ़बदह इब्ने सुलैमान ने, उन्होंने ह़ारिसा इब्ने अबिर्रजाल से, उन्होंने अ़मरह से, उन्होंने फ़रमाया कि मैंने ह़ज़रते आ़इशा रज़ियल्लाहो अ़न्हा से

पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम नमाज़ किस तरह़ पढ़ते थे? उन्होंने जवाब दियाः जब आप वुज़ू फ़रमाते तो अपना हाथ बरतन में डालते, बिस्मिल्लाह पढ़ते और पूरा वुज़ू फ़रमाते, फिर क़िबला की तरफ़ मुंह करके खड़े होते, तकबीरे तह़रीमा कहते वक़्त कंधों तक दोनों हाथ उठाते, फिर रुकू करते वक़्त अपने हाथों को घुटने पर रखते और हाथों को फैलाते, फिर सर उठाते तो पीठ अपनी जगह पर आ जाती। तुम्हारे इस क़याम से कुछ लम्बा क़याम होता था, फिर सजदा करते। (सुनने इब्ने माजा 1/75)

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हा से हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा पूछे जाने पर आपने नमाज़ का तरीक़ा बताया तो सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन का ज़िक्र फ़रमाया। अगर ग़ैर मुक़ल्लेदीन के कहने के मुताबिक़ रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन ज़रूरी होता तो ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लहो तआ़ला अ़न्हा उसको ज़रूर बयान फ़रमातीं।

सनदे हदीसः

ह़दीसे मज़कूर की सनद ह़सन है। इसके तमाम रावी सिक़ह सदूक़ हैं। इब्ने इबी शैबा बुख़ारी, मुल्सिम के उस्ताज़ हैं, अबदह इब्ने सुलैमान सिह़ाह़े सित्ता के रावी हैं, ह़ारिसा इब्ने अबिर्रजाल के सदूक़ व आ़दिल होने में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं, बाज़ नाक़ेदीने ह़दीस ने उनके ह़ाफ़िज़ा में कलाम किया है। ह़ाकिम ने फ़रमाया कि इमामे मालिक ह़ारिसा से राज़ी नहीं थे लेकिन उनके मुआ़सिरीन अइम्मये ह़दीस उनसे राज़ी थे।

इब्ने सअ़द ने लिखा हैः

''ह़ारिसा इबादत गुज़ार और साह़िबे रिवायत थे। मदीने में 148 हि0 में वफ़ात पाई, क़लीलुलह़दीस थे लेकिन सबत (मज़बूत) थे।

इमामे तिरमिज़ी और अबू अ़ली तोसी ने उनकी ह़दीस तख़रीज करने के बाद लिखा हैः उनके ह़ाफ़िज़ा में कलाम किया गया है।

इजली ने कहाः उनमें कोई ऐब नहीं। (इकमाल तहज़ीबुलकमाल 3/334)

इमामे बुख़ारी और बाज़ मोहद्देसीन ने उन्हें मुनकिरुल ह़दीस लिखा है। इसका यह मतलब नहीं कि ह़ारिसा इब्ने अबिर्रजाल की कोई रिवायत मक़बूल नहीं। उनकी बाज़ रिवायात मुनकर हैं और किसी रावी की बाज़ रिवायात मुनकर होने से उसकी हर रिवायत का नामक़बूल होना लाज़िम नहीं।

अ़मरह बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने साद अंसारियह (वफ़ातः 98 या 106 हि0) ह़ज़रते आ़इशा रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हा की परवरदह और उनकी तिलमीज़ थीं, मदनी फ़क़ीह ख़ातून थीं। उनके वालिद सह़ाबी और दादा अकाबिरे सह़बा में से थे। इमामे ज़हबी ने फ़रमायाः ''सिक़ह, हुज्जत, कसीरुल इल्म और ख़ैर वाली थीं।

रफ़ेयदैन न करने की पच्चीसवीं ह़दीस

इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने फ़रमायाः हमसे ह़दीस बयान की अबुन्नज़्र ने, उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अ़ब्दुल ह़मीद इब्ने बहराम फ़ज़ारी ने, उन्होंने शहर बिन ह़ौशब से, उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने ग़नम ने कि अबू मालिक अशअ़री रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने अपनी क़ौम (अशअ़री) को जमा करके फ़रमायाः अशअ़रियो! जमा हो जाओ और अपनी औरतों और बच्चों को भी जमा कर लो ताकि मैं तुम्हें नबीये करीम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ बताऊँ जो आंह़ज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम हमें मदीनये मुनव्वरह में पढ़ाया करते थे। सबसे पहले मरदों ने सफ़ बांधी, फिर बच्चों ने, फिर ओरतों ने, फिर किसी नमाज़ के लिए इक़ामत कही गई। आप सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे बढ़े, तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन किया, फिर सूरये फ़ातेह़ा और एक सूरत आहिस्ता पढ़ी, फिर तकबीर कहकर रुकू किया और 'सुबह़ान व बेह़मदिही' तीन बार कहा, फिर 'समेअ़ल्लाहो लेमन ह़मेदह' कहकर सीधे खड़े हो गये । फिर तकबीर कहकर सजदा किया, फिर तकबीर कहकर खड़े हुए। आपकी तकबीरें पहली रकअ़त में छः हो गईं। जब दूसरी रकअ़त के लिए खड़े हुए तो तकबीर कही। जब नमाज़ पढ़ चुके तो लोगों की तरफ़ मुंह करके फ़रमायाः मेरी तकबीरों को याद कर लो और मेरे रुकू व सुजूद को सीख लो। यह ह़ज़रते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे

वसल्लम की दिन की नमाज़ है जो आपने हमें पढ़ाई थी। (मुसनदे अह़मद 5/112)

ह़ज़रते अबू मालिक अशअ़री रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हो ने अपनी क़ोम को जमा करके पूरे एहतेमाम के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा बयान फ़रमाया। अगर आप सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ के तरीक़े में रफ़ेयदैन बतौरे दाइमी सुन्नत साबित होता तो ह़ज़रते अबू मालिक अशअ़री रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हो उसको ज़रूर करके दिखाते।

सनदे ह़दीसः ह़दीसे मज़कूर की सनद सह़ीह़ है।

ह़दीसे मज़कूर के रावियों के ह़ालात

अबुन्नज़्र इसह़ाक़ बिन इब्राहीम (वफ़ातः 237 हि0): बुख़ारी, अबूदाऊद और निसई के रावी हैं। सिक़ह सदूक़ हैं। अ़ब्दुल ह़मीद इब्ने बहराम फ़ज़ारी मदाइनी, शहर बिन हौशब के शागिर्द हैं। इमामे दाऊद वग़ैरह ने इन्हें सिक़ह कहा। यह़या बिन मईन ने सिक़ह कहा। निसई ने कहाः इनमें कोई ऐब नहीं। अबूह़ातिम ने कहाः शहर बिन ह़ौशब से उनकी अह़ादीस सही हैं। इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने फ़रमायाः शहर बिन ह़ौशब की रिवायत में वह मुक़ारेबुल ह़दीस (मक़बूल) हैं। ज़हबी ने कहाः शहर बिन ह़ौशब ने एक उम्दह नुस्ख़ये अह़ादीस का सिमा किया है। (सियरे आलामुन्नुबला 7/334)

शहर बिन ह़ौशबः (वफ़ातः 112 हि0): अकाबिरे ताबेईन में से थे। ह़ज़रते अबूहुरैरह, अबूसईद खुदरी, जुन्दुब इब्ने अ़ब्दुल्लाह, और अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र से सिमा किया है और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से कुरआन पढ़ा है। जम्हूरे मोह़द्देसीन के नज़दीक सिक़ह, सबत हैं। (सियरे आलामुन्नुबला 4/372)

अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने ग़नम अशअ़री (वफ़ातः 78 हि0): बइत्तेफ़ाक़े अकाबिर ताबेईन मे से थे। इनके सह़ाबी होने में इख़्तिलाफ़ है। सादिक़, फ़ाज़िल और अ़ज़ीमुल मरतबत थे। उनसे शाम के फ़ुक़्हाये ताबेईन ने इल्मे फ़िक़्ह ह़ासिल किया है। ह़ज़रते मआ़ज़ इब्ने जबल, उमर इब्ने ख़त्ताब, अबूज़र ग़िफ़ारी, अबू मालिक अशअ़री और अबुद्दरदा वग़ैरहुम रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुम से सिमाये ह़दीस किया है। (सियरे आलामुन्नुबला 4/45)

मालूम हुआ कि ह़ज़रते अबू मालिक अशअ़री की यह ह़दीस सही है। इसमें हुजूरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ को एहतेमाम के साथ ज़िक्र किया है और इसमें सिर्फ़ तकबीरे इफ्तेताह़ के वक़्त रफ़ेयदैन करने का ज़िक्र है जो तरके रफ़ेयदैन के सुन्नत होने की दलील है।

रफ़ेयदैन न करने की छब्बीसवीं ह़दीस

सालिम अल–बर्राद ने कहाः हम ह़ज़रते अबू मसऊद अन्सारी रज़ियल्लहो तआ़ला अ़नहो के पास आए, हमने उनसे नमाज़ के बारे में सवाल किया, आपने फ़रमायाः क्या तुम्हें वह नमाज़ न पढ़ाऊँ जो रसूलुल्लाह सल्लाहो अ़लैहे वसल्लम पढ़ा करते थे? फिर ह़ज़रते अबू मसऊद रज़ियल्लाहों तआ़ला अ़न्हो खड़े हुए तकबीरे तह़रीमा कहते वक़्त रफ़ेयदैन किया, फिर रुकू किया, रुकू में दोनों हथेलियों को घुटनों पर रखा, अपने बाजुओं को पहलू से अलग रखा, फिर इस तरह़ खड़े हुए कि हर जोड़ अपनी जगह पर आ गया। इसी तरह़ आपने चार रकअ़त पूरी फ़रमाई। (मुसनदे अह़मद 4/105)

ह़ज़रते अबू मसऊद अन्सारी रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से रसूलुल्लाह सल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा पूछा गया तो आपने नमाज़ पढ़कर दिखाई और सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन किया। अगर रफ़ेयदैन आपकी सुन्नते दाइमा होती तो उसको ज़रूर ज़िक्र फ़रमाते।

रफ़ेयदैन न करने की सत्ताइसवीं ह़दीस

ह़ज़रते अ़ब्बाद बिन ज़ुबैर रज़ियल्लहो तआ़ला अ़न्हो की ह़दीस

ख़िलाफ़ियाते बैहक़ी में हैः–

ह़ज़रते अ़ब्बाद इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लह सल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते थे तो दोनों हाथों को नमाज़ के शुरू में उठाते थे फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक कहीं हाथों को न उठाते थे। (ख़िलाफ़ियाते बैहक़ी बह़वालये अद्दिराया 1/152)

रफ़ेयदैन न करने पर आसारे सहाबये किराम

(खुलफ़ाये राशेदीन के अ़मल से रफ़ेयदैन न करने का सुबूत)

ह़ज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो रफ़ेयदैन नहीं करते थे

ख़लीफ़ये अव्वल ह़ज़रते अबूबक्र सिददीक़ रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के पीछे ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लहो तआ़ला अ़न्हो ने नमाज़ पढ़ी तो ह़ज़रते अबूबक्र सिददीक़ ने सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन किया। (सुनने दारे कुत्नी प्र0 111, ह़दीस न0 1144)

एतेराज़ः इस ह़दीस की रिवायत में मोह़म्मद बिन जाबिर तन्हा हैं और वह ज़ईफ़ हैं।

जवाबः मोह़म्मद बिन जाबिर सदूक़ हैं। उनकी यह रिवायत सिक़ह रावियों के ख़िलाफ़ नहीं।

उनके बारे में इब्ने अ़दी ने कहाः मोह़म्मद बिन जाबिर से अकाबिर मोह़द्देसीन ने अह़ादीस रिवायत की हैं। अगर मोह़म्मद बिन जाबिर इस मरतबे में न होते तो वह मोह़द्देसीन उनसे रिवायत न करते। बावुजूद इसके कि बाज़ लोगों ने उनकी बाज़ अह़ादीस की मुख़ालफ़त की है और उनपर कलाम किया है, उनकी ह़दीस लिखी जाती है। (अलकौकबुन्नय्येरात लेइब्निल कय्याल ख0 1 प्र0 495)

इब्ने अबी ह़ातिम ने कहाः मेरे वालिद अबू ह़ातिम से मोह़म्मद बिन जाबिर और इब्ने लह़या के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मोह़म्मद बिन जाबिर मेरे नज़दीक इब्ने लह़या से ज़्यादा मह़बूब हैं। (अल–जरह़ वत्तादील ख0 7 प्र0 219)

मोह़म्मद बिन जाबिर की यह रिवायत सिक़ह रावियों के ख़िलाफ़ न होने की वजह से मक़बूल है। इसकी ताईद में मरफ़ू और मौकूफ़ अह़ादीस होने की वजह से यह ह़दीस ह़सन के दर्जे में है।

ह़ज़रते उमर रफ़ेयदैन नहीं करते थे

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने ह़ज़रते उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लहो तआ़ला अ़न्हो के पीछे नमाज़ पढ़ी तो ह़ज़रते

उमरे फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त दोनों हाथों को उठाया।

रिवायत के अलफ़ाज़ यह हैंः ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है फ़रमाया कि मैनें नबीये करीम सल्लाहो अ़लैहे वसल्लम, अबूबक्र और उमर रज़ियल्लहो तआ़ला अ़न्हुमा के पीछे नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने सिर्फ़ तकबीरे इफ्तेताह़ (तकबीरे तह़रीमह) के वक़्त दोनों हाथों को उठाया। (दार कुत्नी ख0 1 प्र0 111, ह़दीस न0 1144)

ह़ज़रते असवद का बयान है कि मैंने ह़ज़रते उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो को देखा उन्होंने पहली तकबीर के वक़्त हाथों को उठाया फिर दोबारा नहीं उठाया।

रिवायत के अलफ़ाज़ यह हैंः

मैंने (ह़ज़रते असवद ने)ह़ज़रते उमर इब्ने ख़त्ताब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो को देखा उन्होंने पहली तकबीर के वक़्त दोनों हाथों को उठाया फिर दोबारा नहीं उठाया।

(शरह़े मआ़नियुल आसार लिलइमामित्तह़ावी किताबुस्सलात बाबुत्तकबीरात)

इमामे तह़ावी ने इसकी सनद यह पेश की हैः

हमसे ह़दीस बयान की ह़मानी ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की यह़या इब्ने आदम ने उनहोंने ह़सन इब्ने अ़य्याश से वह अब्दुल मलिक इब्ने अबह़र से वह जुबैर इब्ने अ़दी से वह इब्राहीम से वह असवद से असवद ने कहा कि मैंने ह़ज़रते उमर रज़ियल्लाहो अ़न्हो को देखा उन्होंने तकबीर के वक़्त रफ़ेयदैन किया फिर (पूरी नमाज़ में)दोबारा रफ़ेयदैन नहीं करते थे।

इस ह़दीस के बारे में इमामे तह़ावी ने फ़रमायाः यह सही ह़दीस है। (शरह़े मआ़नियु आसार 1/227)

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़सक़लानी ने फरमायाः इस ह़दीस के सब रावी सिक़ह हैं। (अद्दिराया प्र0 152)

अल्लामा इब्ने अत्तुरकमानी ने लिखाः यह सनद भी सही शर्ते मुसलिम पर है। (अलजौहरुन्नक़ी ख0 2 प्र0 75)

अहले ह़दीस का एतेराज़ः शैख़ मुबारकपुरी ने ''अबकारुल मिनन'' में इस ह़दीस पर यह एतेराज़ किया है कि इस सनद में इब्राहीमे नख़ई मुदल्लिस रावी हैं और उन्होंने ''अन'' से रिवायत की है। और मुदल्लिस की रिवायत अ़न के साथ मक़बूल नहीं।

एतेराज़ का जवाबः ग़ैर मुक़ल्लेदीन अह़नाफ़ पर एतेराज़ करते वक़्त जोश में अपना होश खो बैठते हैं। मुबारकपुरी साह़ब को एतेराज़ करते वक़्त यह ख़्याल नहीं रहा कि इब्राहीमे नख़ई सही बुख़ारी के रावी हैं। बुख़ारी में उनकी अह़ादीस डेढ़ सै से ज़ायद अह़ादीस लफ़्ज़े ''अन'' के साथ हैं। क्या इब्राहीमे नख़ई की वह सारी अह़ादीस बुख़ारी शरीफ़ में ज़ईफ़ हैं? अगर नही तो इब्राहीमे नख़ई की यह रिवायत ''अ़न'' के साथ ज़ईफ़ क्यों? इसलिऐ कि इससे अह़नाफ का मौक़िफ़ साबित होता है? जो तुम्हारा जवाब होगा वही हमारा जवाब होगा।

इब्ने अबी शैबा ने इस ह़दीस को अपनी सनद के साथ यूँ ज़िक्र किया हैः

हमसे यह़या इब्ने आदम ने ह़दीस बयान की उन्होंने ह़सन इब्ने अ़य्याश से उन्होंने अब्दुल मलिक इब्ने अबह़र से उन्होंने ज़ुबैर इब्ने अ़दी से उन्होंने इब्राहीम से उन्होंने असवद से उन्होंने कहा मैंने ह़ज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के साथ नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने नमाज़ में तकबीरे इफ्तेताह़ के सिवा कहीं पे रफ़ेयदैन नहीं किया। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/237)

ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लहो तआ़लला अ़न्हो रफ़ेयदैन नहीं करते थे

कुलैब अलजरमी जो ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के असह़ाब में से थे उनका बयान है कि ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआला अनहो सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त हाथों को उठाते थे और पूरी नमाज़ में कहीं ऐसा नहीं करते थे।

इमामे मोह़म्मद ने फ़रमायाः हमें ख़बर दी अबूबक्र इब्ने अब्दुल्लाह नहशली ने उन्होंने आ़सिम बिन कुलैब अल जरमी से उन्होंने अपने वालिद से और वह ह़ज़रते अ़ली बिन अबूतालिब के असह़ाब में से थे, वह नमाज़ शुरू करते वक़्त पहली तकबीर में दोनों हाथ उठाते थे फिर

नमाज़ के किसी हिस्से में नहीं उठाते थे। (मोअत्ता इमामे मोहम्मद 1/118,बाब 33 हदीस न0 109)

हुक्मे हदीसः यह हदीस सही है।

इमामे इब्ने अबी शैबा इसकी रिवायत यूँ बयान करते हैंः

आसिम बिन कुलैब अलजरमी अपने वालिद से रिवायत करते हैं और उनके वालिद हज़रते अली के असहाब में से थे। उनके वालिद का बयान है कि हज़रते अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सिर्फ़ नमाज़ शुरू करते वक़्त दोनों हाथों को उठाते थे फिर पूरी नमाज़ में कहीं रफ़ेयदैन नहीं करते थे। (प्र0 95)

इस हदीस की सनद के तमाम रावी सही बुख़ारी व मुसलिम के हैं। लिहाज़ा इसके सही होने में अहले हदीस को भी कलाम नहीं होना चाहिए। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/213, हदीस न0 2440)

वकीः बुख़ारी व मुसलिम के रावी हैं। उनके हालात गुज़र चुके।

अबूबक्र बिन अब्दुल्लाह नहशलीः सही मुसलिम के रावी हैं। उन्हें इमामे अहमद, यहया इब्ने मईन और अजली ने सिक़ह कहा है।

इमामे जहबी ने कहाः वह हसनुल हदीस सदूक़ हैं। (मीज़ानुल एतेदाल ख0 4 प्र0 996)

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रफ़ेयदैन नहीं करते थे

मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा हदीस 2452 में हज़रते मुजाहिद से मरवी है कि हज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तकबीरे इफ्तेताह के सिवा नमाज़ में कहीं रफ़ेयदैन नहीं करते थे। इमामे तहावी (मौतः 321 हि0) ने फ़रमाया कि हज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का रफ़ेयदैन न करना इस बात की दलील है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को देखा था कि आपने रफ़ेयदैन तर्क फ़रमा दिया था। लिहाज़ा यह उसके उन्सूख़ होने की दलील है। (शरहे मिश्कातुल आसार 10/35)

इमामुल मोहद्देसीन इमामे तहावी ने अपनी सनद के साथ ज़िक्र कियाः

हमसे ह़दीस बयान की इब्ने अबू दाऊद ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की अबूबक्र इब्ने अ़य्याश ने उन्होंने हुसैन से उन्होंने मुजाहिद से, मुजाहिद ने कहा : मैंने इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अ़न्हो के पीछे नमाज़ मढ़ी, आप सिर्फ़ नमाज़ के तकबीरे ऊला में रफ़ेयदैन करते थे। (शरहे मआ़निल आसार 1/163)

इब्ने अबी दाऊद के सिवा इस सनद के सब रावी सही बुख़ारी के हैं। और इब्ने अबी दाऊद को इब्ने ह़जर अ़सक़लानी ने हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस में शुमार किया है। (लिसानुल मीज़ान 1/276)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने जुबैर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के नज़दीक रफ़ैयदैन की अह़ादीस मन्सूख़ हैं

शारेहे बुख़ारी, मोहद्दिसो फ़क़ीह अल्लामह बदरुद्दीन ऐनी ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने जुबैर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की यह रिवायत नक़्ल की है:

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने जुबैर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़नहो से रिवायत है कि उन्होंने एक आदमी को रुकू करते और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन करते हुए देखा तो उससे फ़रमाया कि तुम यह न करो क्योंकि इस चीज़ को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम ने किया था फिर उसे तर्क कर दिया। (उम्दतुल क़ारी 2/7)

ग़ैर मुक़ल्लिद सिद्दीक़ ह़सन के बक़ौल रफ़ेयदैन मन्सूख़ है

ग़ैर मुक़ल्लेदीन के इमाम नवाब सिद्दीक़ ह़सन ख़ां भोपाली ने लिखाः रफ़ेयदैन करने और न करने में आख़री फ़ेल रफ़ेयदैन न करना है और तर्क का ज़माना मालूम नहीं। हो सकता है कि आप सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम ने मर्ज़े वफ़ात के ज़माने में तर्क किया हो। (अर्रौज़तुन्नदियह मुलख़्ख़सन प्र0 95)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो रफ़ेयदैन नहीं करते थे

मोह़द्दिस इब्ने अबी शैबा ने यह रिवायत ज़िक्र की है: ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने फ़रमाया कि सिर्फ़ सात जगहों में

हाथ बुलन्द किए जायेंगे। नमाज़ शुरू करते वक़्त, बैतुल्लाह शरीफ़ देखते वक़्त, सफ़ा व मरवह पर, अरफ़ात में, मुज़दलेफ़ा और रमिये जिमार के वक़्त। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/214, ह़दीस न0 2450)

अशरये मुबश्शरह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुम रफ़ेयदैन नहीं करते थे

अशरये मुबश्शरह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुम यानी वह दस सह़ाबये किराम जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने दुनिया ही में जन्नत की ख़ुशख़बरी दी है वह भी नमाज़ में सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन करते थे। वह दस सह़ाबये किराम यह हैं। ह़ज़रते अबूबक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उमरे फ़ारूक़, ह़ज़रते उसमाने ग़नी, ह़ज़रते अ़ली मुरतज़ा, ह़ज़रते तलह़ा इब्ने उबैदुल्लह, ह़ज़रते ज़ुबैर इब्ने अव्वाम, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने औफ़, ह़ज़रते सअ़द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते सईद इब्ने ज़ैद और ह़ज़रते अबूउबैदह इब्ने अलजर्राह़ रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुम।

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा ऐनी रह़मतुल्लाहे अ़लैहे ने फ़रमायाः वह दस ह़ज़रात जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्ल्म ने जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई है वह नमाज़ में सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त हाथों को उठाते थे। (उम्दतुलक़ारी 5/272, बदाये अस्सनाये 1/207)

ह़ज़रते अबूहुरैरह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो रफ़ेयदैन नहीं करते थे

इमामे मालिक फ़रमाते हैं कि मुझे नुऐम मुजमर क़ारी ने खबर दी कि ह़ज़रते अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो उन्हें नमाज़ पढ़ाते थे तो हर बार उठते और झुकते वक़्त तकबीर कहते और हाथों को तकबीरे इफ्तेताह़ के वक़्त उठाते थे। (मोअत्ता इमामे मोह़म्मद 90, किताबुल हज्ज अला अहलिल मदीना 1/95)

उनके अ़लावह कसीर सह़ाबये किराम से रफ़ेयदैन न करना साबित है।

इमामे तिरमिज़ी ने फ़रमायाः रफ़ेयदैन न करने के क़ायल नबीये करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्ल्म के कसीर अहले इल्म सहाबये किराम हैं। (सुननुत्तिरमिज़ी 2/240, ह़दीस 257)

वह ताबेईन किराम जो रफ़ेयदैन नहीं करते थे

इब्राहीम इब्ने यज़ीद इब्ने उमर व नख़ई (मौतः 95 या 96 हि0) रफ़ेयदैन नहीं करते थे।

इमामे ज़हबी ने फ़रमाया कि वह जलीलुल क़द्र ताबेई, फ़क़ीह, सिक़ह, मोह़द्दिस और उलमा के सरदार थे। (अलकाशिफ़ तरजमा 22)

इमामे नख़ई खुद नमाज़ में रफ़ेयदैन नहीं करते थे और दूसरों को उससे मना फ़रमाते थे।

मोह़द्दिस इमामे इब्ने अबी शैबा ने यह रिवायत ज़िक्र की हैः ह़ज़रते इब्राहीमे नखई फ़रमाते थे कि जब तुम नमाज़ में तकबीरे तह़रीमा कहो तो दोनों हाथों को उठाओ फिर बाक़ी नमाज़ में हाथों को न उठाओ। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/264)

रावियों के ह़ालात

ह़ज़रते हैसुमः बुख़ारी व मुसलिम के रावी हैं।

इमामे इब्ने ह़िब्बान ने उन्हें सिक़ात में ज़िक्र करते हुए तह़रीर फ़रमाया है कि हैसुम इब्ने अबी सासान अबू अ़ली कूफ़ी तबये ताबेईन में से थे। (अस्सिक़ात 7/569)

ह़ज़रते हुसैनः बुख़ारी व मुसलिम के रावी हैं, तबये ताबेईन में से थे, उनका शुमार अहले कूफ़ा में होता था, इमामे इब्ने हिब्बान ने उन्हें सिक़ात में ज़िक्र किया है और इमामे ज़हबी ने फ़रमाया कि वह जाइजुल ह़दीस हैं। (अस्सिक़ात 9/169, अलकाशिफ़ तरजमा 5584)

इमामे आमश ने उन्हें इल्मे ह़दीस का सर्राफ़ (ख़ूब जांचने वाला) कहा। (तबक़ातुल हुफ़्फ़ाज़)

ह़ज़रते इब्राहमे नख़ई की रिवायते मज़कूरह के सब रावी सिक़ह मोतबर हैं। सब बुख़ारी व मुसलिम के रावी हैं। अ़लावह अज़ीं इमामे इब्ने

शैबा ने रिवायते मज़कूरह को दर्ज ज़ैल असनाद के साथ भी ज़िक्र किया है:

अबूबक्र इब्ने अ़य्याश हुसैन व मुग़ीरह से वह इब्राहीम से (रिवायत करते हैं कि) उन्होंने कहा तुम अपने दोनों हाथों को नमाज़ में सिर्फ़ पहली तकबीर, तकबीरे इफ्तेताह़ के वक़्त उठाओ।

ह़ज़रते अबूबक्र इब्ने अय्याश:

इमामे इब्ने हिब्बान ने लिखा कि अबूबक्र इब्ने अय्याश तबये ताबेईन और कूफ़ा के इबादत गुज़ार लोगों में से थे। 192 हि0 में वफ़ात हुई (अस्सिक़ात 7/668)

अबू ह़ातिम राज़ी ने फ़रमाया कि अबूबक्र इब्ने अय्याश और शुरैक नख़ई का ह़ाफ़िज़ा बराबर था। (अल–काशिफ़ 6553)

अबूबक्र इब्ने अय्याश भी बुख़ारी के रावी हैं। शुरैक आ़खिरी उम्र में सूए ह़िफ़्ज़ का शिकार हुए थे। यही ह़ाल अबूबक्र इब्ने अय्याश का था। लेकिन अबूबक्र इब्ने अय्याश शुरैक की तरह़ सदूक़, सिक़ह थे और इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने फ़रमाया कि इमामे इब्ने ह़जर अ़सक़लानी ने फ़रमाया कि अबूबक्र इब्ने अय्याश सच्चे, क़ाबिले एतेमाद और ज़ाहिद थे। बुढ़ापे में उनका ह़ाफ़िज़ा बिगड़ गया था और उस ह़ाल में कभी–कभी ग़लती करते थे लेकिन उनकी कुतुबे अह़ादीस सह़ी हैं। ऐसे रावी की रिवायत ह़सन बल्कि मुतअ़द्दिद तुरुक़ की बुनियाद पर 'सह़ी लेग़ैरेही' भी हो जाती है। बाक़ी रावी हुसैन, मुग़ीरह और इब्राहीम के ह़ालात गुज़िश्ता सफ़ह़ात में मुलाह़ज़ा फ़रमा लें।

ह़ज़रते खैसुमा रफ़ेयदैन नहीं करते थे

ह़ज़रते खुसैमह और इब्राहीमे नख़ई सिर्फ़ नमाज़ की इब्तिदा में अपने दोनों हाथों को उठाते थे। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शेबा 1/214, हदीस न0 2448)

अबूबक्र इब्ने अय्याश: सिक़ह, आ़बिद और ज़ाहिद थे। ह़ालात पिछले सफ़ह़ात में देखें।

हज्जाज बिन आसिमः तबये ताबेईन, अहले कूफ़ा में से मोहद्दिस, फ़क़ीह और कूफ़ा के क़ाज़ी थे। (अस्सिक़ात 6/105)

इब्ने हजर असक़लानी व ज़हबी ने कहा कि उनकी अहादीस लेने में कोई हरज नहीं। (अत्तक़रीब तरजमा 1249, अल–काशिफ़ तरजमा)

तलहाः अबू हम्माद कूफ़ी तबये ताबेईन में से थे।

इमामे इब्ने हिब्बान ने उन्हें सिक़ात में ज़िक्र किया है। (अस्सिक़ात 6/489)

खैसुमा जोफ़ी कूफ़ीः ताबेईन में से थे। इमामे ज़हबी ने उन्हें इमामे सिक़ह लिखा। फ़य्याज़ और उलमा नवाज़ थे। वरासत में दो हज़ार दीनार मिले थे, सबको उलमा पर ख़र्च कर दिया था। (अल–काशिफ़ तरजमाः 1428)

इमामे इब्ने अबी शैबा ने हज़रते इब्राहीमे नख़ई की रिवायत को चार सनदों के साथ ज़िक्र फ़रमाया है, जिन पर कोई कलाम नहीं और सारे रावी सिक़ह, सदूक़ मोतबर हैं।

हज़रते क़ैस (मौतः 84 या 86 हि0) रफ़ेयदैन नहीं करते थे

क़ैस इब्ने अबी हाज़िम औफ़ बिन हारिस कूफ़ी ताबेईन में से थे। इमामे इब्ने हजर ने उन्हें सिक़ह लिखा। इमामे ज़हबी ने लिखा कि अकाबिरे ताबेईन में से थे। सिर्फ़ छः दिनों के फ़ासले ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ियारत से शरफ़याब होने का मौक़ा न दिया। (अल–काशिफ़ तरजमा 4856)

इब्ने मईन ने उन्हें सिक़ह कहा। इस्माईल इब्ने ख़ालिद ने सबत कहा। मुआविया इब्ने सालेह ने लिखा कि क़ैस ज़ुहरी से ज़्यादा सिक़ह थे। ज़हबी ने कहा कि उनके क़ाबिले हुज्जत होने पर इजमा है। जिसने उन पर कलाम किया है खुद को मुसीबत में डाला। (अल–इगतिबात, लेमन रमा मिनर्रुवात बिलइख्तेलात)

हज़रते कैस भी सिर्फ़ तकबीरे इफ्तेताह के वक़्त रफ़ेयदैन करते थे, उसके सिवा पूरी नमाज़ में कहीं रफ़ेयदैन नहीं करते थे।

इमामे इब्ने अबी शैबा ने उनकी रिवायत को दर्ज ज़ैल सनद के साथ ज़िक्र किया हैः

हमसे ह़दीस बयान की यह़या इब्ने सईद ने वह रिवायत करते इस्माईल से उन्होंने कहा कि ह़ज़रते क़ैस (जलीलुल क़द्र ताबेई) नमाज़ शुरू करते वक़्त रफ़ेयदैन करते थे फिर पूरी नमाज़ में रफ़ेयदैन नहीं करते थे। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/214, उल लोगों का बाब जो अपने दोनों हाथों को अव्वले तकबीर में उठाते थे फिर नहीं उठाते थे,हदीस न0 2449)

रावियों के ह़ालात

यह़या इब्ने सईदः यह़या इब्ने सईद क़त्तान (वफ़ातः 198 हि0)

शुयूख़ः सलमाने तैमी, हिशाम इब्ने उरवह, आमश और इस्माईल इब्ने अबी ख़ालिद वग़ैरह।

तलामिज़हः सुफ़यान, शोबा, अब्दुर्रह़मान इब्ने मेहदी, मुसद्दद और अबूबक्र बिन अबी शैबा वग़ैरह। (सियरो आलामिन्नुबला 9/176)

ज़हबी ने उन्हें अमीरुल मोमेनीन फ़िल ह़दीस कहा।

इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने कहा कि मेरी आंखों ने यह़या बिन सईद क़त्तान की तरह़ किसी को नहीं देखा।

यह़या बिन मईन ने कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मेहदी ने कहा कि तुम्हारी ऑखों ने यह़या बिन सईद की तरह़ किसी को नहीं देखा होगा।

अ़ली बिन मदीनी ने कहा कि मैंने यह़या बिन सईद से बढ़कर रिजाल का आ़लिम नहीं देखा।

इब्ने खुज़ैमा ने कहा कि मैंने बुन्दार को कहते हुए सुना कि मैंने यह़या बिन सईद के पास बीस साल आना जाना किया, मैं नहीं समझता कि उन्होंने कभी किसी चीज़ में अल्लाह की नाफ़रमानी की हो।

इब्ने अ़वाना ने कहा कि अगर तुम ह़दीस का इल्म ह़ासिल करना चाहते हो तो यह़या क़त्तान को लाज़िम पकड़ लो।

इब्ने सईद ने कहा कि यह़या सिक़ह, मामून, बुलन्द रुतबा और ह़दीस में हुज्जत थे। (सियरे आलामुन्नुबला 9/180)

तमाम नाक़ेदीने ह़दीस के नज़दीक यह़या बिन सईद क़त्तान सिक़ह, आ़दिल और हुज्जत फ़िल ह़दीस थे, किसी ने उनपर जिरह़ नहीं की है।

इस्माईल बिन अबी ख़ालिदः वालिद का नाम हिरमुज़ या सअ़द था। (वफ़ातः 146 हि0)

शुयूख़ः इस्माईल बिन अ़ब्दुर्रह़मान सुदी, अशअस बिन अबी ख़ालिद, ह़कीम बिन जाबिर अह़मसी, जुबैर बिन अ़दी और क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम वग़ैरह।

तलामिज़ाः इब्राहीम बिन ह़मीद रवासी, जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद, जाफ़र बिन औन, ह़फ्स बिन ग़यास, ह़कम बिन उतैबा, सुफ़याने सौरी, सुफ़यान बिन उयैना, अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक और अबू मुआविया मोह़म्मद बिन ख़ाज़िम अज़्ज़रीर वग़ेरह।

जरह़ व तादीलः अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ने कहा कि हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस तीन हैं 1. इस्माईल बिन अबी ख़ालिद 2. अ़ब्दुल मलिक बिन अबी सुलैमान 3. यह़या बिन सईद अन्सारी। वह शाबी की रिवायत को सबसे ज़्यादा जानने वाले और उनकी रिवायत में सबसे ज़्यादा मज़बूत थे। (तहज़ीबुल कमाल 3/73)

मरवान बिन मुआविया ने कहाः इस्माईल को इल्मे ह़दीस की मीज़ान कहा जाता था।

अह़मद इब्ने ह़म्बल ने कहा कि शाबी की सबसे ज़्यादा सह़ी अह़ादीस इब्ने अबी ख़ालिद के पास थीं

अब्दुर्रह़मान बिन मेहदी, इब्ने मईन और निसई ने सिक़ह कहा।

याकूब बिन शैबा ने सिक़ह सबत कहा। (सियरो आलामिन्नुबला 3/74)

साबित हुआ कि यह रिवायत सह़ी है। जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते क़ैस बिन अबू ह़ाज़िम नमाज़ में तकबीरे तह़रीमा के सिवा कहीं रफ़ेयदैन नहीं करते थे।

हज़रते आ़मिर शाबी रफ़ेयदैन नहीं करते थे

हज़रते आ़मिर इब्ने शरहबील इब्ने अ़ब्दुश्शाबी (मौतः 109 हि0) कूफ़ा के रहने वाले जलीलुल क़द्र ताबेई थे। एक सौ पचास सहाबये किराम से अहादीस सुनीं। अज़ीम फ़क़ीह और शायर थे।

इमामे हजर अ़सक़लानी ने फ़रमाया कि वह सिक़ह, मशहूर फ़क़ीह और फ़ाज़िल थे।

इमामे ज़हबी ने फ़रमाया कि शाबी का क़ौल है कि मैंने पांच सौ सहाबये किराम से मुलाक़ात की है, मैंने अपनी बयाज़ में जो कुछ लिखा और जो हदीस भी सुनी है उसे महफ़ूज़ रखा है।

मकहूल फ़रमाते हैं कि मैंने शाबी से बड़ा फ़क़ीह किसी को नहीं देखा।

और एक ने कहा कि आ़मिर शाबी अपने ज़माने में हज़रते इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की तरह थे। (अस्सिक़ात 5/185, अत्तक़रीब तरजमाः 3417, अलकाशिफ़ तरजमा 2531)

क़ारईने किराम! ग़ौर फ़रमायें अगर रफ़ेयदैन न करना सुन्नते रसूल और सुन्नते सहाबा के ख़िलाफ़ होता तो इमामे आ़मिर शाबी रहमतुल्लाहे अ़लैहे जो अपने ज़माने में हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की तरह मुजतहिद, फ़क़ीह थे उन्होंने 500 सहाबये किराम से मुलाक़ात की थी अैर 150 सहाबये किराम से अहादीस सुनी थीं जिनमें से चन्द हज़रात के नाम यह हैं:

उसामा इब्ने ज़ैद इब्ने हारिसा, अशअ़स इब्ने क़ेस कन्दी, अनस इब्ने मालिक, बरा इब्ने आ़ज़िब, बुरैदा इब्ने हुसैन असलमी, जाबिर बिन समुरह, जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अल–बिजली, हारिस बिन अ़ब्दुल्लाह आवर, हारिस बिन मालिक बिन बरसा, हबशी बिन जनादा, हसन बिन अ़ली बिन अबी तालिब, खारिजा बिन सल्त बरजमी, रबी बिन खैसुम, ज़र बिन हुबैश, ज़्याद बिन अ़य्याश अशअ़री, ज़ैद बिन अरक़म, ज़ैद बिन साबित, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास, सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल, समुरह बिन जुन्दुब, सुवैद बिन ग़फ़ला, उबादा बिन सामित, अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास,

अ़ब्दुल्लाह बिन उमर, अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुम अजमईन।

क्या यह मुमकिन है कि इन सह़ाबये किराम ने उनसे नमाज़ में रफ़ेयदैन करने की अह़ादीस ज़िक्र की थीं और उन्होंने उनकी ज़िक्र करदा अह़ादीस को नहीं माना था? ऐसा हर गिज़ नहीं हो सकता। बल्कि सही यह है कि जिन सह़ाबये किराम से उन्होंने अह़ादीस सुनीं थीं उनसे यही सुना था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने नमाज़ में पहले रफ़ेयदैन किया था बाद में आप ने तर्क कर दिया था। लिहाज़ा इन सह़ाबये किराम के तरीक़े पर चलते हुए ह़ज़रते आ़मिर शाबी रफ़ेयदैन नहीं करते थे।

मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा में है कि शाबी नमाज़ की पहली तकबीर में हाथों को उठाते थे। फिर नहीं उठाते थे। (उन लोगों का बाब जो पहली तकबीर में हाथ उठाते थे 1/213, ह़दीस 2424)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद और ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुमा के असह़ाब रफ़ेयदैन नहीं करते थे

इमामे इब्ने अबी शैबा ने यह रिवायत ज़िक्र की हैः

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद और ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो अ़न्हुमा के असह़ाब सिर्फ़ नमाज़ शुरू करते वक़्त रफ़ेयदैन करते थे। वकी ने फ़रमाया कि फिर यह ह़ज़रात दोबारा रफ़ेयदैन नहीं करते थे। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/214ः ह़दीस 2426)

रावियों के ह़ालात

वकीः उनके ह़ालात गुज़र चुके। वह सिक़ह, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस थे।

अबू उमामाः ह़म्माद बिन उसामा बिन ज़ैद कूफ़ी (विलादतः हुदूद 120 हि0 वफ़ात 201 हि0)

शुयूख़ः हिशाम बिन अ़रवा, आमश, इब्ने अबी ख़ालिद, बहज़ बिन ह़कीम, शोबा, सुफ़यान वग़ैरह।

तलामिज़ाः अ़ब्दुर्रह़मान बिन मेंहदी, शाफ़ई, हुमैदी, अबू खैसुमा, अबूबक्र इब्ने अबी शैबा, उसमान बिन अबी शैबा और इसह़क़ अल–कौसज वग़ैरह। बुख़ारी व समेत सिह़ाह़े सित्ता के रावी हैं।

इमामे अह़मद बिन ह़म्बल ने उन्हें सिक़ह, सबत और आलमुन्नास कहा।

इमामे ज़हबी ने उन्हें ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस और इमाम कहा। (सियरो आलामिन्नुबला 9/278)

अबू इसह़ाक़ सबीईः अजिल्लये ताबेईन में से थे। उनका क़ौल है कि मैंने ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हो को खुत्बा देते देखा है। उनहोंने दर्ज ज़ैल सह़ाबये किराम से अह़ादीस ली हैंः

मुआ़वियह, अ़दी बिन ह़ातिम, अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, बरा बिन आ़ज़िब, ज़ैद बिन अरक़रम, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स और अबू जुह़ैफ़ा अस्सिवाई वग़ैरहुम रज़ियल्लहो अ़न्हुम। (सियरो आलामिन्नुबला 5/394)

इतने जलीलुल क़द्र सह़ाबा से अह़ादीस सुनने वाले ताबेई के बारे में यह गुमान किया जा सकता है कि वह सह़ाबये किराम से रफ़ेयदैन न करने की अह़दीस सुनने के बावुजूद रफ़ेयदैन पर आ़मिल थे?

अब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला (वफ़ातः 83 हि0) रफ़ेयदैन नहीं करते थे

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अबी लैला ताबेई सिक़ह थे। उनके असह़ाब उनकी ऐसी ताज़ीम करते थे जैसे अमीरुल मोमेनीन की ताज़ीम की जाती थी। (किताबुस्सिक़ात 5/101, अत्तक़रीब तरजमा 4456, अलकाशिफ़ 3400)

ह़ज़रते अब्दुर्रह़मान इब्ने अबी लैला नमाज़ में सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन करते थे। उसके सिवा नमाज़ में कहीं रफ़ैयदैन नहीं करते थे।

मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अबी लैला नमाज़ में पहली तकबीर (तकबीरे तह़रीमह) के वक़्त हाथों को उठाते थे। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/214 ह़दीस 2451)

मुआ़विया इब्ने हिशाम (मौतः204 या 205 हि0) रफ़ेयदैन नहीं करते थे

अबुलह़सन मुआ़विया इब्ने हिशाम तबये ताबेईन और अहले कूफ़ा में से थे।

इब्ने ह़जर अ़सक़लानी ने उन्हें सदूक़ (सच्चा) लिखा और यह कहा कि उनसे कुछ वहम भी सादिर हुए हैं।

ज़हबी ने लिखा कि मुआ़विया इब्ने हिशाम सिक़ह थे।

इब्ने हिब्बान ने उन्हें सिक़ह में ज़िक्र किया है और लिखा कि उनसे कभी ख़ता भी हुई है। वह रफ़ेयदैन नहीं करते थे। (अस्सिक़ात 9/166, अत्तक़रीब तरजमा 628, अलकाशिफ़ तरजमा 5535)

तन्बीहः

कभी वहम का सुदूर होना या ख़ता होना रावी को मजरूह़ नहीं करता जैसा कि अहले इल्म पर पोशीदा नहीं।

इमामे मालिक रह़मतुल्लाहे अ़लैहे के नज़दीक रफ़ेयदैन नहीं।

इमामे दारुल हिजरा, इमामे मालिक रह़मतुल्लहे अ़लैहे मस्जिदे नबवी में दर्स दिया करते थे। अपने दौर में अहले मदीना के उलूम के वारिस थे। यक़ीनन उनके सामने रफ़यदैन की अह़ादीस मौजूद थीं फिर भी वह फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि नमाज़ की तकबीरे इफ्तेताह़ के सिवा किसी तकबीर के साथ झुकते या उठते वक़्त रफ़ेयदैन किया जाएगा। इब्नुलक़ासिम ने कहा कि रफ़ेयदैन का हुक्म इमामे मालिक के नज़दीक ज़ईफ़ था। (अलमदूनतुल कुबरा 1/28)

अ़ब्दुल्लाह इब्ने रशद मालेकी इमामे मालिक का मौक़फ़ बयान करते हुए लिखते हैंः

उनमें से वह ह़ज़रात हैं जिन्होंने रफ़ेयदैन सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा तक ही मुऩसिर किया है क्योंकि उनके नज़दीक ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद और बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुमा की रिवायत राजेह़ है। यही इमामे मालिक का मज़हब है क्योंकि अहले मदीना के अ़मल के मुवाफ़िक़ भी है। (बिदायतुल मुजतहिद1/144)

इमामे अहले मदीना ह़ज़रते इमामे मालिक रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो का रफ़ेयदैन तर्क करना और यह कहना कि हम नहीं जानते कि रफ़ेयदैन अहले मदीना में से कोई करता हो यह इस बात की दलील है कि उनके दौर में अहले मदीना रफ़ेयदैन नहीं करते थे क्योंकि उनको यह मालूम हो चुका था कि रफ़ेयदैन हुज़ूर सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम का दाइमी अ़मल नहीं था बल्कि कभी करके आपने उसे तर्क फ़रमा दिया था।

अ़लावह अज़ीं इमामे आज़म के दौर में कूफ़ा इल्म का मरकज़ था। आपकी ह़यात में भी बहुत से सह़ाबा वहां मौजूद थे और ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में तो कूफ़ा फ़ौजी छाउनी था जिसमें डेढ़ हज़ार या चार हज़ार सह़ाबये किराम जल्वा फ़रमा थे। उनमें तीन सौ असह़ाब बैयते रिज़वान और सत्तरह बदरी सह़ाबी भी थे। अ़हदे उसमानी के आख़िर तक ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो कूफ़ा के मुअ़ल्लिम रहे। ह़ज़रते मौला अ़ली के दौरे ख़िलाफ़त में कूफ़ा दारुलख़िलाफ़त था। दौरे फ़ारूक़ी से लेकर ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा के ज़माने तक फ़ुक़्हाए सह़ाबा व ताबेईन का रफ़ेयदैन न करना क्या इस बात की वाज़ेह़ दलील नहीं कि सह़ाबा व ताबेईन किराम यह जानते थे कि रफ़यदैन का हुक्म मन्सूख़ हो चुका है?

अलबत्ता जिन ह़ज़रात को उसके मन्सूख़ होने का इल्मे यक़ीन ह़ासिल न हो सका वह रफ़ेयदैन करते रहे लेकिन ऐसे ह़ज़रात की तादाद कम थी। चनुंचे इमामे तिरमिज़ी ने मुतसल्लिब शाफ़ेई मुह़द्दिस होने के बावजूद ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो को नक़्ल करने के बाद यह तह़रीर फ़रमाया है कि इब्ने मसऊद की (रफ़ेयदैन न करने की) ह़दीस ह़सन है और यही क़ौल बहुत से अहले इल्म सह़ाबये किराम व ताबेईन का है और सुफ़याने सौरी और अहले कूफ़ा का भी यही मौक़िफ़ है। (तिरमिज़ी 1/35)

वाज़ेह़ रहे कि इमामे तिरमिज़ी को जिस सनद के साथ ह़दीसे इब्ने मसऊद मिली है उसे उन्होंने ह़सन लिखा और न ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा को जिस सनद के साथ मिली वह ह़सन बल्कि सह़ीतर है। जैसा कि पिछले सफ़ह़ात में गुज़रा।

फ़ुक़्हाए किराम रफ़ेयदैन नहीं करते थे

ह़ज़रते अबूबक्र बिन अ़य्याश रहमतुल्लाहे अलैहे का बयानः

जलीलुल क़द्र मोह़द्दिस व फ़क़ीह, सुफ़याने सौरी, अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल के शैख़ और इमामे बुख़ारी के रावी शैख ह़ज़रते अबूबक्र बिन अ़य्याश तबये ताबेईन में से थे। इमामे इब्ने मुबारक फ़रमाते हैं कि मैंने अबूबक्र बिन अ़य्याश से बड़ा सुन्नतों का आ़मिल नहीं देखा। वह फ़रमाते हैं कि मैने किसी फ़क़ीह को नहीं देखा कि उसने नमाज़ में तकबीरे ऊला के सिवा कहीं रफ़ेयदैन किया हो। (शरहे मआ़निल आसार 1/112)

क्या रफ़ेयदैन पचास सह़ाबा से मरवी है?

बाज़ ह़ज़रात ने यह कहना शुरू किया कि रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठने के बाद रफ़ेयदैन करना पचास सह़ाबये किराम से बल्कि उससे भी ज़्यादा से मरवी है। यह बात ग़लत है, तकबीरे तह़रीमा के अ़लावा दीगर मक़ामात पर रफ़ेयदैन करना जिस सह़ाबी से भी मरवी है वह तआ़रुज़, ज़ोफ़ या इख़्तिलाफ़ से ख़ाली नहीं। लिहाज़ा तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन वाली रिवायात के मुक़ाबले में इख़्तिलाफ़ी रफ़ेयदैन वाली रिवायात पेश करना बहर ह़ाल मह़ल्ले नज़र है।

ह़ज़रते ह़सन बसरी रह़मतुल्लाहे अ़लैहे के एक क़ौल *"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के असह़ाब नमाज़ में रफ़ेयदैन करते थे।"* का ग़लत मफ़हूम बावर कराया गया। अगर ह़सन बसरी के क़ौल का यह मतलब है कि सह़ाबा रुकू करते और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन करते थे तो क्या बिला इस्तिस्ना सारे सह़ाबये किराम ऐसा करते थे? अगर हॉ कहा जाए तो ग़लत होगा क्योंकि कसीर आसारे सह़ाबा और मरफ़ू अह़ादीस रफ़ेयदैन की नफ़ी करती हैं। ह़ज़रते ह़सन बसरी ने मुतलक़ फ़रमाया कि सह़ाबये किराम नमाज़ में हाथों को उठाते थे। यहां मुराद यह है कि तमाम सह़ाबा तकबीरे तह़रीमा के वक़्त हाथों को उठाते थे क्योंकि यह रफ़ेयदैन मुत्तफ़क़ अ़लैह है और रुकू करते और रुकू से उठते वक़्त बल्कि दो सजदों के दरमियान और तीसरी रकअ़त

के लिए उठते वक़्त, सजदे में जाते वक़्त और हर तकबीर के वक़्त रफ़ेयदैन करना इख़्तिलाफ़ी है। इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा ने फ़रमाया कि तकबीरे तह़रीमा के सिवा कहीं रफ़ेयदैन नहीं करना है। क्योंकि वह रफ़ेयदैन ख़ुद सह़ाबये किराम में इख़्तिलाफ़ी था और तकबीरे तह़रीमा वाला रफ़ेयदैन सह़ाबा का इत्तेफ़ाक़ी था। अ़लावा अज़ीं कुव्वते अस्नाद के लिहाज़ से रफ़ेयदैन न करने की रिवायात ज़्यादा क़वी हैं। नीज़ कुरआन के फ़रमान *''अल्लाह के लिए ख़ाकसारी से साथ क़याम करो''*(अल–बक़रह आयत न0 238) और ह़दीसे सह़ीह़ *''अपनी नमाज़ में सुकून इख़्तियार करो''* भी रफ़ेयदैन न करने की ताईद करती हैं। और इख़्तिलाफ़े अह़ादीस व आसार के वक़्त उन अह़ादीस व आसार को तरजीह़ दी जाएगी जो नस्से कुरआनी की मुवाफ़क़त करते हों। लिहाज़ा रफ़ेयदैन न करने की रिवायात को नस्से कुरआनी के मुवाफ़िक़ होने की वजह से मुख़ालिफ़ रिवायात पर तरजीह़ ह़ासिल होगी।

क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़िन्दगी भर रफ़ेयदैन किया?

रफ़ेयदैन के क़ायेलीन एक रिवायत को बड़े ज़ोर–शोर के साथ पेश करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने ता वफ़ात रफ़ैयदैन फ़रमाया है। वह हज़रात बैहक़ी की रिवायत पेश करते हैं कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम जब नमाज़ शुरू फ़रमाते थे तो दोनों हाथों को उठाते थे और जब रुकू से सर उठाते वक़्त और सजदे में ऐसा नहीं करते थे। आपकी यह नमाज़ हमेशा रही यहां तक कि आपने अल्लाह से मुलाक़ात की (वफ़ात पाई)।

तकबीरे तह़रीमा के सिवा कहीं रफ़यदैन न करने की अह़दीसे सह़ीह़ा ह़ज़रते इब्ने मसऊद, ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब, ह़ज़रते इब्ने उमर और ह़ज़रते अबू हुरैरह वग़ैरहुम और सह़ाबये किराम रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुम के आसारे सह़ीह़ा पहले ज़िक्र किए गए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम, ह़ज़रते अबूबक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उमर, ह़ज़रते अ़ली, ख़ुलफ़ाए राशेदीन व दीगर सह़ाबा सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा

में रफ़ेयदैन करते थे। नीज़ ह़दीसे सह़ी मुसलिम के ह़वाले से पहले गुज़री कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ में हाथों को बेक़रार घोड़ों की दुम की तरह़ न उठाओ बल्कि सुकून से नमाज़ अदा करो। यह अह़ादीस साबित करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने तकबीरे तह़रीमा वाले रफ़ेयदैन के सिवा नमाज़ में हर रफ़ेयदैन को तर्क फ़रमा दिया था और सह़ाबये किराम को भी हुक्म फ़रमा दिया था। ह़ज़रते इब्ने मसऊद व ह़ज़रते बरा इब्ने आज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुमा की अह़ादीसे सह़ीह़ा नीज़ सह़ी मुसलिम की ह़दीस के मुक़ाबले में बैहक़ी की यह रिवायत मरजूह़ है। अ़लावह अज़ीं खुद ह़ज़रते इब्ने उमर का अ़मल इस ह़दीस के ख़िलाफ़ था जैसाकि सह़ी रिवायत से साबित है। नीज़ अ़ल्लामा नैवी ने इस रिवायत को ज़ईफ़ बल्कि मौज़ू क़रार दिया है। वह लिखते हैं कि इसके दो रावी अब्दुर्रह़मान इब्ने कुरैश इब्ने खुज़ैमा हरवी और असमा इब्ने मोह़म्मद अल–अन्सारी को वज़्ज़ाए ह़दीस (ह़दीस गढ़ने वालों) में शुमार किया गया है। (मीज़ानुल एतेदाल)

रफ़ेयदैन करने की चार सौ रिवायात–– एक क़िस्सा

क़ायेलीने रफ़ेयदैन में से शैख़ मजदुद्दीन फ़ीरोज़ाबादी ने तो ह़द ही कर दी। बाज़ बुज़ुर्गों ने लिखा था कि रफ़ेयदैन करने की रिवायात 50 सह़ाबये किराम से मरवी है। फ़ीरोज़ाबादी साह़ब ने बड़ी ऊँची उड़ान दिखाई और रुकू में जाते वक़्त और उठते वक़्त के रफ़ेयदैन को तकबीरे तह़रीमा वाले रफ़ेयदैन में शामिल करके यह लिख माराः

"तीन जगहों में रफ़ेयदैन साबित है और रावियों की कसरत की वजह से मुतवातिर के मुशाबेह है। इस मसअले में चार सौ सह़ी ह़दीसें और आसार आए है और अशरये मुबश्शरह ने रिवायत किया। आंह़ज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अ़मल हमेशा इसी कैफ़ियत पर रहा। यहाँ तक कि इस दुनिया से रेह़लत फ़रमा गये । इसके अ़लावह कोई चीज़ साबित नहीं। (सफ़रुस्सआ़दह प्र0 13 शरह़ प्र0 64)

फ़ीरोज़ाबादी साह़ब ने यहां पांच बुलन्द बांग दावे किये हैं जिनका हम ज़ैल में तह़क़ीक़ी जायज़ा पेश करते हैं।

पहला दावाः इन तीन जगहों (तकबीरे तह़रीमह, रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त) रफ़ेयदैन साबित है।

दावे का तह़क़ीक़ी का जायज़ाः अगर तीन जगहों में रफ़ेयदैन साबित है तो उन अह़ादीसे सह़ीह़ा मरफ़ूअ़ह और आसार का क्या जवाब होगा जिनसे यह साबित होता है कि तकबीरे तह़रीमा के सिवा कहीं रफ़ेयदैन साबित नहीं? ह़दीसे ह़ज़रते इब्ने मसऊद, बरा इब्ने आ़ज़िब, इब्ने उमर, अबू हुरैरह और आसारे खुलफ़ाए राशेदीन का क्या जवाब होगा कि रफ़ेयदैन सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा में साबित है? मैंने गुज़िश्ता सफ़ह़ात में 27 मरफ़ू अह़ादीस कसीर आसारे सह़ाबा व ताबेईन से साबित किया कि तकबीरे तह़रीमा के सिवा नमाज़ में कहीं रफ़ेयदैन नहीं। नीज़ ह़दीसे इब्ने मसऊद व ह़दीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुमा जिनमें रफ़ेयदैन न करने का ज़िक्र है वह रफ़ेयदैन के सुबूत की अह़ादीस से ज़्यादा क़वी हैं। कोई शख़्स किसी सह़ी मह़फ़ूज़, मुआरज़ा से ख़ाली रिवायत से साबित करके दिखाए कि तकबीरे तह़रीमा के सिवा नमाज़ में किसी और जगह भी रफ़ेयदैन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने हमेशा किया है? हरगिज़ साबित नहीं कर सकता। सिर्फ़ यह कह देना काफ़ी नहीं कि इन तीन जगहों में रफ़ेयदैन साबित है। फिर सह़ी ह़दीस से तीन जगहों में रफ़ेयदैन साबित है कहना ग़लत है क्योंकि सह़ी ह़दीस से दो सजदों के दरमियान और दो रकअ़त से उठते वक़्त भी रफ़ेयदैन करना साबित है तो मुनकिरीन इन जगहों में रफ़ेयदैन को लाज़िम क्यों नहीं कहते?

दूसरा दावाः फ़ीरोज़ाबादी साह़िब ने दूसरा दावा यह किया है कि रफ़ेयदैन में चार सौ अह़ादीस व आसार आए हैं।

दावा का तह़क़ीक़ी जाइज़ाः यह दावा भी मह़ज़ दावा है जो इन्तिहाई दर्जा मुबालग़ा पर मबनी है। ह़ज़ार कोशिशों के बावजूद आज तक क़ायलीने रफ़ेयदैन चार सौ क्या मुआ़रज़ा से मह़फ़ूज़ चार सही रिवायात भी न ला सके। इमामे बुख़ारी व मुसलिम को अपनी शर्त के मुताबिक़ जो अह़ादीस मिलीं वह भी अ़मल के लिह़ाज़ से मुज़तरिब और ह़दीसे इब्ने मसऊद व बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुमा के मुक़ाबिले में मरजूह़ हैं। अगर चार सौ सही आसार व अह़ादीस रफ़ेयदैन

के सुबूत पर मौजूद हैं तो इमामे बुख़ारी व मुसलिम ने तआ़रुज़ व इख़्तिलाफ़ से ख़ाली दस बीस अह़ादीस ही नक़ल क्यों नहीं कीं और फ़ीरोज़ाबादी साह़ब ने भी सिर्फ़ दावा क्यों किया? उन्हें तो कम से कम वचास अह़ादीस ज़िक्र करना चाहिए था। ह़क़ीक़त यह है कि मह़ज़ ऊँचे ऊँचे दावे हैं कि रफ़ेयदैन के सुबूत पर चार सौ अह़ादीस व आसार हैं, पचास सह़ाबा से रिवायात है, इन दावों के पीछे कोई मज़बूत दलील नहीं।

तीसरा दावाः रावियों की कसरत की वजह से मुतवातिर के मुशबेह है।

दावे का तह़क़ीक़ी जायज़ाः फ़ीरोज़ाबादी साह़ब के नज़दीक चार सौ अह़ादीस व आसार मिल जाने के बावजूद रफ़ेयदैन की रिवायत मुतवातिर न हो सकी, मुतवातिर के मुशबेह ही रही। आख़िर उनके नज़दीक मुतवातिर है क्या? और रावियों की कसरत के क्या माना?

जब चार सौ रिवायात की बात ही बातिल है तो मुतवातिर के मुशाबेह होने की बुनियाद ही हिल गई। फिर फ़ीरोज़ाबदी साह़ब किस बुनियाद पर कहेंगे कि रफ़ेयदैन की रिवायत मुतवातिर के मुशाबेह है?

चौथा दावाः अशरये मुबश्शरह ने बयान किया है कि ऑह़ज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम हमेशा रफ़ेयदैन करते रहे यहां तक कि दुनिया से रुख़सत हुए।

दावे का तह़क़ीक़ी जायज़ाः यह दावा भी ग़लत है कि अ़शरये मुबश्शरह ने यह बयान किया है। सिर्फ़ इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की रिवायत जिसमें यह बात है और भी मुज़तरिब व ज़ईफ़ है बल्कि अ़ल्लामह नैमवी के मुताबिक़ मौजू है। क्योंकि ह़ज़रते इब्ने उमर का अ़मल खुद उसके ख़िलाफ़ था। जैसा कि सही सनद के साथ उनका ह़वाला गुज़िश्ता सफ़ह़ात में गुज़रा।

फिर यह कि अगर अशरये मुबश्शरह यह बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम का दाइमी अ़मल रफ़ेयदैन रहा तो सवाल यह है कि यह जानते हुए ह़ज़रते अबूबक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उमर, ह़ज़रते अ़ली और दीगर अ़शरये मुबश्शरह तकबीरे तह़रीमा के अ़लावा पूरी

नमाज़ में रफ़ेयदैन क्यों नही करते थे? क्या फ़ीराज़ाबादी साहब इन हज़रात के क़ौल व अ़मल में तज़ाद मानेंगे? और उन्हें तारिके सुन्नत क़रार देंगे?

सही यह है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने जो रफ़ेयदैन ता उम्र किया है वह तकबीरे तह़रीमा वाला रफ़ेयदैन है न कि कोई और रफ़ेयदैन।

पांचवां दावाः इसके अ़लावह कोई चीज़ साबित नहीं।

दावे का तह़क़ीक़ी जायज़ाः इसके अ़लावह यानी रफ़ेयदैन के अ़लावा कुछ साबित नहीं। अगर इस बात को मान लिया जाए तो उन अह़ादीसे सह़ीह़ा मरफ़ूअ़ह व आसारे सह़ीह़ा का क्या जवाब है जिन से साबित होता है कि सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन करना है?

पिछले सफ़ह़ात में हमने सही मरफ़ू अह़ादीस व आसार नक़ल किए जो रफ़ेयदैन न करने के बारे में वाज़ेह़ और बहुत मज़बूत हैं, उन रिवायात के होते हुए यह दावा करना कि रफ़ेयदैन के ख़िलाफ़ कोई रिवायत साबित नहीं, सूरज की रौशनी का इनकार करना है।

इमामे मोह़म्मद रह़मतुल्लाहे अ़लैहे पर इल्ज़ाम

एक ग़ैर मुक़ल्लिद आ़लिम ने किबात लिखी और उसमें इमामे मोह़म्मद रह़मतुल्लह अ़लैह के बारे में यह लिखा कि "रफयदैन उनके नज़दीक सुन्नते सह़ीहा से साबित है तो बरादराने अह़नाफ़ को भी यह सुन्नत अपना लेनी चाहिए।" (सलातुर्रसूल प्र0 242)

इमामे मोह़म्मद रह़मतुल्लाह अ़लैह पर यह इल्ज़ाम है। आपने रफ़यदैन को कहीं भी सुन्नत नहीं लिखा। देखिए आप क्या फ़रमाते हैंः

" सुन्नत यह है कि आदमी अपनी नमाज़ में उठते बैठते अल्लाहो अकबर कहे। जब पहले सजदे में जाए तो अल्लाहो अकबर कहे, जब दूसरे सजदे में जाए तो अल्लाहो अकबर कहे और नमाज़ में दोनों हाथों के उठाने का मसअला यह है कि एक बार शुरू करते वक़्त दोनों हाथों को कानों की लौ तक उठाए फिर उसके बाद नमाज़ में कहीं दोनों हाथों को न उठाए। यही इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाह अ़लैह के नज़दीक है और इस सिलसिले में कसीर आसार मौजूद हैं।" (मोअत्ता इमामे मोह़म्मद प्र0 90)

इमामे मोहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने इख़्तिलाफ़ी रफ़ेयदैन को सुन्नत नहीं लिखा बल्कि सराहत के साथ यह लिखा कि एक बार तकबीर तहरीमा के वक़्त रफ़ेयदैन किया जाएगा, फिर पूरी नमाज़ में रफ़ेयदैन नहीं किया जायेगा।

हज़रते ग़ोसे आज़म के नाम का ग़लत इस्तेमाल

एक ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम अहनाफ़ को धोका में डालने के लिए यह लिखा कि *गुनियतुत्तालेबीन* में है कि शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी नमाज़ में रफ़ेयदैन करते थे। इस बात से क़तये नज़र कि *गुनियतुत्तालेबीन* की इसनादी हैसियत क्या है, यहां यह बात बताना ज़रूरी है कि ग़ौसे आज़म जीलानी रहमतुल्लाह अलैह हम्बली मज़हब के मुजतहिद और फ़क़ीह थे और हम्बलियों के नज़दीक रफ़ेयदैन साबित है। लेकिन आजतक किसी हम्बली ने किसी हनफ़ी को रफ़ेयदैन न करने की वजह से तारिके सुन्नत नहीं कहा, न ही किसी हनफ़ी मज़हब वाले ने कियी शाफ़ेई या हम्बली को रफ़ेयदैन करने की वजह से तारिके सुन्नत क़रार दिया बल्कि चारों अइम्मा के मानने वाले बरहक़ हैं कोई किसी पर ताना व तशनी नहीं करता। लेकिन ग़ैर मुक़ल्लेदीन जो चारों अइम्मा की तक़लीद को शिर्क कहते हैं, वह किसी इमामे की तक़लीद को शिर्क समझने की वजह से खुद से मसाइल निकालने की काशिश करते हैं और अपनी फ़हमे नाक़िस के मुताबिक़ अहादीस व कुरआनी आयात के ज़ाहिर को देखकर जो समझ में आता है वही अपना मौक़िफ़ बना लेते हैं फ़िरक़ये ज़ाहरिया की शुऊरी या लाशुऊरी तौर पर तक़लीद करते हैं, वह अपने सिवा चारों अइम्मा के मानने वालों को मुशरिक ठहराते हैं और खुद अइम्मये अरबआ के सिवा बेशुमार वहाबी शुयूख़ की अन्धी तक़लीद करके अपने बनाये हुए उसूल के मुताबिक़ एक नहीं बेशुमार शिर्क के दलदल में फंसे हुए हैं। उनके नज़दीक शैख़ इब्ने अब्दुल वहहाब नजदी, क़ाज़ी शौकानी, शैख़ अलबानी, इब्ने बाज़ और शैख़ सालेह उसैमीन वग़ैरह इमाम व मुजतहिदे अस्र हैं उनका हर क़ौल व अमल गिरोहे अहले हदीस के लिए नाक़ाबिले तरदीद सनद है। फिर वह अन्धी तक़लीद वाले नहीं और ग़रीब हनफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी और हम्बली ग़ैर मन्सूस फ़िक़ही मसाइल में चार अइम्मये मजाहिब की तक़लीद करने की वजह से मुशरिक हैं, आख़िर क्यों? इसलिए न कि अइम्मये अरबआ की तक़लीद करने वाले वहाबी नहीं। अगर यह वजह

नहीं तो फिर वजह क्या है। फिरक़ये अहले ह़दीस का अइम्मये अरबआ़ के मुक़ल्लेदीन को खुसूसन अह़नाफ़ को अपने तन्ज़ व तान बल्कि इनाद का निशाना बनाना और उन्हें रफ़ेयदैन करने की वजह से तारिके सुन्नत व मुख़ालिफ़ कहना उनका जुल्मे अज़ीम नही तो और क्या है?

एक ग़ैर मुक़ल्लिद आ़लिम ने ग़ौसे आज़म का ह़वाला पेश करते हुए जो लिखा है कि रफ़ेयदैन करते थे तो क्या वह यह कह सकते हैं कि इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा बल्कि कसीर सह़ाबा व ताबेईन रफ़ेयदैन न करके सुन्नत तर्क करते थे? और ग़ौसे आज़म के मुताबिक़ वह सबके सब तारिके सुन्नत थे? ग़ौसे आज़म का नाम इस्तेमाल करके दर अस्ल लोगों को धोके में डालना है। वरना ग़ैर मुक़ल्लेदीन ग़ौसे आज़म बल्कि तमाम औलियाये किराम के गुस्ताख़ हैं ओर *''या ग़ौस''* कहने को शिर्क कहते हैं। बल्कि लफ़्ज़े ग़ौस इस्तेमाल करने को भी शिर्क कहते हैं। अब अन्दाज़ा लगायें कि ग़ौसे आज़म से उनकी मह़ब्बत व अक़ीदत का क्या ह़ाल है?

दुर्रे मुख़्तार की इबारत से धोका

ग़ैर मुक़ल्लिद आ़लिम ने अपनी किताब ''सलातुर्रसूल'' में दुर्रे मुख़्तार व शामी के ह़वाले से लिखा कि ''रफ़ेयदैन से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती'' इस इबारत से यह धोका देना चाहते हैं कि बाज़ ह़नफ़ी फ़ुक़हा के नज़दीक नमाज़ में रफ़ेयदैन साबित है। ह़ालांकि साहिबे दुर्रे मुख़्तार व शामी ने यह कब लिखा है कि नमाज़ में रफ़ेयदैन करना चाहिए? उनका मौक़िफ़ तो वही है जो इमामे अबू ह़नीफ़ा का है कि नमाज़ में रफ़ेयदैन नहीं करना चाहिए। अब रही बात यह कि इससे नमाज़ फ़ासिद होगी या नही तो ज़ाहिर है कि नमाज़ मे मुफ़सिदाते नमाज़ में से कोई पाया जाए तो नमाज़ फ़ासिद होगी और इमामे आज़म के नज़दीक रफ़ेयदैन करना मुफ़सिदाते नमाज़ में से नहीं इमामे शाफ़ई रह़मतुल्लाह अ़लैह के नज़दीक रफ़ेयदैन करना चाहिए और रफ़ेयदैन न करना मुफ़सिदाते नमाज़ में से नहीं। जैसा कि इमामे मुसलिम ने बाब क़ायम फ़रमाया है *''रफ़ेयदैन का मुसतह़ब होना''* मालूम हुआ कि रफ़ेयदैन में अइम्मा के दरमियान इख़्तिलाफ़ इस्तेह़बाब में है। लेकिन मुक़ल्लेदीने मज़हब के लिए बिला दलील अपनी तबीअ़त से तक़लीदे इमामे से हटना दुरुस्त नहीं। क्योंकि यह गुमराही और नफ़्स परस्ती में गिरने का सबब है।

जैसा कि ग़ैर मुक़ल्लेदीन तर्के तक़लीद की बुनियाद पर ज़लालत में फ़से हुए हैं और तमाम अइम्मये मज़ाहिब पर तान व तशनी करते हैं। तमाम अइम्मये दीन से अलग हटकर ग़ैर मुक़ल्लेदीन रफ़ेयदैन को वाजिब या फ़र्ज़ के दर्जे में रखते हैं और रफ़ेयदैन न करने वालों को तानो तशनी का निशाना बनाते है और उन्हें गुमराह, मुख़ालिफ़े सुन्नत कहते हैं। अल्लाह इन्हें हिदायत अता फ़रमाये ।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो पर निसयान (भूलने) का इलज़ाम

बाज़ लोगों ने तअ़स्सुब की बिना पर रफ़ेयदैन न करने की सही अहादीस पर बेजा तान किया है। रफ़ेयदैन करने वाले वह लोग जो रफ़ेयदैन न करने वालों को मुनकिरीने सुन्नत के ख़ाने में डालते हैं उनके ख़िलाफ़ ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अ़न्हो की रिवायत नाक़ाबिले तरदीद हुज्जत है। उनसे इस ह़दीस का कोई जवाब नहीं बनता तो इधर उध्र की हांकने लगते हैं और ह़द यह है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो पर भूल और निसयान का इलज़ाम रखने में भी ख़ौफ़ मह़सूस नहीं करते।

उन्होंने यहां तक लिख दिया कि ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो को निसयान (भूलने का मरज़) हो गया। उन्होंने भूल से यह रिवायत ज़िक्र कर दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम तकबीरे तह़रीमा के वक़्त हाथों को उठाते थे और फिर पूरी नमाज़ में दोबारा कहीं रफ़ेयदैन नहीं करते थे। जहॉ तक निसयान का तअ़ल्लुक़ है तो किसी के लिए यह दावा नहीं किया जा सकता कि उससे निसयान नहीं हुआ। लेकिन बिला दलील किसी पर किसी मुआ़मले में निसयान का इलज़ाम रखना जुर्म है। ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम के चहीते सहाबी, ख़ास ख़ादिम, सफ़र व ह़ज़र में आप के साथ रहने वाले, हमेशा रसूले अकरम صلى الله عليه وسلم के साथ नमाज़ नमाज़ पढ़ने वाले, नमाज़ में पहली सफ़ में रहने वाले, साबेक़ीने अव्वलीन और ग़ज़वये बद्र में शरीक

होन वाले सहाबये किराम में से थे। आप उन ख़ास फुक़्हाये सहाबा में से थे जिनकी मौजूदगी में दूसरे सहाबा फ़त्वा नहीं दिया करते थे। खुलफ़ाये राशेदीन के बाद सहाबये किराम में आपसे बड़ा कोई फ़क़ीह नहीं था। ऐसे फ़क़ीह मुजतहिद सहाबीये रसूल ही हुज़ूर صلى الله عليه وسلم की नमाज़ भूल जायेंगे तो फिर कौन याद रखेगा? फिर हज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रसूले पाक صلى الله عليه وسلم की नमाज़ कोई सरसरी अंदाज़ में नहीं बता रहे हैं बल्कि पहले सहाबये किराम को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिए फ़रमाते हैं कि ''क्या मैं आप लोगों के सामने हुज़ुर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की तरह नमाज़ पढ़कर न दिखाऊँ?'' फिर नमाज़ पढ़ने में तकबीरे तहरीमा के सिवा कहीं दोनों हाथों को न उठाना बल्कि हज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का वाज़ेह लफ़्ज़ों में यह फ़रमाना कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم सिर्फ़ तकबीरे तहरीमा के वक़्त हाथों को उठाते थे और दोबारा नहीं उठाते थे, यह साबित नहीं करता कि हुज़ूर अकरम صلى الله عليه وسلم की नमाज़ यही थी कि आप सिर्फ़ तकबीरे तहरीमक के वक़्त हाथों को उठाते थे? इमामे तिरमिज़ी ने फ़रमाया कि रफ़ेसदैन न करना बहुत से सहाबा का मज़हब है तो क्या बक़ौल फ़िरक़ये अहले हदीस उन तमाम सहाबा ने भूल कर रफ़ेयदैन तर्क किया था? बाज़ रिवायात में यह जो मिलता है कि आप صلى الله عليه وسلم रुकू करते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन करते थे तो यह अमल हमेशा आप ने नहीं किया बल्कि कभी किया और फिर तर्क कर दिया। हज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जैसे फ़क़ीह मुजतहिद सहाबी पर बिला दलील निसयान का इल्ज़ाम रख देना बड़ी जुरअत की बात है। फिर यह इल्ज़ाम सिर्फ़ हज़रते इब्ने मसऊद पर ही नहीं आता बल्कि रफ़ेयदैन न करने वाले सहाबा हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़, हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रते अली, हज़रते अबू हुरैरह और हज़रते बरा इब्ने आज़िब रज़ियल्लाहो तआला अल्हुम पर आयद होगा और महज़ ज़न्नो इहतेमाल की बुनियाद पर अजिल्लये सहाबये किराम पर इस तरह का गुमान रखा जाये तो फिर शरई अहकाम का खुदा ही

हाफ़िज़! बल्कि सिरे से दीन से एतेमाद ही उठ जायेगा। ''अल्लाह की पनाह''

फ़िरक़ये अहले ह़दीस के एतेराज़ात के जवाबात

एतेराज़: एक ह़दीस शरीफ़ जिसको इमामे बुख़ारी ने अपनी किताब जुज़्ए रफ़ेयदैन में ज़िक्र किया है उससे यह साबित होता है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो जब किसी आदमी को बग़ैर रफ़ेसदैन के नमाज़ पढ़ते हुए देखते थे तो उसे कंकरी फेंककर रफ़ेयदैन करने को कहते थे। मालूम हुआ कि ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो रफ़ेयदैन करते थे।

जवाब: मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा में है कि ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो सिर्फ़ तकबीरे इफ़्तेताह़ के वक़्त हाथ उठाते थे।

रिवायत सनद के साथ यह है:

हमसे ह़दीस बयान की अबूबक्र बिन अ़य्याश ने वह रिवायत करते करते हैं हुसैन से वह मुजाहिद से कि उन्होंने फ़रमाया कि मैंने ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तअ़ला अ़न्हो को नमाज़ में तकबीरे इफ़्तेताह़ के से सिवा कहीं रफ़ेयदैन करते हुए नहीं देखा। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/214, ह़दीस 2452)

रिवायते मज़कूरा के तमाम रावी सिक़ह हैं। यह रिवायत यह साबित करती है कि ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो तकबीरे इफ़्तेताह़ के सिवा कहीं रफ़ेयदैन नहीं करते थे और दार कुत्नी की रिवायत से मालूम हुआ कि आप रफ़ेयदैन का हुक्म देते थे। तो इस तज़ाद को ख़त्म करने की सूरत यही है कि जब तक ह़ज़रते इब्ने उमर को मालूम नहीं हुआ था कि अल्लाह के रसूल ने पहले रफ़ेयदैन किया था फिर बाद में तर्क फ़रमा दिया था उस वक़्त तक ह़ज़रते इब्ने उमर रफ़ेयदैन का सख़ती से हुक्म देते रहे और जब उन्हे मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल صلى الله عليه وسلم ने रफ़ेयदैन तर्क फ़रमा दिया था (जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लहो तआ़ला अ़न्हो की सही ह़दीस से मालूम हुआ और ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की रिवायत उम्दतुल क़ारी के ह़वाले से पहले गुज़री नीज़ सही मुसलिम, अबूदाऊद वग़ैरह की रिवायत से मालूम हुआ कि

रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ में रफ़ेयदैन करने से मना फ़रमा दिया और सुकून से नमाज़ अदा करने का हुक्म दिया) जब ह़ज़रते इब्ने उमर को रफ़ेयदैन के मन्सूख़ होने का इल्म हुआ तो उन्होंने भी रफ़ेयदैन तर्क फ़रमा दिया।

एक हैरान कुन बात

इमामे बुख़ारी की किताब '' कुर्रतुलऐनैन बेरफ़इलयदैन फ़िस्सलात'' {नाशिर दारुल अरक़म लिन्नश्र वत्तौज़ी कोयत तबये अव्वल 1404 हि0}में है कि मुजाहिद ने जो यह फ़रमाया कि मैंने इब्ने उमर को तकबीरे इफ़्तेताह़ के सिवा नमाज़ में कहीं रफ़ेयदैन करते हुए नहीं देखा तो इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने भूल कर रफ़ेयदैन नहीं किया था। जैसा कि ह़ज़रते उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो नमाज़ में क़िरअत भूल गए थे। क्या तुम नहीं देखते कि ह़ज़रते इब्ने उमर रफ़ेयदैन न करने वाले को पत्थर फेंकते थे तो यह कैसे हो सकता है कि ह़ज़रत इब्ने उमर जिसका हुक्म दूसरे को देते थे वह खुद न करते और जिसे रसूलुल्लाह ﷺ को करते हुए देखा वह खुद छोड़ देते।

लीजिए अब क़िस्सा ही तमाम हो गया। अभी सह़ाबीये रसूल ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो पर निसयान का इल्ज़ाम था अब तो ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की जानिब भी ख़ता मन्सूब हो गई। अब मुख़ालेफ़ीन को बड़ी मज़बूत दलील हाथ आ गई कि जिन सह़ाबा व ताबेईन ने सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन किया और उसके अ़लावा रफ़ैयदैन करने से मना किया उन सब ने ख़ता व निसयान से ऐसा किया था। लिहाज़ा इमामे तिरमिज़ी का यह कहना ही लग़्व (बेकार) हो गया कि सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन करना बहुत से सह़ाबा व ताबेईन का मज़हब है! इफ़रातो तफ़रीत की ऐसी मिसालें जब सामने आती हैं तो सख़्त अफ़सोस भी होता है और तअ़ज्जुब भी। क़तए नज़र इससे कि 'निसयान वाले दावे' में कितनी मज़बूती है, इतनी बात तो ज़रूर साबित हो गई कि इमामे बुख़ारी के नज़दीक मुजाहिद की यह रिवायत सही है। क्योंकि उन्होंने उसकी सनद में कोई कलाम नहीं किया।

एतेराज़ात व जवाबात

एतराज़ः ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की इस ह़दीस (सात जगहों में रफ़ेयदैन करने) को ह़ज़रते नाफ़े ने रिवायत किया है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की रिवायत को मकसिम ने रिवायत किया है। शोबा ने कहा है कि मकसिम से इस ह़दीस को ह़कम ने रिवायत किया है और ह़कम ने मकसिम से सिर्फ़ चार अह़ादीस सुनी हैं जिन में यह ह़दीस नहीं और इब्ने उमर से नाफ़े ने इस तरह़ से रिवायत किया है हालांकि नाफ़े के असह़ाब ने इस के ख़िलाफ़ रिवायत किया है।

जवाबः अगरचे ह़कम के वास्ते से ह़ज़ते इब्ने अ़ब्बास रजियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की रिवायत मुरसल है लेकिन यह मुरसल सही है। अ़लावा अज़ीं ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की रिवायत को मोहद्दिस इब्ने अबी शैबा ने जिस सनद के साथ ज़िक्र किया है वह मुरसल नहीं बल्कि मुत्तसिल है। मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा की रिवायत सनद के साथ यह हैः

''हमसे हदीस इब्ने फ़ुज़ैल ने वह रिवायत करते हैं अ़ता से वह सईद इब्ने जुबैर से वह अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से उन्होंने फ़रमाया कि हाथों को सिर्फ़ सात जगहों में उठाया जायेगा, जब नमाज़ के लिये खड़ा हो, और जब ख़ानये काबा को देखे, सफ़ा व मरवा पर, अरफ़ात में, जमा में, जिमार के वक़्त।''

ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की रिवायत जो नाफ़े ने ज़िक्र की है वह इसलिए मोतबर है कि खुद ह़ज़रते इब्ने उमर का भी यही अ़मल था कि वह नमाज़ में सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन करते थे। जैसाकि मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा में ह़ज़रते मुजाहिद से मरवी है उन्होंने फ़रमाया कि मैंने ह़ज़रते इब्ने उमर को सिर्फ़ तकबीरे इफ़्तेताह़ करते हुए देखा। (मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा 1/214 ह़दीस 2452)

एतेराज़ः ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो को ग़ैर मोतबर क़रार देते हुए बाज़ लोग ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक का एक क़ौल पेश करते हैं कि उन्होंने इस ह़दीस के बारे में फ़रमाया कि

यह ह़दीस साबित नहीं। लिहाज़ा उसको रफ़ेयदैन न करने की दलील नहीं बना सकते।

जवाबः सबसे पहली बात तो यह है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ने खुद ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की जिसमें रफ़ेयदैन न करने की सराह़त है। (ह़वाला छटी सनद से साथ गुज़रा, वहाँ मुलाहज़ा कीजिए)

इसके अलावा फ़न्ने ह़दीस के तलबा को यह बात मालूम है कि कोई ह़दीस किसी मोह़द्दिस के पास साबित नहीं होती लेकिन वही ह़दीस दूसरे मोह़द्दिस के पास साबित सह़ी बल्कि ज़्यादा सह़ी होती है। अगर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की ह़दीसे मज़कूर के बारे में इब्नुलमुबारक रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने फ़रमाया है कि *"यह साबित नहीं"* तो हो सकता है कि यह क़ौल अस वक़्त का हो जब उन्हें यह ह़दीस नहीं पहुँची थी वरना इसका क्या जवाब होगा कि खुद इब्नुल मुबारक की रिवायत से ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो इमामे निसई की *'अस्सननुस्सुग़रा '* में मौजूद है और उसके सारे रावी सिक़ह हैं। इमामे अबूह़नीफ़ा रिज़यल्लाहो तआ़ला अ़न्हो जिनके शागिर्दों में इमामे अ़ब्दुल्लाह इब्नुलमुबारक हैं उनके नज़दीक तो हज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़लाह्द्द अ़न्हो की ह़दीस साबित सह़ी बल्कि सह़ीतर है। फिर अगर किसी मोह़द्दिस को कोई ह़दीस उसके मुतअ़य्यन किये हुए मेयार के मुताबिक़ न मिली और उसने उसके बारे में यह कहा कि साबित नही ंतो इससे ह़दीसे मज़कूर का ग़ैर मोतबर होना साबित नही होता और उससे यह साबित नहीं होता कि वह ह़दीस किसी मोह़द्दिस व फ़क़ीह के नज़दीक साबित नहीं।

अगर इमामे इब्नुल मुबारक के क़ौल का यह मतलब लिया जाए कि ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो किसी सनद के साथ किसी के नज़दीक साबित नही ंतो इस सवाल का क्या जवाब होगा कि इमामे तिरमिज़ी ने इस ह़दीस को ज़िक्र करने के बाद उसे ह़सन लिखा है और उन्होंने ह़दीसे मज़कूर के एक *'मुतकल्लम फ़ीह'* रावी आ़सिम बिन कुलैब की वजह से उसे दरजये ह़सन में रखा है ह़ालांकि आ़सिम बिन कुलैब से खुद

इमामे बुख़ारी *ने 'जुज़्उल क़िराअत'* में रिवायत ली है और मुसलिम ने अपनी सही में उनसे रिवायत ली है नीज़ असहाबे सुनन ने उनसे रिवायत की है। इमामे दारकुतनी ने *'सुनने दार कुतनी'* में ज़िक्रे नसखुत्ततबीक़ में आ़सिम बिन कुलैब की रिवायत ज़िक्र करने के बाद लिखा कि यह इसनाद साबित सही है, आ़सिम बिन कुलैब की रिवायत वहां सही है और तर्के रफ़ेयदैन में सही क्यों नही? ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो इमामे अबूदाऊद, इमामे निसई, इमामे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, इमामे इब्ने अबी शैबा, इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल इमामे अबुल याला अलमूसली, इमामे तह़ावी, इमामे तिबरानी, इमामे दार कुतनी, इमामे बैहक़ी, इमामे उक़ैली, इमामे इब्ने हजर अ़सक़लानी और सुफ़याने सौरी के नज़दीक साबित है अगरचे बाज़ मोह़द्देसीन ने अपने उसूल व ज़वाबित के मुताबिक़ उसे अपना मुसतदल्ल क़रार नहीं दिया। किसी मोह़द्दिस के नज़दीक किसी सनद के लिहाज़ से ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ग़ैर सही हो सकती है लेकिन इससे यह लाज़िम नहीं आता कि तमाम मोह़द्देसीन के नज़दीक ह़दीस इब्ने मसऊद रज़िल्लाहो तअ़ला अ़न्हो ग़ैर सही है। अगर आ़सिम बिन कुलैब की वजह से इस ह़दीस को ग़ैर सही कहा जाए तो इससे अह़नाफ़ पर कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता क्योंकि ह़ज़रते इमामे अबूह़नीफ़ा को यह ह़दीस जिस सनद के साथ पहुँची है उसमें आ़सिम बिन कुलैब रावी मौजूद नहीं। इमामे आज़म तक ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तअ़ला अ़न्हो के जुमला रावी सिक़ाहत, अ़दालत और ह़िफ़्ज व फ़िक़ह में बहुत आला दर्जे के हैं। यही वजह है कि इस सनद की तक़वियत की दलील के सामने औज़ाई जैसे मोह़द्दिस व फक़ीह ने ख़ामोशी इख़्तियार की थी।

इमामे अबू ह़नीफ़ा और इमामे औज़ाई का मुबाहसा

ह़ज़रते सुफ़यान बिन उऐना का बयान है कि एक मौक़े पर मक्कये मुकर्रमा में *"दारे ह़नातीन"* में अबूह़नीफ़ा और औज़ाई की मुलाक़ात हो गई तो दर्ज ज़ैल गुफ़्तगू हुईः

औज़ाईः क्या वजह है कि आप लोग रुकू करते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त हाथों को नहीं उठाते?

अबूहनीफ़ाः इस लिए कि रफ़ेयदैन करने पर कोई सही ह़दीस मौजूद नहीं।

औज़ाईः कैसे मौजूद नहीं? मुझसे जुहरी ने रिवायत की, उन्होंने सालिम से, उन्होंने अपने वालिद (अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर) से उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम से कि आंह़ज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम नमाज़ शुरू करते वक़्त, रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त हाथों को उठाते थे।

अबू हनीफ़ाः हमसे ह़दीस बयान की ह़म्माद ने, उन्होंने इब्राहीमे नख़ई से, उन्होंने अ़लक़मा और असवद से और उन्होंने ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम सिर्फ़ नमाज़ शुरू करते वक़्त हाथों को उठाते थे और पूरी नमाज़ में दोबारा नहीं उठाते थे।

औज़ाईः मैं आपके सामने (मज़बूत) सनद पेश कर रहा हूँ, जुहरी, सालिम, अब्दुल्लाह इब्ने उमर और आप उसके मुक़ाबिल में यह सनद पेया कर रहे हैं। ह़म्माद, इब्राहीम मेरी सनद के मुक़ाबले में आपकी सनद मज़बूत कहां?

अबू ह़नीफ़ाः मेरी सनद आपकी सनद से ज़्यादा मज़बूत है। मेरी सनद में ह़म्माद आपकी सनद के जुहरी से ज्यादा ह़दीस की फ़िक़ह व समझ रखने वाले हैं। मेरी सनद में इब्राहीमे नख़ई आपकी सनद के सालिम से बड़े फ़क़ीह हैं। मेरी सनद में अ़लक़मा और असवद वह भी फ़िक़ह में कम रुतबा रखने वाले नहीं और मेरी सनद में ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो तो फिर अ़ब्दुल्लाह ही हैं (उनके रुतबे को ह़ज़रते इब्ने उमर कहां पहुँच सकते?)

औज़ाईः ख़ामोश।

इमामे अबू ह़नीफ़ा और इमामे औज़ाई रहमतुल्लाहे अ़लैहिमा के मुबाहसे को यहां ज़िक्र करने का मक़सद यह है कि ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अ़न्हो ह़ज़रते इमामे औज़ाई के नज़दीक सनद के लिहाज़ से हदीसे इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के मुक़ाबले में

मज़बूत नही थी लेकिन इमामे अबूहनीफ़ा ने दलाइल से साबित किया ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो जिसमे रफ़ेयदैन न करने का हुक्म है वह ह़दीसे इब्ने उमर से कहीं ज़्यादा क़वी और मज़बूत है। तो मालूम हुआ कि जिस मोह़द्दिस व फ़क़ीह को जो ह़दीस मिलती है वह अपने उसूल व ज़वाबित के मेयार पर उसे जांचने के बाद क़बूल करता है और अपनी फ़िक्र व फ़हम के मुताबिक़ ह़दीस से मसाइल का इस्तिखराज करता है। चुनांचे इमामे औज़ाई ने अपनी सनद को बुलन्द इसनाद की बुनियाद पर क़वी क़रार दिया और इमामे अबू ह़नीफ़ा ने रावियों के तफ़क़्क़ुह की ज़्यादती की वजह से ज़्यादा क़वी क़रार दिया। अपने अपने मेयार के मुताबिक़ दोनों दुरुस्तगी पर हैं।

अगर मान लिया जाए कि ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ह़ज़रते इब्ने मुबारक के नज़दीक साबित नहीं तो इससे लाज़िम नहीं आता इमामे अबू ह़नीफ़ा व दीगर मोहद्देसीन के नज़दीक भी साबित नहीं। इब्ने ह़ज़्म के नज़दीक ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो सही है। तिरमिज़ी पर तह़क़ीक़ व तालीक़ लिखने वाले अह़मद शाकिर साह़ब लिखते हैं:

"इस ह़दीस को इब्ने ह़ज़्म वग़ैरह हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस ने सही कहा है। यह सही ह़दीस है और इसके ज़ईफ़ होने की जो इल्लत बाज़ ने ज़िक्र की है वह कोई मोतबर नहीं। (तिरमिज़ी तह़क़ीक़ व तालीक़ अह़मद शाकिर 2/41)

इसके अ़लावा इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल, दार कुत्नी , इब्ने क़त्तान, इब्ने दक़ीकुलईद मालिकी, इब्ने तैमिया ह़म्बली और इमामे निसई के नज़दीक भी यह ह़दीस सही है यहां तक कि ग़ैर मुक़ल्लिद आ़लिम शैख़ अलबानी के नज़दीक भी सही है। (कश्फ़ुल मोज़लात प्र0 179)

एतराज़: ह़दीसे बरा इब्ने आ़जिब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की सनद में एक रावी यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ज़ईफ़ हैं इस लिए यह ह़दीस नाक़ाबिले इस्तिदलाल है।

जवाब: इसके जवाब में यह कहा जायेगा कि यज़ीद इब्ने अबी ज़ियाद मुख़तलफ़ फ़ीह रावी हैं। बाज़ नाक़ेदीने ह़दीस ने उन्हें ह़ाफ़िज़ा

के लिहाज़ से ज़ईफ़ कहा है और बाज़ ने उन्हें सिक़ह, सबत, जाइजुल ह़दीस कहा है।

इमामे अ़जली ने फ़रमायाः यज़ीद बिन अबी ज़ियाद कूफ़ी सिक़ह जाइजुल ह़दीस हैं। (मारेफ़तुस्सिक़ात लिलअ़जली 2/342)

इब्ने शाहीन ने उन्हें सिक़ात में ज़िक्र किया है। (अस्सिक़ात रक़म 1561)

अह़मद इब्ने सालेह़ ने उन्हें सिक़ह कहा।

अ़ली इब्ने आ़सिम कहते हैं कि इमामे शोबा ने मुझे कहा कि जब मैं यज़ीद बिन अबी ज़ियाद से ह़दीस लिख लूं और किसी और से न लिखूं तो मुझे कोई परवाह नहीं। (रिजालुल मुंज़िरी मअ़त्तरग़ीब 4/362)

अबू दाऊद ने उन्हें सबत फ़रमाया।

इब्ने खुज़ैमा ने उनसे अपनी सही में रिवायत ली।

इमामे मुसलिम ने अनकी रिवायत को अपनी सही में ज़िक्र किया।

इमामे बुख़ारी ने शवाहिद में ज़िक्र किया। (अलबिनाया 2/296)

और बाज़ मोह़द्देसीन के बक़ौल इस सनद को ज़ईफ़ मान भी लिया जाए तो अह़नाफ़ के लिए कुछ नुक़सान देय नहीं। क्योंकि इमामे अबूह़नीफ़ा रह़मतुललाहे अ़लैह को जिस सनद के साथ यह रिवायत मिली है उसमें यज़ीद बिन अबी ज़ियाद मौजूद नहीं। इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैह ने इसको आ़मिर शाबी से रिवायत किया है और आ़मिर शाबी जमहूर मोह़द्देसीन के नज़दीक सिक़ह फ़क़ीह हैं। इमामे मकहूल ने उन्हे अपने ज़माने का इब्ने अ़ब्बास क़रार दिया है। उन्होंने डेढ़ सौ सह़ाबये किराम से मुलाक़ात की थी लिहाज़ा ह़दीसे बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो इमामे अबूह़नीफ़ा के आला दरजे की सही है।

एतेराज़ः अहले ह़दीस ह़ज़रात अह़नाफ़ पर एतेराज़ करते हुए यह कहते हैं कि ह़दीसे जाबिर इब्ने समुरह रज़ियल्लाहे तआ़ला अ़न्हो रुकू में जाते और रुकू से उठते वक़्त रफ़ैयदन करने से मना की दलील नहीं बल्कि इसमें सलाम के वक़्त हाथ उठाने से मना किया गया है। जैसा कि ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की बाज़ रिवायात में साफ़

अलफ़ाज़ में मौजूद है कि हम नमाज़ में जब सलाम फेरते थे तो हाथों को उठाकर अस्सलामो अ़लैकुम कहा करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने हमें ऐसा करते हुए देखा तो उससे मना फ़रमाया और कहा कि क्या बात है तुम सलाम के वक़्त अपने हाथों को इस तरह उठाते हो कि वह बेक़रार घोड़ों की दुम हों। मालूम हुआ कि ह़दीसे मज़कूर को अह़नाफ़ रुकू से पहले और रुकू के बाद रफ़ेयदैन न करने के सुबूत में पेश नहीं करते।

जवाबः क़ारेईने किराम को मालूम हो कि कभी कोई ह़दीस एक ही रावी से मुख्तलिफ़ अलफ़ाज़ के साथ मरवी होती है और कभी कुछ अलफ़ाज़ के इत्तेह़ाद के साथ मुतअ़द्दिद कुतुबे अह़ादीस में मुख्तलिफ़ अबवाब के तह़त मज़कूर होती है। कभी ऐसा होता है कि एक ही रावी की रिवायत की हुई दो ह़दीसें कुछ लफ़्ज़ी इश्तिराक की बुनियाद पर सरसरी नज़र में एक ही मौक़ा और मह़ल की मालूम होती हैं ह़ालांकि वह मुतअ़द्दिद मवाक़े की होती हैं इसकी कई मिसालें कुतुबे अह़ादीस में मिल जायेंगी। ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की ह़दीस *'लैलतुलजिन्न'* इसकी एक मिसाल है।

ह़दीसे जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की ह़ालत भी ऐसी ही है। मोह़द्दिस इमामे अ़ली क़ारी फ़रमाते हैं कि ज़ाहिर यह है कि ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह की ह़दीस दो मौक़ों सें मुतअ़ल्लिक़ है। (मिरक़ात 1/498) सलाम के मौक़े पर रफ़ेयदैन न करना और तह़रीमा के सिवा तमाम मवाक़े पर रफ़ेयदैन न करना बल्कि सुकून इख्तियार करना जैसा कि *''अपनी नमाजों में सकून इख्तियार करो'* के अलफ़ाज़ यह बताते हैं। ह़दीसे जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो सलाम की क़ैद के बग़ैर 14 कुतुबे अह़ादीस में और सलाम की क़ैद के साथ दो कुतुबे अह़दीस में है। जैसा कि गुज़िश्ता सफ़ह़ात में इसकी तफ़सील ज़िक्र की गई।

एतेराज़ः ह़ज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के असर पर यह एतेराज़ किया जाता है कि यह ज़ईफ़ है क्योंकि इसकी सनद में मोह़म्मद बिन जाबिर जईफ़ हैं और उन्होंने ही इस असर को

ह़म्माद से मरफ़ूअ़न रिवायत किया है और ह़म्माद के अ़लावा दीगर लोगों ने इसे इब्राहीमे नख़ई से रिवायत किया है तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से मौकूफ़न रिवायत किया है। लिहाज़ा इस असर को रफ़ेयदैन न करने पर दलील नहीं बना सकते।

जवाबः इमामे दार कुत्नी ने इसकी सनद यह ज़िक्र की हैः ''मोह़म्मद बिन जाबिर ह़म्माद से वह इब्राहीम से वह अ़लक़मा से वह अ़ब्दुल्लाह से (उन्होंने) कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी आखिर ह़दीस तक''

पहली बात तो यह कि इस असर की रिवायत में मोह़म्मद बिन जाबिर तन्हा नहीं अल्कि ह़म्माद अ़न इब्रीम की सनद से इमामे अबू ह़नीफ़ा ने भी रिवायत किया है। (किताबुल आसार इमामे मोह़म्मद)

दूसरी बात यह है कि अगर मोह़म्मद बिन जाबिर को इस रिवायत में तन्हा मान भी लिया जाए तो उसकी वजह से रफ़ेयदैन न करने में यह नाक़ाबेले हुज्जत न होगी क्योंकि उनकी रिवायत सिक़ह रावी के ख़िलाफ़ नहीं। इसके अ़लावा ह़दीसे इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो इमामे अबू ह़नीफ़ा के नज़दीक बहुत सही है यहां तक कि माज़ी क़रीब के अहले ह़दीस के आ़लिम शैख़ अलबानी के नज़दीक भी सही है। हवाला पहले गुज़रा।

अगर मोह़म्मद बिन जाबिर की वजह से इस सनद को ज़ईफ़ माना जाए तो भी नाकाबिले हुज्जत नहीं क्योंकि कोई सिक़ह रावी मोह़म्मद बिन जाबिर के ख़िलाफ़ रफ़ेयदैन करने का ज़िक्र करते तो सिक़ह की मुख़ालफ़त की वजह से यह रिवायत नाक़ाबिले हुज्जत होती और अगर मान लिया जाए कि यह रिवायत ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो पर मौकूफ़ मुरसल सही है तो भी ह़दीस मौकूफ़ मुरसल सही हुज्जत होती है और जब मौकूफ़ ह़दीस में जो हुक़्त मज़कूर हो वह ग़ैर माकूल व ग़ैर क़यासी हो तो वह ह़दीसे मरफ़ू के हुक्म में होती है। कोई सह़ाबीये रसूल अपनी राय से रफ़यदैन तर्क नहीं कर सकते थे क्योंकि रफ़ेयदैन के सुबूत पर अह़ादीस भी मौजूद हैं। तो मालूम हुआ कि ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद को यह रिवायत मिल चुकी थी कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने पहले नमाज़ में रफ़ैयदैन किया लेकिन बाद में छोड़ दिया जैसा कि दूसरी सही रिवायत में सराहत है कि ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने बयान फ़रमाया कि अल्लाहे के रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ में तकबीरे तह़रीमा के सिवा कहीं रफ़यदैन नहीं होता था। ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने सह़ाबये किराम से यह फ़रमाया कि मैं तुमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ पढ़कर बता रहा हूँ। इससे यह पता चला कि ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहे वसल्लम को एक बार नहीं बल्कि बारहा रफ़ेयदैन न करते हुए देखा था। वरना यह कैसे कहा जा सकता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने आ़खिरी उम्र तक नमाज़ में रफ़ेयदैन किया लेकिन ह़ज़रते इब्ने मसऊद और कसीर सह़ाबये किराम रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हुम ने अपनी राय से इसे छोड़ दिया।

अहले ह़दीस के कहने के मुताबिक़ अगर रफ़ेयदैन न करना ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो का अपना फेल हो तो यह कहना दुरुस्त होगा कि उन्होंने नमाज़ में रफयदैन न करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के फेल की मुख़ालफ़त की थी। और यही नहीं बल्कि इस फेल के मुरतकिब ह़ज़रते अबूबक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म, ह़ज़रते अ़ली और ह़ज़रते अ़ब्बाद इबने ज़ुबैर वग़ैरह सह़ाबये किराम भी थे और उन्होंने इस फेल से उन्हें रोका। क्या अहले ह़दीस के नज़दीक यह सह़ाबये किराम नमाज़ में रफ़ेयदैन न करके रसूलुल्लहा सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की सुन्नत के मुख़ालिफ़ हुए।

एतेराजः ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के बारे में अह़नाफ़ यह जो कहते हैं कि वह रफ़ेयदैन नहीं करते थे वह ग़लत है। क्योंकि सही बुख़ारी में है कि ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो रुकू में जाते और रुकू से उठते वक़्त रफ़यदैन करते थे।

जवाबः ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से तीन क़िस्म की रिवायात मनकूल हैं। (1) तकबीरे तह़रीमा के अ़लावा रुकू में जाते

और रुकू से उठते वक़्त रफ़यदैन करना (2) रुकू में जाते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त और दो रकअ़त पूरी करके उठते वक़्त रफयदैन करना (3) सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन करना।

सही बुख़ारी ह़दीस 735 में रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन करना मनकूल है और सही बुख़ारी ह़दीस 739 में रुकू में जाते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त और दो रकअ़त से खड़े होते वक़्त रफ़ेयदैन करना मनकूल है।

मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा ह़दीस 2452 में ह़ज़रते मुजाहिद से मरवी है कि ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो तकबीरे तह़रीमा के सिवा पूरी नमाज़ में रफ़ेयदैन नहीं करते थे।

अह़ादीस से इस्तिखराजे मसाइल का एक उसूल यह भी है कि अगर किसी रावी से किसी मसअले में रिवायात मुख्तलिफ़ मनकूल हों तो एक रिवायत को दूसरी रिवायत पर तरजीह़ देने की एक सूरत यह भी है कि रावी का अपना अ़मल देखा जायेगा, उसके अ़मल की बुनियाद पर उसकी किसी रिवायत को तरजीह़ दी जायेगी। हम यह देखते हैं कि ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से रफ़ेयदैन के तअ़ल्लुक़ से मुख्तलिफ़ रिवायात मनकूल हैं।

एक रिवायत में है कि रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन करना और दूसरी रिवायत में है दो रकअ़त पर उठते वक़्त भी रफ़ेयदैन करना, इन दोनों रिवायतों को उन्होंने हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम की तरफ़ मन्सूब किया है लेकिन खुद उनका अ़मल यह था कि वह सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन करते थे। जैसा कि इमामे बुख़ारी ने *'जुज़ए रफ़ेयदैन'* में इसको नक़्ल फ़रमाया है और उसकी सनद पर कोई कलाम नहीं किया है। ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो का खुद रफ़ेयदैन न करना इस बात की दलील है कि उनके नज़दीक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की वह ह़दीस जिसमें रफ़ेयदैन न करने का ज़िक्र है राजेह़ है।

मोहद्दिसो मुजतहिद इमामे तहावी {मौतः 321 हि0} ने फ़रमाया कि ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो का रफ़ेयदैन न करना इस बात की दलील है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को देखा था कि आपने रफ़ेयदैन छोड़ दिया था लिहाज़ा यह रफ़ेयदैन के मन्सूख होने की दलील है। (मुश्किलुल आसार 10/35)

मोहद्दिसो फ़क़ीह इमामे मोह़म्मद {मौतः 189 हि0} ने अपनी मोतबर सनद के साथ ह़ज़रते इब्ने उमर का अ़मल नक़्ल फ़रमायाः

ह़ज़रते अब्दुल अ़ज़ीज़ इब्ने ह़कीम ने फ़रमाया कि मैंने ह़ज़रते इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो को देखा आप नमाज़ में सिर्फ़ तकबीरे इफ्तेताह़ के वक़्त दोनों हाथों को कानों की लौ तक उठाते थे और उसके अ़लावा नमाज़ में कहीं नहीं उठाते थे। (अलहुज्जत अला अहलिल मदीना 1/96)

एतेराज़ः तेईसवीं ह़दीस से यह जो साबित किया गया कि अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का तरीक़ा सह़ाबये किराम की एक जमाअ़त के सामने बयान किया तो उसमें रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन का ज़िक्र नहीं किया, इससे रफ़ेयदैन न करना साबित नहीं हो सकता, क्योंकि अबू हुमैद साइदी की यही ह़दीस सही इब्ने हिब्बान में है तो उसमें रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन करने का ज़िक्र है।

जवाबः ह़ज़रते अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की ह़दीस जो सही बुख़ारी में है उसमें रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन का ज़िक्र नहीं लेकिन सही इब्ने ह़िब्बान में रफ़ेयदैन का ज़िक्र है। अब हम अहले ह़दीस के उलमा से पूछते हैं कि सही इब्ने ह़िब्बान और सही बुख़ारी का तक़ाबुल हो तो बुख़ारी की ह़दीस को तरजीह़ दी जायेगी या सही इब्ने ह़िब्बान की ह़दीस को। जब अपने मतलब की बात सही बुख़ारी में मिलती है तो पूरी अहले ह़दीस बरादरी गले फाड़–फाड़ कर कहती है कि अल्लाह की किताब के बाद सबसे सही किताब बुख़ारी है और जब मतलब के ख़िलाफ़ कोई चीज़

हो तो उसे बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर देते हैं, सही बुख़ारी के तअ़ल्लुक़ से यह दोहरा मेयार क्यों?

एतेराज़ः इमामे बुख़ारी ने रफ़ेयदैन को सही अहादीस से साबित किया है लिहाज़ा उसको मानना ज़रूरी है। उसको न मानना सही ह़दीस का इनकार करना है।

जवाबः यह सवाल ग़ैर इल्मी है। इसका एक जवाब इल्ज़ामी है और दूसरा जवाब तह़क़ीक़ी। इल्ज़ामी जवाब यह है कि अगर इमामे बुख़ारी के नज़दीक रफ़ेयदैन सही अहादीस से साबित है इसलिए रफ़ेयदैन करना हर शख़्स के लिए ज़रूरी है तो इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ इमामे हुमैदी ने भी रफ़ेयदैन न करने की ह़दीस को ह़ज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की सही सनद के साथ मुसनदे हुमैदी में ज़िक्र किया है। क्या वजह है कि एक बात पर सही ह़दीस इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ इमामे हुमैदी पेश करें तो मानना ज़रूरी न हो और उसके खिलाफ़ पर इमामे बुख़ारी सही ह़दीस पेश करें तो उसको मानना ज़रूरी हो? ह़ालाकि खुद ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मौलाना अ़ब्दुर्रह़मान मुबारकपुरी लिखते हैं कि इमामे बुख़ारी जब कोई ह़दीस अपने उस्ताज़ इमामे हुमैदी से पाते थे तो इधर उधर जाने की ज़रूरत मह़सूस नहीं करते थे। (तोह़फ़तुल अह़वज़ी 3/269)

तह़क़ीक़ी जवाब यह है कि इमामे बुख़ारी को सही सनद के साथ रफ़ेयदैन की ह़दीस मिली इसलिए वह रफ़ेयदैन के क़ायल हुए लेकिन इमामे अबू ह़नीफ़ा को इमामे बुख़ारी की सनद से ज़्यादा सही सनद के साथ रफ़ेयदैन न करने ह़दीस मिली इसलिए उन्होंने रफ़ेयदैन न करने का क़ौल किया। फिर इमामे बुख़ारी न ताबेई थे न तबये ताबेई। आपकी वफ़ात 256 में हुई। इमामे अबूह़नीफ़ा ताबेई थे उनकी वफ़ात 150 हि0 में हुई। इमामे बुख़ारी 194 हि0 में पैदा हुए और इमामे अबूह़नीफ़ा 80 हि0 में पैदा हुए। इमामे बुख़ारी इमामे अबूह़नीफ़ा के 44 साल के बाद पैदा हुए। इमामे अबू ह़नीफ़ा ने रफ़ेयदैन न करने की ह़दीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम से सिर्फ़ एक वास्ता सह़ाबीये रसूल ह़ज़रते बरा इब्ने आ़ज़िब रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से सुनी और इमामे बुख़ारी

की कोई ह़दीस रफ़ेयदैन की ऐसी नहीं जो उन्होंने सिर्फ़ एक वास्ते से किसी सह़ाबी से सुनी हो। लिहाज़ा इमामे अबू ह़नीफ़ा की ह़दीस ज़्यादा सही है उसके मुक़ाबले में कम दर्जे की सही ह़दीस पर अ़मल करवाने की ज़िद करना कौनसा उसूल है?

एतेराजः ह़ज़रते वाइल इब्ने हजर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की ह़दीस में है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो आपने रुकू करते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन किया।

जवाबः सबसे पहली बात तो यह है कि ह़ज़रते वाइल इब्ने हजर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के मुक़ाबिले में ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की ह़दीस राजेह़ है। क्योंकि इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो फ़ुक़हाये सह़ाबा में से थे और ह़ज़रते वाइल इब्ने हजर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से ज़्यादा ह़ज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ल अ़न्हो ने नबीये करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ का मुशाहदा फ़रमाया था। आप सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम के साथ ज़्यादा नमाजें अदा फ़रमाईं थीं।

दूसरी बात यह है कि अगर ह़ज़रते वाइल इब्ने हजर रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की रिवायत की बुनियाद पर मुख़तलफ़ फ़ीह रफ़ेयदैन को ज़रूरी मान लिया जाए तो वह सह़ाबये किराम जिनमें खुल्फ़ाये राशेदीन भी हैं जिन्होंने रफ़ेयदैन नहीं किया वह सब बक़ौले अहले हदीस मुख़ालिफ़े सुन्नत थे। जो इल्ज़ाम फ़िरक़ये अहले ह़दीस का अह़नाफ़ पर है उसकी ज़द में तो फ़ुक़हाए किराम आ जाते हैं। इसका उनके पास क्या जवाब है? कुछ बईद नहीं कि वह यह कह दें कि हम उन सह़ाबा की बात नहीं मानते। फ़क़ीर राक़िम का अपना मुशाहदा है कि कई ऐसे अहले ह़दीस अंग्रेज़ीदां नौजवान मिले जिन्होंने बड़ी बेबाकी के साथ यह कह दिया कि शैख़! उन सहाबा का यह अ़मल सुन्नत के ख़िलाफ़ है इसलिए हम उसको नहीं मानते। दर अस्ल यह बोल उन नादान नो जवानों का नहीं बल्कि उन शुयूख़े वहाबिया का है जिनकी गुमराही के जाल में यह नौ जवान फ़ंसे हुए होते हैं और जिनकी खुफ़िया पिलानिंग

ह़दीस की आड़ में मुनकिरीने ह़दीस की एक टोली तय्यार करना है ताकि इस्लाम के ख़िलाफ़ मग़रिबी साज़िश को कामयाब बनाया जा सके।

एतेराजः ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्ल्म जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े हुए तो तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़ेयदैन किया और रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन किया।

जवाबः अह़नाफ़ ने कभी यह नहीं कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्ल्म से रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन की कोई रिवायत मनकूल नहीं, अह़नाफ़ का कहना यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम की यह सुन्नते दायमा मोह़कमा नहीं रही क्योंकि जिन सह़ाबये किराम से रफ़ेयदैन की रिवायत मनकूल है उनसे रफ़ेयदैन न करने की रिवायत भी मनकूल है। बल्कि बाज़ सह़ाबा से सिर्फ़ तर्के रफ़ेयदैन की रिवयात मनकूल है। अह़नाफ़ के नज़दीक तकबीरे तह़रीमा वाला रफ़ेयदैन इत्तेफ़ाक़ी है और उसके अ़लावा रफ़ेयदैन इख्तेलाफ़ी है। सिर्फ़ रुकू करते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन करने पर सही ह़दीस नहीं आई है बल्कि बाज़ सही ह़दीस में हर तकबीर के वक़्त बाज़ में दो सजदों के दरमियान और बाज़ में दो रकअ़त से उठते वक़्त भी रफ़ेयदैन करना साबित है। तो क्या दो सजदों के दरमियान भी रफ़ेयदैन करना सुन्नत है? अगर है तो अहले ह़दीस इस पर अ़मल क्यों नहीं करते? अगर ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की इस रिवायत से रफ़ेयदैन को हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम की सुन्नते दाइमा माना जाए तो इसका क्या जवाब है कि खुद ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो और आपके असह़ाब तकबीरे तह़रीमा के सिवा कहीं रफ़ेयदैन नहीं करते थे? जैसा कि गुज़िश्ता सफ़ह़ात में मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा, इमामे मालिक और मोअत्ता इमामे मोह़म्मद के ह़वाले से गुज़रा। यह कैसे हो सकता है कि ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो रफ़ेयदैन को हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम की सुन्नते दाइमा समझते हों और फिर खुद ही उसके ख़िलाफ़ अ़मल किया हो? ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो का अपनी रिवायत के ख़िलाफ़ खुद अ़मल करना इस रिवायत के मरजूह़ व मन्सूख़ होने को साबित करता है।

ग़लत फ़हमियों का इज़ाला

पहली ग़लत फ़हमीः इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा रहमतुल्लाहे तआ़ला अ़लैहे का क़ौल है *"जब सही ह़दीस मेरे मज़हब के ख़िलाफ़ हो तो मेरे मज़हब को छोड़ दो और सही ह़दीस पर अ़मल करो"* इससे मालूम हुआ कि इमामे अबू ह़नीफ़ा के जो अक़वाल सही ह़दीस के ख़िलाफ़ हैं उन्हें छोड़ दिया जाऐ। जैसाकि नमाज़ में रुकू में जाते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त और तीसरी रकअ़त के लिए उठने के बाद दोनों हाथों को उठाना सही ह़दीस से साबित है, और इमामे अबू ह़नीफ़ा का क़ौल है कि सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा के वक़्त दोनों हाथों को उठाया जाए और पूरी नमाज़ में कहीं पर न उठाया जाए। यह क़ौल सही ह़दीस के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा उसको छोड़ देना चाहिए और सही ह़दीस पर अ़मल करते हुए रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त दोनों हाथों को उठाना चाहिए।

ग़लत फ़हमी का इज़ालाः *"जब सही ह़दीस मेरे मज़हब के ख़िलाफ़ मिल जाए तो सही ह़दीस पर अ़मल करो"* यह क़ौल सिर्फ़ इमामे अबूह़नीफ़ा का नहीं बल्कि सारे अइम्मये मुजतहेदीन इमामे मालिक व इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल का भी है। बल्कि हर मुसलमान यही कहेगा कि चाहे कोई कितना बड़ आदमी क्यों न हो अगर उसकी बात सही ह़दीस के ख़िलाफ़ हो तो वह नामक़बूल होगी और सही ह़दीस पर अ़मल होगा। लेकिन किसी इमामे मुजतहिद फ़क़ीह के तअ़ल्लुक़ से यह बात कहना कि फ़ुलां मुजतहिद की बात सही ह़दीस के ख़िलाफ़ है किसका ह़क़ है? क्या हर कसो नाकस हर पढ़ा लिखा और अनपढ़ को यह ह़क़ ह़ासिल है कि वह किसी इमामे व मुजतहिद की किसी बात को सही ह़दीस के ख़िलाफ़ पाकर उसे रद्द कर दे और यह कहता फिरे कि फ़ुलां इमामे की फ़ुलां बात सही ह़दीस के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा इसकी बात न मानो बल्कि सही ह़दीस मानो और अहले ह़दीस (वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिद) बन जाओ? आजकल ऐसा ही देखने को मिल रहा है। अहले ह़दीस के गिरोह का हर ऐरा ग़ैरा यह कहता हुआ नज़र आता है कि रुकू में जाते वक़्त, रुकू से उठते वक़्त और तीसरी रकअ़त के लिए उठने

के बाद रफ़ेयदैन करना बुख़ारी की सही ह़दीस से साबित है और इमामे अबू ह़नीफ़ा कहते हैं रफ़ेयदैन नहीं करना है, उनका क़ौल सही ह़दीस के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा उसको छोड़ना ज़रूरी है।

जब किसी इमामे का क़ौल सही ह़दीस के ख़िलाफ़ नज़र आए तो आ़मी ग़ैर मुजतहिद का यह यक़ीन कर लेना ग़लत है कि वह वाक़ेअ़तन सही सही ह़दीस के ख़िलाफ़ और नाक़ाबिले अ़मल है। यह मन्सब इमामे मुजतहिद फ़क़ीह का है, यह वही कह सकता है कि फुलां इमामे का क़ौल सही ह़दीस के ख़िलाफ़ है, लिहाज़ा वह नाक़ाबिले क़बूल है। क्योंकि कोई क़ौल किसी एक सही ह़दीस के ख़िलाफ़ हो तो इससे यह लाज़िम नहीं आता कि कोई दूसरी सही ह़दीस उस क़ौल की ताईद में मौजूद नहीं। फिर यह ज़रूरी नहीं कि हर सही ह़दीस क़ाबिले अ़मल हो। क्योंकि किसी सही ह़दीस की कोई दूसरी सही ह़दीस मुआ़रिज़ हो और दूसरी सही ह़दीस इमामे मुजतहिद के नज़दीक अ़मल के लिहाज़ से राजेह़ हो या कोई सही ह़दीस उसके लिए नासिख़ हो। या किसी ही ह़दीस में कोई इल्लते ख़फ़िय्या (पोशीदा वजह) हो जिसकी वजह से वह क़ाबिले अ़मल न हो और इमामे मुजतहिद ने उस सही ह़दीस के ख़िलाफ़ क़ौल किया हो तो ऐसी सूरत में कौले इमाम बज़ाहिर एक सही ह़दीस के ख़िलाफ़ होता है लेकिन दर ह़क़ीक़त वह दूसरी राजेह़ सही हदीस के मुवाफ़िक़ होता है या क़ौले इमाम के मुक़ाबिले में कोई मुआ़रिज़ ह़दीसे सही गो सनदन सही होती है लेकिन क़र्ने अव्वल ही से वह मामूलबेही नहीं होती। यानी शूरू ज़माने ही से उस पर अ़मल जारी नहीं। इसकी बहुत सी मिसालें कुतुबे फ़िक़हो उसूल में मौजूद हैं।

इमामे अबू ह़नीफ़ा का तर्क रफ़ेयदैन का क़ौल सही और राजेह़ अह़ादीस व आसार पर मबनी है। चुनांचे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है जिसकी तख़रीज इमामे अबू दाऊद ने की हैः हमसे ह़दीस बयान की उसमान इब्ने अबी शैबा ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान की वकी ने वह सुफ़यान से वह आ़सिम यानी इब्ने कुलैब से वह अ़ब्दुर्रह़मान बिन असवद से वह अ़लक़मा से उन्होंने (अलक़मा) ने कहा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद

रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की नमाज़ न पढ़ाऊँ? फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ी तो हाथों को सिर्फ़ एक मरतबा उठाय। (सुनने अबी दाऊद, उन लोगों का बाब जिन्होंने रुकू के वक़्त रफ़ेयदैन का ज़िक्र नहीं किया ह़दीस 748) यह ह़दीस मुसनदे अबू ह़नीफ़ा, अस्सुननुल कुबरा लिलबैहक़ी, अस्सुननुल कुबरा लिन्नसई, मुसनदे अबुल याला अलमूसली, सुनने तिरमिज़ी, अस्सुननुस्सुग़रा लिन्नसई, मुख़तसुर अह़काम लित्तूसी, मुसनदे अह़मद इब्ने ह़म्बल और मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा में भी मौजूद है। इस ह़दीस की तख़रीज दर्ज ज़ैल कुतुब में भी की गई है।

1. इतह़ाफुल ख़ैरुतिल मेहरा बेज़वायदिल मसानीदिल अ़शरह लिलकनानी अश्शाफ़ेई (मौतः 840 हि0)
2. इतह़ाफुल मेहरा लेइब्ने ह़जर, अतराफुल मुसनद अलमुतअ़ल्ली बेअतराफ़िल मुसनद अलह़म्बली लेइब्ने हजर।
3. अल बदरुल मुनीर फ़ी तख़रीजिल अह़ादीस वल आसार अलावाक़ेअते फ़ी शरह़िल कबीर लेइब्निल मुलक़्क़न।
4. अत्तह़क़ीक़ फ़ी मसाइलिल ख़िलाफ़ लेइब्ने जौज़ी।
5. अत्तलख़ीसुल ख़बीर लेइब्ने हजर।
6. अलजौहरुन्नक़ी अ़ला सुननुल बैहक़ी लेइब्ने अत्तुरकमानी।
7. अद्दिराया फ़ी तख़रीजे अह़ादीसिद्दिराया।
8. अमतालेबुल आलिया बेज़वायेदिल मसानीदिस्समानिया लेइब्ने हजर।
9. तोह़फ़तुल अशराफ़ बेमारेफ़तिल अतराफ़ लिलमुज़ी।
10. तखरीजे अहादीसे एह़याइल उलूम लिज़्ज़ुबैदी।
11. तऩक़ीहुत्तह़क़ीक़ फ़ी अह़ादीसित्तालीक़ लेइब्ने अ़ब्दिल हादी अलह़म्बली।
12. तनक़ीहुत्तह़क़ीक़ लिज़्ज़हबी।
13. ज़ैलुलक़ौलिल मुसद्दद फ़िज़्ज़ब्ब अ़निलमुसनद अह़मद लिलक़ाज़ी फ़िलमुलकिल मदरासी अलहिन्दी अश्शफ़ेई।
14. कन्जुल उ़म्माल लेअ़ली मुत्तक़ी अलहिन्द।
15. नसबुर्राया लिलवैलई।

हुक्मे ह़दीसः इमामे अबूहनीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैहे के नज़दीक यह ह़दीस आला दर्जे की सही है। इसके तमाम रावी सिक़ह, आ़दिल, हिफ्ज़ो इतक़ान वाले हैं इब्ने हज़म ने भी इस ह़दीस को सही कहा और इमामे तिरमिज़ी ने अपनी सनद के साथ इसे ह़सन कहा, इब्ने दक़ीकुलईद, ज़ैलई और इब्ने अत्तरकमानी ने ह़दीसे मज़कूर को क़वी कहा है और ग़ैर मुक़ल्लेदीन के इमामे शैख़ नासिरुद्दीन अलबानी ने भी इसको हाशिये अबूदाऊद व तिरमिज़ी में लिखा है कि *''हक़ यह कि वह ह़दीसे सही है''* ग़ैर मुक़ल्लेदीने ज़माना इस पर एतेराज़ात करते हैं इंशा अल्लाह अगले सफ़ह़ात में उसके जवाबात दिये जायेंगे।

क़ारेईने किराम! मिसाले मज़कूर को ज़िक्र करने क मक़सद यह है कि कभी ऐसा होता है कि इमामे मुजतहिद का मज़हब बज़ाहिर किसी ह़दीस के ख़िलाफ़ मालूम होता है लेकिन दर ह़क़ीक़त उस क़ौल की पुश्त पर दूसरी राजेह़ व क़वी ह़दीस मोजूद होती है। लेकिन उसको आ़म आ़लिम या मामूली पढ़ा लिखा आदमी समझ नहीं पाता। यही वजह है कि हर ऐरे ग़ैरे ग़ैर मुजतहिद आ़लिम को यह ह़क़ नहीं पहुंचता कि वह अइम्मये दीन व फ़ुक़हाए उम्मत के अक़वाल को अह़ादीसे सह़ीह़ा के ख़िलाफ़ क़रार दे।

मोह़क़्क़िक़ शैख़ अव्वामा अपना एक वाक़ेआ तह़रीर करते हैं जो दौरे ह़ाज़िर के ग़ैर मुक़ल्लेदीन के लिए दर्से इबरत व चश्म कुशा हैः

''मेरे पास एक नौजवान आया। वह हमारे शहर 'हल्ब' के किसी कपड़े के कारख़ाने में मैकेनिक था। वह जाड़े की लम्बी रात में बाद नमाज़े इशा आया और बारह बजे तक रहा, वह सरदी से कॉप रहा था, और मुझसे बात कर रहा थां। उसके साथ इतनी लम्बी गुफ्तुगू करने के बाद भी मैं उसे किसी नतीजे पर नहीं पहुँचा सका। क्योंकि वह एक जाहिल आदमी था। कोई इल्मी ज़ाब्ता उसकी समझ से बाहर था। अगर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अपनी ज़िम्मेदारी से मुतअ़ल्लिक़ जवाबदेही का एह़सास न होता तो मैं उससे इतनी लम्बी देर तक गुफ्तुगू नहीं करता।''

उस आदमी के हाथ में एक काग़ज़ था जिस पर सही मुसलिम की एक ह़दीस लिखी हुई थी। वह ह़दीस थी ऊँट का गोश्त खाकर वुज़ू के वाजिब होने के सिलसिले में। नीज़ उसमें इमामे नौवी के ह़वाले से यह लिखा था कि सही ह़दीस अगर मज़हब के ख़िलाफ़ हो तो उस पर अ़मल किया जायेगा और यही बात इब्नुल हुमाम और अ़ब्दुल हय्य लखनवी के ह़वाले से लिखी हुई थी।

फ़ैक्टरी का वह 'मुलाज़िम आ़लिम' इमामे अबू ह़नीफ़ा और इमामे शाफ़ेई पर यह इल्ज़ाम रख रहा था कि जब दोनों इमामों ने यह फ़रमाया है कि सही ह़दीस मिल जाए तो वही हमारा मज़हब है तो सही ह़दीस से साबित है कि ऊँट का गोश्त खाकर वुज़ू करना ज़रूरी है, लिहाज़ा इमामे अबू ह़नीफ़ा और इमामे शाफ़ेई का मज़हब यह होना चाहिए कि ऊँट का गोश्त खाकर वुज़ू करना वाजिब है क्योंकि सही ह़दीस से साबित है। हालांकि उस मुलाज़िम के मबलग़े इल्म का ह़ाल यह था कि वह मेरे सामने इब्नुलहुमाम को इब्नुलहमाम और लखनवी को लकन्वी पढ़ रहा था।

क़ारेईने किराम! ख़ुदा के वास्ते ज़रा बताएं कि क्या इस तरह़ के जाहिल लोग जो अपने आप को मुजतहिद समझने की कोशिश करते हैं और नौजवानों को रौशन ख़याली के नाम पर गुमराह करते हैं और उन्हें धोका देते हैं वह ह़क़ पर हैं या वह अइम्मये मुजतहेदीन व फ़ुक़हा जो किताब व सुन्नत से अपने इजतिहाद के ज़रिये दीनी अह़काम मुस्तख़्रज करते हैं और दीन को सही तौर पर समझते हैं, वह ह़क़ पर हैं?

(असरुल हदीसिश्शरीफ़ फ़ी इख़्तेलाफ़िल अइम्मतिल फ़ुक़हा प्र0 9)

आज ग़ैर मक़ल्लेदीने ज़माना ह़ाफ़िज़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई जैसे मौलवी और उनके जाहिल अ़वाम बड़ी जुरअत के साथ अइम्मये दीन पर तानो तश्नी करते हुए यह कहते हैं कि फ़ुलां फ़ुलां इमाम का क़ौल सही ह़दीस के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा उनको ना मानो, सही ह़दीस को मानो। इस तरह़ की धोका देही से दर अस्ल उनका मक़सद यह है कि आ़म मुसल्मानों को अइम्मये दीन व मुजतहेदीने उम्मत से बेज़ार कर दिया जाए। उनसे एतेमाद का रिश्ता काट दिया जाए। फिर दीन की ताबीर व

तश्रीह़ में खूब मनमानी की जाए और यहूदो नसारा की तरह़ दीन व अह़कामे दीन की तश्रीह़ तज़ादात व मुगाल़तात का मजमूआ़ बनकर रह जाए। वल अ़याज़ बिल्लाहिल अ़ज़ीम। यह यहूदी व ईसाई साज़िश जिसके लिए वहाबियत व ग़ैर मुक़ल्लदियत सबसे बेहतर हथियार हैं।

दूसरी ग़लत फ़हमीः आज कल के वहाबी ग़ैर मुक़ल्लेदन आ़म लोगों में यह बात फैलाते हैं कि ह़नफ़ी लोग बुख़ारी व मुसलिम की बहुत सी सह़ी अह़ादीस पर अ़मल नहीं करते। हालांकि शाह वलीउल्लाह मोहद्दिस देहलवी ने अपनी किताब हुज्जतुल्लाहिल बालेग़ा में लिखा है कि जो इन (सह़ीह़ैन यानी बुख़ारी व मुसलिम) की अज़मत न करे वह बिदअ़ती है, मुसलमानों के ख़िलाफ़ राह चलता है। (हुज्जतुल्लाहिल बालेग़ा प्र0 242) चुनांचे ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी, अइम्मये अह़नाफ़ व मुक़ल्लेदीने इमामे आज़म पर तीर चलाते हुए लिखते हैं कि *''मगर किसे मालूम था कि एक ऐसा दौर आने वाला है जब मुसलमानों की राह के ख़िलाफ़ चलने वाले बिदअ़ती सह़ीह़ैन (बुखारी व मुसलिम) की अह़ादीस और रावियों पर अंधाधुध हमले करेंगे।''* (नूरुल ऐन फ़ी इसबाते रफ़ेयदैन प्र0 32)

गलत फ़हमी का इज़ालाः शाह वलीउल्लाह मोह़द्दिस देहलवी की बात दुरुस्त है। यक़ीनन जो सह़ीह़ैन की अ़ज़मत न करे वह बिदअ़ती है। लेकिन क्या ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई वहाबी मुक़ल्लिद और हम ख़यालों के नज़दीक सह़ीह़ैन के सिवा बाक़ी कुतुबे अह़ादीस मसलन सुनने अबूदाऊद, सुनने निसई, सुनने इब्ने माजा, जामे तिरमिज़ी, सह़ी इब्ने खुज़ैमा, मुस्तदरक लिलह़ाकिम वग़ैरह की तौहीन करने वाला पक्का अहले सुन्नत और वहाबी तश्रीह़ के मुताबिक़ ख़ालिस 'अहले ह़दीस' है? सह़ी बुख़ारी व मुसलिम की अ़ज़मत उनमें मौजूद सह़ी अह़ादीसे रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की बुनियाद पर है तो क्या इस अ़ज़मत से दीगर कुतुबे अह़ादीस ख़ाली हैं? सह़ी अह़ादीस की तादाद व सनद के लिहाज़ से कुतुबे अह़ादीस में तफ़ावुत होना अलग बात है लेकिन तमाम कुतुबे अह़ादीस ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी के नज़दीक अ़ज़मत वाली है या नहीं? और उनकी अज़मत को न मानने

वाला बिदअ़ती, मुसलमानों की राह के ख़िलाफ़ चलने वाला है या नही? उनके ह़ामी इस सवाल का जवाब दें तो फिर इंशा अल्लाह उन्हें आईना दिख जाऐगा।

तीसरी ग़लत फ़हमीः ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई साह़ब ने इमामे अबू मोह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद बिन याक़ूब ह़ारेसी बुख़ारी अलमारूफ़ ब *'अब्दुल्लाह उस्ताज़'* को (जो इमामे अबू ह़नीफ़ा लिलख़्वारज़मी के रावी हैं) बाज़ नाक़ेदीने ह़दीस के ह़वाले से ज़ईफ़ बल्कि 'मुत्तहिम बिल वज़ा' लिखा है। वह लिखते हैं कि उस शख़्स की तौसीक़ किसी ने नहीं की। (नूरुल ऐनैने प्र0 230)

ग़लत फ़हमी का इज़ालाः शैख़ अबू मोह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन याक़ूब ह़ारेसी बुख़ारी को माहेरीने ह़दीस मसलन यह़या इब्ने मईन, अबू ह़तिम राज़ी, अ़ली बिन मदयनी वग़ैरुहु ने मुत्तहिम क़रार नहीं दिया है। ज़ैल में हम माहेरीन को अक़वाल नक़्ल करते हैं।

अबू मोह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन याक़ूब ह़ारेसी बुख़ारी पर अक़वाले जरह़ का तनक़ीदी जायज़ा

- अबू ज़रआ़ अह़मद बिन हुसैन ने उन्हें 'ज़ईफ़' कहा मगर यह जरह़ मुबहम है जो ग़ैर मोतबर है।
- ह़ाकिम ने कहा कि वह साहिबुल अजाइब अ़निस्सक़ात हैं मगर किसी रावी को 'साह़िबे अजाइब' या 'इन्दहू अजाइब' कहने से उसका मजरूह़ होना लाज़िम नहीं आता जब तक कि दलील से उसका ग़ैर सिक़ह होना साबित न हो जाए। (तह़रीरे उलूमिल ह़दीस 1/205, लेअ़ब्दिल्लाह इब्ने यूसुफ़ अलजदी बैरूत 1424 हि0)

मसलन उस्मान बिन अ़ब्दुर्रह़मान तराइफ़ी (मौतः 202 हि0) अबू दाऊद, निसई, इब्ने माजा के रावी हैं। उनको इब्नुलजौज़ी ने अबू अ़रूबा के ह़वाले से *'इन्दहू अजाइब'* लिखा उनके यहां कुछ अजीब रिवायात हैं इब्ने नुमैर ने तो 'कज्ज़ाब' तक कह डाला (अज़्ज़ोअ़फ़ा वल मतरूकून 2/169) मगर बावजूद इसके इमामे ज़हबी ने उन्हें सिक़ह कहा, यह़या बिन मईन ने सदूक़ कहा, अबू अ़रूबा ने कहा कि उनमें कोई ऐब नहीं।

वह कुछ मजहूल लोगों से कुछ अ़जाइब रिवायात करते हैं। इब्ने अबी ह़ातिम ने कहा कि मेरे वालिद ने कहा कि बुख़ारी ने उन्हे किताबुज़्ज़ोअ़फ़ा में ज़िक्र किया है। लेकिन मुझे यह बात पसन्द नहीं, अह़मद इब्ने अ़म्र इब्ने अबी आ़सिम नुबैल ने कहा कि उसमान बिन अ़ब्दुर्रह़मान लोगों के नज़दीक सच्चे थे। इब्ने शाहीन ने उनके तअ़ल्लुक़ से किताबुस्सिक़ात में लिखा कि वह सिक़ह हैं मगर क़वी व ज़ईफ़ रावियों से रिवायत लेते हैं।

(सियरो आलामिन्नुबला 9/426, तारीखुल इस्लाम लिज़्ज़हबी 5/120, इकमाल तहज़ीबुल कमाल 9/465)

क़ारेईन मुलाह़ज़ा फ़रमायें कि उसमान बिन अ़ब्दुर्रह़मान तराइफ़ी सिह़ाह़े सित्ताके रावियों में हैं जिन्हें बाज़ मोह़द्देसीन ने साह़िबे अ़जाइब कहा बावजूद इसके जम्हूरे मोह़द्देसीन ने उन्हें 'सदूक़, सिक़ह और उनमें कोई ऐब नहीं' कहा है और जम्हूर के मुक़ाबिले में इब्ने नुमैर का क़ौल कि वह कज़्ज़ाब हैं रद्द कर दिया गया। इसी तरह़ अबू मोह़म्मद ह़ारेसी बुख़ारी पर वज़्ए ह़दीस का इल्ज़ाम बे दलील और जम्हूरे मोह़द्देसीन के ख़िलाफ़ है। अगरचे उन्हें बाज़ ने साह़िबे अजाइब कहा लेकिन इससे उनके सिक़ह व सदूक़ होने पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

- ख़तीब ने कहा 'ला योह़तज्जो बिही' (सियरो आलामिन्नुबला 15/424) यह भी जरह़ मुबहम है।

नाक़ेदीन के यहां असबाबे जरह़ मुखतलिफ़ हैं। बाज़ असबाब से रावी क़ाबिले हुज्जत होता है ओर बाज़ असबाब से क़ाबिले हुज्जत नहीं होता। इसलिए उलमा ने फ़रमाया है कि जब तक जरह़ मुफ़स्सर न हो मक़बूल नहीं।

इब्ने दक़ीकुल ईद लिखते हैं कि लोगों के यहां असबाबे जरह़ मुखतलिफ़ हैं इसीलिए माहेरीन ने फ़रमाया है कि सिर्फ़ जरहे मुफ़स्सर ही मक़बूल है। (अल इक़तिराह़ फ़ी बयानिल इस्तिलाह़ 1/57)

अबू मोह़म्मद ह़ारिस बुख़ारी की हैसियत

मुसनदे अबू ह़नीफ़ा के रावी अबू मोह़म्मद ह़ारेसी बुख़ारी का मजरूह़ होना साबित नहीं। जिन लोगों ने उन पर जरह़ की है वह जरह़ मुबहम

और बिला दलील है, लिहाज़ा मक़बूल नहीं। यही वजह है कि इमामे ज़हबी ने अक़वाले जिरह़ को नक़्ल करने के बावजूद उनके तअ़ल्लुक़ से लिखा है कि ''शैख़, इमाम, फ़क़ीह, अ़ल्लामा, मोह़द्दिस, आ़लिमे मावराउन्नहर अबू मोह़म्मद उस्ताज़ अ़ब्दुल्लाह इब्ने मोह़म्मद बिन याक़ूब बिन ह़ारिस बिन ख़लील ह़ारेसी बुख़ारी उन्होंने अ़ब्दुल्लहा इब्ने वासिल, अ़ब्दुस्समद इब्ने फ़ज़्ल, ह़मदान बिन ज़िन्नून, अबू माशर ह़मदोया इब्ने ख़त्ताब, मोह़म्मद बिन लैस सरख़सी, इमरान बिन फ़रीनाम, अबुल मोजह मोह़म्मद बिन अम्र मरूज़ी, फ़ज़्ल बिन मोह़म्मद शारानी, मोह़म्मद बिन अ़ली अस्साइग़, अबू हुमाम मोह़म्मद बिन ख़लफ़ नसफ़ी, मूसा बिन हारून ह़म्माल, अह़मद इब्नुज़्जौ और एक जमाअ़त से रिवायात ली हैं और उनसे रिवायात लेने वालों में अबुत्तय्यिब अ़ब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद, मोह़म्मद बिन ह़सन बिन मन्सूर नीसापुरी, अह़मद बिन मोह़म्मद बिन याक़ूब फ़ारसी, अबू अ़ब्दुल्लाह बिन मन्दा और दूसरे हैं।

ज़हबी उनकी मज़ीद तारीफ़ व तह़सीन करते हुए लिखते हैं कि मशाइख़ में से अबुलअ़ब्बास बिन उक़दा ने उनसे ह़दीस ली है और इब्ने मन्दा (जिनको ज़हबी ने इल्म का ख़ाज़ाना कहा है) उनके बारे में अच्छी बात कहते थे। (सियरे आलामुन्नुबला 15/424)

ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली साह़िब ने लिखा है कि इस पर शदीद जरहों के लिए देखिए मीज़ानुल एतेदाल, लिसानुल मीज़ान और अलकशफ़ुल ह़सीस। (नूरुल ऐनैन प्र0 230)

ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली साह़िब के मशवरे पर अ़मल करते हुए क़ारेईन ज़रा मीज़ानुल एतेदाल, लिसानुल मीज़ान और अल कशफ़ुल ह़सीस देख लें।

मीज़ानुल एतेदाल 2/496, रक़म 4571 में अल्लामा ज़हबी ने लिखा है:

''अ़ब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद बिन याक़ूब अलह़ारेसी अलबुखारी अलफ़क़ीह (उस्ताज़ से मशहूर) अबू अ़ब्दुल्लाह बिन मन्दा ने अकसर उनसे रिवायत लीं हैं और उतकी कुछ तसानीफ़ भी हैं।''

ज़हबी की पूरी इबारत में ह़ारेसी पर किसी जरह़ की तरफ़ हल्का सा इशारा भी नहीं बल्कि सियरो आलामिन्नुब्ला में ज़हबी ने उन्हें इमाम, शैख़, मोह़द्दिस, फ़क़ीह, अ़ल्लामा, आ़लिमे मावराउन्नहर लिख कर उनकी

मदह़ की है। अलबत्ता इब्नुलजौज़ी का क़ौल नक़्ल किया है कि अबूसईद अर्रव्वास ने उन्हें मुत्तहिम बेवज़इल ह़दीस कहा अबू सईद अर्रव्वास के ह़वाले से इब्नुल जौज़ी ने यही बात *'अज्ज़ोफ़ाओ वल मतरूकून'* में इब्ने अजमी ने *'अलकशफुल हसीस'* में और अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़सक़लानी ने उन्हीं के ह़वाले से *'लिसानुल मीज़ान'* में भी लिखा है और अह़मद सुलैमानी के ह़वाले से भी यही नक़्ल किया गया है।

खुलासा यह है कि अब्दुल्लाह ह़ारेसी को मुत्तहिम कहने वाले सिर्फ़ दो आदमी हैंः 1. अबूसईद अर्रव्वास 2. अह़मद सुलैमानी।

अबूसईद अर्रव्वासः अबूसईद अर्रव्वास कौन हैं? उनकी सिक़ाहत व अ़दमे सिक़ाहत का क्या ह़ाल है? इसके ज़िक्र से कुतुबे तबक़ात और तराजिम के सफ़ह़ात ख़ाली हैं। यह शख्स मजहूलुल ऐन भी है और मजहूलुल ह़ाल भी। लिहाज़ा ऐसे की बात किसी कि तअ़ल्लुक़ से खुसूसन वज़्ए ह़दीस के इल्ज़ाम में क्योंकर मोतबर हो सकती है?

दूसरे शख्स अहमद सुलैमानी भी ग़ैर मुतअ़य्यन हैं। क्योंकि इस नाम के कई अश्खास हैं। मसलन (1) अह़मद बिन अलक़ासिम बिन सुलैमान बिन मोह़म्मद अलआयुन सुलैमान से मशहूर, उनकी मौत 391 या 300 हि0 में है। अगर अह़मद सुलैमान से यह शख्स मुराद है तो एक तो उसकी तौसीक़ मालूम नहीं इसके अ़लावा यह ह़ारेसी के मुआ़सेरीन में से हैं। इसलिए बिला दलील उनकी बात ग़ैर मोतबर होगी जब तक कि उसे जम्हूरे मुआ़सेरीन की तसदीक़ ह़ासिल न हो जाए। मह़ज़ अह़मद अस्सुलैमानी की बात पर एतेमाद करते हुए इमाम, मुह़द्दिस, फ़क़ीह, अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह ह़ारेसी बुख़ारी पर वज़्ए ह़दीस का इल्ज़ाम ग़ैर मसमू व नामक़बूल होगा।

अह़मद सुलैमानीः यह अह़मद बिन अ़ली बिनउमर अल ह़ाफ़िज़ अबुल फ़ज़्ल सुलैमानी बेकन्दी बुख़ारी हैं। इनकी वफ़ात 440 हि0 में है। अगर अह़मद सुलैमानी से मुराद यह हैं तो जलीलुल क़द्र मोह़द्दिस और साहेबे तसानीफ़ होने के बावुजूद मुतक़द्देमीन पर उनकी जरह़ उस वक़्त तक मक़बूल नहीं होगी जब तक उस पर कोई दलील व बुरहान मौजूद न हो। अ़ब्दुल्लाह ह़ारेसी की वफ़ात 340 हि0 में हुई है, अह़दम सुलैमनी की उम्र 93 साल थी। इससे पता चलता है कि अह़मद सुलैमानी को अ़ब्दुल्लाह अल ह़ारेसी की मुआ़सरत ह़ासिल है।

मुआ़सिर की जरह़ उस वक़्त तक मक़बूल नहीं जब तक कि उस पर मज़बूत दलील न हो। फिर अह़मद सुलैमानी ख़ुद नाक़ाबिले एतेमाद थे तो उनकी बात क्योंकर मोतबर होगी?

अल्लामा ज़हबी ने उनके तअ़ल्लुक़ से लिखा है कि मैंने सुलैमान की एक किताब देखी जिसमें उनहोंने अकाबिर की शान में तनक़ीस की है। लिहाज़ा उनकी वह बात ग़ैर मसमू है जिसमें वह तनहा हों। (सयरो आलामिन्नुबला 17/202)

अ़ब्दुल्लाह अलह़ारेसी पर वज़्ए ह़दीस का इल्ज़ाम रखने में सुलैमानी तनहा हैं इसलिए उनकी बात इमामे ज़हबी के फ़रमान के मुताबिक़ नामक़बूल और ग़ैर मसमू है और यह समझना कि इब्नुल जोज़ी ने उनको मुत्तहिम कहा है ग़लत है। इब्नुल जौज़ी ने रव्वास और सुलैमानी का क़ौल नक़्ल किया है। रव्वास तो मजहूलुलऐन और मजहूलुलह़ाल हैं क्योंकि रव्वास लक़ब के मुतअ़द्दिद अश्खास हैं जिनमें बाज़ पर वज़्ए ह़दीस का भी इल्ज़ाम है। मसलन अलअ़ला इब्ने मुसलेमा अर्रव्वास इमामे तिरमिज़ी के शैख़ है उनके तअ़ल्लुक़ से इमामे ज़हबी ने लिखा है कि उन पर ह़दीस गढ़ने की तोहमत है। (अलमुग़नी फ़िज़्ज़ोफ़ा 2/440)

उनके तअ़ल्लुक़ से इब्ने ह़िब्बान ने कहा कि रव्वास इराक़ियों से उलट पलट की गई रिवायात बयान करते हैं और सिक़ात से मौजू रिवायात नक़्ल करते हैं। किसी ह़ाल में उनसे एहतिजाज दुरुस्त नहीं। (अलमजरूह़ीन लेइब्ने ह़िब्बान 2/185)

अह़मद सुलैमानी बुख़ारी (मौतः 404 हि0) इमामे ज़हबी के क़ौल के मुताबिक़ अकाबिर की तनक़ीसे शान के मुरतकिब थे। उनकी बात ग़ैर मोतबर है। मालूम हुआ कि अ़ब्दुल्लाह ह़ारेसी पर अह़मद सुलैमानी का लगाया हुआ वज़्ए ह़दीस का इल्ज़ाम ग़ैर मसमू व ना मोतबर है। बाक़ी ख़तीब का उनके तअ़ल्लुक़ से 'ला योह़तज्जो बिही' ह़ाकिम का 'अ़जाइब' और अबू ज़रआ़ अह़मद बिन हुसैन का 'ज़ईफ' कहना और ख़लील का 'लीन' कहना जरहे ग़ैर मुफ़स्सर है। अगर इन जरहों को बिला दलील तसलीम कर लिया जाए और उसकी बुनियाद पर अ़ब्दुल्लाह ह़ारेसी को नामक़बूल व ज़ईफ़ क़रार दिया जाए ते बहुत से

सिक़ह मक़बूल रावियों बल्कि सहीहैन के बाज़ रावियों को भी नामक़बूल ठहराना लाज़िम आयेगा। क्योंकि सहीहैन के बाज़ रावियों के तअ़ल्लुक़ से भी माहेरीन व नाक़ेदीने ह़दीस की जरहे नामक़बूल हैं। मसलनः

(1) बशीर बिन अलमुहाजिर अलग़नवी अल कूफ़ीः सही मुसलिम के रावी हैं। हालांकि उनको इब्ने ह़िब्बान ने कसीरुलख़ता कहा है। साजी ने मुनकिरुल ह़दीस कहा है। उक़ैली और इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने मुत्तहिम, मुरजेई और मुनकेरुल ह़दीस कहा। (इकमाल तहज़ीबुल कमाल 8/317) क्या इन जरहों का एतेबार करते हुए यह कहना दुरुस्त होगा कि सही मुसलिम के रावी बशीर बिन अलमुहाजिर मोत्तहिम, मुनकिरुल ह़दीस हैं इसलिए सही मुसलिम में उनकी रिवायत मुनकर व न मक़बूल है?

(2) अ़ब्दुल मलिक बिन उमैर बिन सुवैद ह़ारेसा अलक़रशीः

यह सही बुख़ारी के रावी हैं। इन्हें यह़या इब्ने मईन ने मुख़ल्लित (रिवायत में खलत मलत करने वाला) कहा। अबू ह़ातिम ने कहा कि उनका ह़ाफ़िज़ा बिगड़ गया था। इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने कहा कि वह मुनकिरुल ह़दीस हैं। मैंने पांच सौ अह़ादीस उनके पास पाईं जिनमें से अकसर में उन्होंने ग़लती की है। इसह़ाक़ अलकौसज ने इमामे अह़मद के ह़वाले से लिखा कि वह बहुत ज़्यादा ज़ईफ़ थे। हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस उनकी रिवायत में इख़्तेलाफ़ करते थे। (सियरो आलामुन्नुबला लिज़्ज़हबी 5/440) क्या इन माहेरीने ह़दीस की शदीद जरहों को मोतबर क़रार देते हुए यह कहना दुरुस्त होगा कि सही बुख़ारी की वह रिवायात जो अ़ब्दुल मलिक बिन उमैर से मरवी हैं वह सही नहीं बल्कि मुनकर व नामक़बूल हैं।

(3) अ़ब्दुल मलिक इब्ने अस्सबाह मुस्मेई अबू मोह़म्मद सनआ़नी बसरीः यह बुख़ारी, मुसलिम, निसई और इब्ने माजा के रावी हैं। लेकिन खलीली ने उनके तअ़ल्लुक़ से कहा कि उन पर अह़ादीस चोरी करने की तुहमत लगाई गई है। (इकमाल तहज़ीबुल कमाल लिलमुग़ल्लताई 8/317)

क्या ख़लीली के क़ौल की बुनियाद पर अ़ब्दुल मलिक इब्ने अस्सबाह़ जो बुख़ारी व मुसलिम और निसई व इब्ने माजा के रावी हैं उनको नामक़बूल व मजरूह़ क़रार दिया जायेगा?

ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई और उनके ह़ामी बरादरान अहले ह़दीस को यह फ़न्नी उसूल फ़रामोश नहीं करना चाहिए कि किसी रावी पर अगर नाक़ेदीने ह़दीस की जरहें मोजूद हैं तो उसका यह मतलब नहीं कि यक़ीनी तौर पर वह रावी मजरूह़ है। क्योंकि यह चीज़ ज़न्न पर मबनी है। एक ही रावी बाज़ नाक़ेदीन के नज़दीक मुत्तहम होता है और दूसरे बाज़ के नज़दीक सदूक़ सिक़ह होता है। जैसा कि माक़बल की तीन मिसालों से ज़ाहिर है।

इमामे तिलमिसानी फ़रमाते हैं कि कितने ऐसे हैं जिन पर तुहमत रखी गई है और किसी को ऐब का जामा पहनाया गया है हालांकि वह उससे बरी और ख़ाली होते हैं। (अज़हारुर्रियाज़ फ़ी अख़बारे क़ाज़ी अ़याज़ 1/85)

कभी ऐसा होता है कि किसी मोह़द्दिस को किसी मोह़द्दिस से बुग्ज़ होता है या उसकी मालूमात में वह मोह़द्दिस मजरूह़ होता है या उसके नज़दीक कोई अम्र जिरह़ का सबब होता है लेकिन दीगर मोह़द्देसीन के नज़दीक वह जिरह़ का सबब नहीं होता तो वह मोह़द्दिस उस पर जिरह़ कर देता है। हालांकि दूसरों के नज़दीक वह मजरूह़ नहीं होता। मसलन नबीज़े तमर पीना बाज़ मोह़द्देसीन के नज़दीक ह़राम है और बाज़ के नज़दीक ह़राम नहीं। जिनके नज़दीक ह़राम है उनके यहाँ नबीज़े तमर पीने वाला फ़ासिक़ो मजरूह़ है और जिनके नज़दीक उसका पीना मुबाह़ है उनके नज़दीक यह जिरह़ का सबब नहीं। यह़या इब्ने मईन का क़ौल है कि "नबीज़ को ह़राम कहना सही है। लेकिन मैं उसमें तवक़्क़ुफ़ करता हूँ, उसे ह़राम नहीं कहता। क्योंकि एक सालेह़ क़ौम ने उसको पिया है सही अह़ादीस की बुनियाद पर, और सालेह़ क़ौम ने उसे ह़राम क़रार दिया है सही अह़ादीस की बुनियाद पर। (सियारो आलाम 11/88)

इसकी एक मिसाल यह है कि अह़मद इब्ने सालेह़ जम्हूरे नाक़ेदीने ह़दीस के नज़दीक ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस मुतक़िन सबत हैं लेकिन उन्हें मशहूर नाक़िद यह़या इब्ने मईन ने ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस कहने के बावजूद

मजरूह़ क़रार दिया और कहा कि उनमें तकब्बुर था। नीज़ उन्हें इमामे निसई ने कहा कि वह सिक़ह नहीं हैं क्योंकि अह़मद इब्ने सालेह़ ने इमामे निसई को अपनी मजलिस से निकाल दिया था जिससे उन्हें तकलीफ़ पहुँची थी। लेहाज़ा उन्होंने उन पर जिरह़ कर दी है। (सियरो आलामिन्नुबला 9/120)

ह़ासिले कलाम यह है कि माहेरीने ह़दीस मसलन यह़या इब्ने मईन, अ़ली बिन मदयनी, अबू ह़ातिम राज़ी वग़ैरह ने अ़ब्दुल्लाह अल ह़ारेसी पर जरह़ नहीं की है। इमामे ज़हबी ने उनकी तारीफ़ में शैख़, इमामे, मोह़द्दिस, फ़क़ीह, अ़ल्लामा और मावराउन्नहर जैसे अलफ़ाज़ स्तेमाल किये हैं और इब्ने मन्दा ने उन्हें अच्छा कहा है। उन पर जरह़ करने वाला अबू सईद अर्रव्वास मजहूल व नामक़बूल शख़्स है। अह़मद सुलैमानी ग़ैर मुअ़य्यन है। अगर अह़मद सुलैमानी बुख़ारी (मौतः 440) मुराद हैं तो इमामे ज़हबी के बक़ौल वह अकाबिर की शान में तनक़ीस करने वाले हैं उनकी कोई मुनफ़रिद बात नामक़बूल है। ख़तीब ने कहा कि ह़ारेसी नाक़ाबिले हुज्जत हैं लेकिन उसकी वजह ज़िक्र नहीं की। अबू ज़रआ ने ज़ईफ़ कहा लेकिन उसका कोई सबब बयान नहीं किया। यह मुबहम जरह़ नामक़बूल है। लिहाज़ा साबित हुआ कि मुसनदे इमामे अबू ह़नीफ़ा अलह़ारेसी के रावी अ़ब्दुल्लाह ह़ारेसी मुत्तहम, मजरूह़ और नामक़बूल नहीं। अगर उनसे बाज़ अ़जाइब सिक़ात के ख़िलाफ़ मनक़ूल हैं तो ख़ास तौर से वह अ़जाइब ना मक़बूल होंगे न कि उनकी तमाम रिवायात नामक़बूल व मरदूद होंगी जैसाकि यह बात अहले इल्म से मख़्फ़ी नहीं।

हसन इब्ने ज़ियाद लोलुई पर जरह़ का जवाब

माहेरीने फ़न्न इस ह़क़ीक़त से बाख़बर हैं कि बाज़ मोह़द्देसीन फ़ुक़हा बिलखुसूस फ़ुक़हाए अह़नाफ़ से ह़द दर्जा तअ़स्सुब रखते थे। यहांतक कि उनका तअ़स्सुब बुग्ज़ व इनाद तक पहुँचा हुआ था। इसकी वजह वह ग़लत फ़हमी थी जो फ़ुक़हाए अह़नाफ़ बिलखुसूस इमामे आज़म के तलामिज़ा और उनके तलामिज़ा के तलामिज़ा के तअ़ल्लुक़ से मुतअ़स्सेबीन व मुतशद्देदीन ने फैला रखी थी कि उलमाए कूफ़ा (फ़ुक़हाए अह़नाफ़) अह़ादीस को छोड़ कर क़यास व राय को तरजीह़ देते हैं और

अहादीस के ख़िलाफ़ क़यास व राय पर अमल करते हैं। इस ग़लत फ़हमी के शिकार बाज़ अच्छे भले मोहद्देसीन भी हो चुके थे। जिनमें कितने ऐसे थे जो इसी ग़लत फ़हमी के बोझ तले दबे हुए दुनिया से गुज़र गए और कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने हक़ीक़ते हाल मालूम होने के बाद अपने मनफ़ी ख़यालात व अक़वाल से रुजू कर लिया और उन्हें यक़ीन हो गया कि जिस इमामे अबू हनीफ़ा का यह क़ौल हो कि ''हदीसे सही जब आ जाए तो वहीं मेरा मज़हब है'' और जिस इमाम के नज़दीक ज़ईफ़ हदीस के मुक़ाबिले में क़यास को छोड़ दिया जायेगा वह और उसके तलामिज़ा अहादीसे सहीहा के मुक़ाबिले में हर गिज़ अपनी राय और क़यास को तरजीह नहीं दे सकते। इसी तअस्सुब व ग़लत फ़हमी का शाख़्साना है कि बाज़ नाक़ेदीने हदीस ने इमामे आज़म के अजिल्ला तलामिज़ा मसलन इमामे मोहम्मद, इमामे ज़ुफ़र और हसन इब्ने ज़ियाद वग़ैरह हत्ता कि खुद इमामे आज़म पर भी जिरह कर दी है। जम्हूरे उम्मत ने ऐसे लोगों की मनफ़ी ज़हनियत को कभी तवज्जोह के क़ाबिल नहीं समझा क्योंकि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा और आपके मशहूर तलामिज़ा मुजतहेदीने उम्मत जलीलुल क़द्र मोहद्देसीन और फ़ुक़हा की फ़ेहरिस्त में शामिल हैं। उनको मजरूह व नामक़बूल ठहराना दिन में सूरज की रौशनी के इनकार के मुतरादिफ़ है।

दौरे माक़बल मे सिर्फ़ इतना ही था कि बाज़ लोगों ने बिला तहक़ीक़ो तफ़तीश अइम्मये अहनाफ़ के तअल्लुक़ से मुवाफ़िक़ो मुख़ालिफ़ दोनों क़िस्म के अक़वाल जमा कर दिए। इस खुसूस में ख़तीबे बग़दादी का नाम मारूफ़ है। लेकिन उन्होंने उन अइम्मये किराम पर ज़बाने लान तना को दराज़ नहीं किया। मगर माज़ीये क़रीब के और दौरे हाज़िर के वहाबी ग़ैर मुक़ल्लेदीन जो कभी अपने आप को अहले हदीस कहते है, कभी सलफ़ी कहते हैं और कभी मोहम्मदी कहते हैं, इमामे आज़म और आपके तलामिज़ा को हदफ़े मलामत बनाते हैं और उन पर जरह व क़दह करने में हर क़िस्म के रत्बो याबिस को अपनी किताबों में नक़्ल करते हैं। इसी को वह दीन की सबसे बड़ी ख़िदमत तसव्वुर करते हैं। *''और अनक़रीब ज़ालिम जान लेंगे कि वह किस करवट पलटा खाये गे?''* वहाबी ग़ैर मुक़ल्लेदीन के जुल्मो सितम की इन्हीं मिसालों में से एक

मिसाल यह है कि उन्होंने इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अ़लैहे के जलीलुल क़द्र तिलमीज़ इमामे ह़सन इब्ने ज़ियाद लोलुई पर रद्दो क़दह़ के आरे चलाए हैं। और बाज़ नाक़ेदीने ह़दीस के ह़वाले से उन पर जरहे नक़्ल की हैं। ज़ैल में हम उसका एक तह़क़ीक़ी व तनक़ीदी जायज़ा क़ारेईने किराम की नज़्र कर रहे हैं। व बिल्लाहिलत्तौफ़ीक़।

मशहूर अहले ह़दीस वहाबी आ़लिम ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई ने इमामे ह़सन बिन ज़ियाद लोलुई के तअ़ल्लुक़ से लिखा कि इब्ने मईन ने उन्हें कज़्ज़ाब कहा है। इस पर राक़िम कहता है कि यह़या इब्ने मईन का यह क़ौल एक तो बिला सनद है दूसरे यह़या इब्ने मइ़न ने इस क़ौल में मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने नुमैर पर इतेमाद किया है और उन्हीं से नक़्ल किया है। इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल और यह़या इब्ने मईन दोनों कूफ़ी शुयूख़ के तअ़ल्लुक़ से मोह़म्मद बिन नुमैर पर एतेमाद किया करते थे। (मौसूअ़तो अक़वालिल इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल 3/282)

मोह़म्मद बिन नुमैर की वफ़ात 234 हि0 और हसन इब्ने ज़ियाद लोलुई की वफ़ात 204 हि0 है। ह़सन इब्ने ज़ियाद कूफ़ी शुयूख़ में थे और यह़या इब्ने मईन कूफ़ी शुयूख़ के मुआ़मले में इब्ने नुमैर पर एतेमाद किया करते थे लिहाज़ा इबने नुमैर ने ह़सन इब्ने ज़ियाद पर किज़्ब का इल्ज़ाम रखा तो यह़या इब्ने मईन ने उनपर एतेमाद करते हुए उन्हें कज़्ज़ाब कह दिया। अबू दाऊद ने भी कज़्ज़ाब कहा लेकिन इब्ने नुमैर के ही ह़वाले से। (मीज़ानुल एतेदाल 1/491)

दार कुत्नी ने मतरूक कहा तो यह़या इब्ने मईन पर एतेमाद करते हुए। मज़ीद यह कि यह क़ौल बिला दलील है। हसन इब्ने ज़ियाद पर इल्ज़ामे किज़्ब का मदार मोह़म्मद बिन नुमैर का क़ौल है और मोह़म्मद बिन नुमैर ह़सन बिन ज़ियाद के मुआ़सेरीन में से हैं। मुआ़सिर अपने किसी मुआ़सिर को कज़्ज़ाब कहे या उस पर जिरह़ करे तो उसकी बुनियाद मुआ़सराना चश्मक भी हो सकती है। लिहाज़ा जब तक जम्हूरे नाक़ेदीने ह़दीस के अक़वाल से उसकी जरह़ की तसदीक़ ह़ासिल न हो क़बूल नहीं की जायेगी। लिहाज़ा इब्ने नुमैर की जरह़ ह़सन इब्ने ज़ियाद पर नामक़बूल है क्योंकि जम्हूरे नाक़ेदीन ने उन्हें कज़्ज़ाब नहीं कहा।

अ़ली इब्ने मदयनी ने कहा कि ''उनकी ह़दीस नहीं लिखी जायेगी'' तो इस क़ौल की बुनियाद भी ह़सन इब्ने ज़ियाद का मुत्तहम बिलकिज़्ब होना है और यह बुनियाद मज़बूत नहीं क्योंकि एक मुआ़सिर ने उन पर किज़्ब का इल्ज़ाम रखा है जो बिला दलील ना मोतबर है। अबू ह़ातिम ने कहा ''वह न सिक़ह हैं न मामून है'' यह क़ौल भी बिला दलील है इसलिए नामक़बूल है। (मीज़ानुल एतेदाल 1/491)

हसन इब्ने ज़ियाद लोलुई के तअ़ल्लुक़ से एक मन गढ़त क़िस्सा

वाज़ेह़ रहे कि यह क़िस्सा मीज़ानुल एतेदाल में बे सनद मज़कूर है। बुवैती ने कहा कि मैंने शाफ़ेई को यह कहते सुना कि मुझसे फ़ज़्ल बिन रबी ने कहा कि मैं चाहता हूँ कि आपका और ह़सन इब्ने ज़ियाद लोलुई का मुनाज़रा देखूँ तो मैं (शाफ़ेई) ने कहा कि ह़सन बिन ज़ियाद इस मक़ाम पर नही तो फ़ज़्ल इब्ने रबी ने कहा कि मेरी ख़्वाहिश है। मेरी ख़्वाहिश है। फ़ज़ल कहते हैं कि फिर हमारे सामने खाना ह़ाज़िर किया गया, हमने खाना खाया फिर हमारे एक साथी ने ह़सन इब्ने ज़ियाद से कहा कि आप उस आदमी के बारे में क्या कहते हैं जिसने ह़ालते नमाज़ में किसी पारसा औ़रत पर तुहमत लगाई? तो ह़सन इब्ने ज़ियाद ने कहा उसकी नमाज़ बातिल हो गई। मेरे साथी ने कहा और वज़ू? कहा वुज़ू अपने ह़ाल पर रहा। मेरे साथी ने कहा फिर तो ह़ालते नमाज़ में बेगुनाह औ़रत पर तुहमत लगाना ह़ालते नमाज़ में क़हक़हा लगाने से आसान है। यह बात सुनकर ह़सन इब्ने ज़ियाद ने अपनी जूती बग़ल में दबा ली और भाग खड़े हुए। मैं (शाफ़ेई) ने फ़ज़ल से कहा मैंने तुमसे कहा था कि वह इस मक़ाम पर नहीं हैं। (मीज़ानुल एतेदाल 1/491)

हर शुऊर वाला ग़ैर जानिबदार साह़िबे इल्म जिसके इल्म को फ़िक़्ह व ह़दीस से वास्ता है बाआसानी यह फ़ैसला कर सकता है कि यह वाक़ेया मनगढ़त और झूट है। इसके झूट होने के चन्द शवाहिद मौजूद हैं।

(1) बुवैती अगरचे इमामे शाफ़ेई के सिक़ह शागिर्द हैं लेकिन बुवैती से इस वाक़ेये को किसने नक़ल किया है? अल्लमा ज़हबी (मौतः 748

हि0) से बुवैती (मौतः 231 हि0) तक दरमियान में पांच सौ सत्तरह (517) साल का वक्फ़ा है। इस फ़ासले में जो रावी हैं उनके नाम व अह़वाल मालूम नहीं कि उनकी सिक़ाहत व सदाक़त का पता लगाया जाये और इस वाक़ेये की सेह़त का हुक्म लगाया जाए।

(2) इस वाक़ेये के रावी फ़ज़ल बिन रबी के बारे में इमामे ज़हबी ने फ़रमाया है कि उनकी ह़दीस मुनकर है। (दीवानुज़्ज़ोफ़ा लिज़्ज़हबी 1/319) उक़ैली ने कहा कि उनकी ह़दीस की कोई मुताबे नहीं मिलती। यानी उनकी ह़दीस ना मक़बूल होती है। (लिसानुल मीज़ान 6/339) माहेरीने ह़दीस में से उनकी तौसीक़ मकबूल नहीं। लिहाज़ा इस वाक़ेये की सेह़त बहर ह़ाल मश्कूक है।

(3) फ़ज़ल बिन रबी ने कहा कि मेरा साथी एक आदमी था, उसने ह़सन इब्ने ज़ियाद से सवाल किया। फ़ज़ल बिन रबी के साथ वह कौन आदमी था जो ह़सन बिन ज़ियाद से मुनाज़रा के लिए तय्यार हुआ? इसका कुछ ज़िक्र नहीं ह़सन बिन ज़ियाद जैसे फ़क़ीह से मुनाज़रा करने वाला कोई मामूली आदमी नहीं होगा। लेकिन एक आ़म मजहूल आदमी का ज़िक्र यह बता रहा है कि वाक़ेया में सदाक़त नहीं।

(4) इमामे शाफ़ेई रह़मतुल्लाहे अलैह, इमामे आज़म और आपके मशहूर तलामिज़ा की जलालत व तफ़क़्क़ुह और ह़ाज़िर जवाबी व बेदार दिमाग़ी का ह़ाल अच्छी तरह़ जानते थे। क्योंकि इमामे आज़म के शागिर्दों से उनका बड़ा कुर्ब था। इमामे मोह़म्मद रहमतुल्लाह अलैह तो उनके उस्ताज़ ही थे। ह़सन इब्ने ज़ियाद इमामे आज़म के उन तलामिज़ा में थे जो अपनी ह़ाज़िर जवाबी और तफ़क़्क़ुह में मशहूर थे। इमामे शाफ़ेई ने जिसका बारहा मुशाहदा किया था। फिर यह क्योंकर मुमकिन है कि इमामे शाफ़ेई फ़ज़ल बिन रबी की ख़्वाहिश पर कि वह इमामे शाफ़ेई और ह़सन इब्ने ज़ियाद के दरमियान मुनाज़रा देखना चाहते हैं, यह जवाब दें कि ह़सन इब्ने ज़ियाद ''मुनाज़रा के लाइक़ नहीं'' यह जवाब इमामे शाफ़ेई की रिफ़अ़ते शान और इल्मी वक़ार के भी ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा इमामे शाफ़ेई की जानिब इसकी निसबत सही नहीं।

इस जवाब का इमामे शाफ़ेई की शख़्सियत से मेल न खाना खुद इस वाक़ेये की सदाक़त का मुंह चिढ़ाता नज़र आता है।

(5) अलावा अज़ीं 'मुनाज़िरे मजहूल' के 'एतेराज़े बेमिसाल' पर ह़सन बिन ज़ियाद का अपनी जूती बग़ल में दबा का भाग खड़ा होना वाक़ेया का यह जुज़ पूरे वाक़ेये को जाली साबित करने के लिए काफ़ी है।

क़ारेईन एक बार फिर मुनाज़िरे मजहूल का एतेराज़ और उसका जवाब मुलाह़ज़ा कर ले। ''हसन इब्ने ज़ियाद ने मुनाज़िरे मजहूल के सवाल पर जवाब दिया था कि नमाज़ में क़हक़हा लगाने वाले की नमाज़ भी बातिल हो गई और वज़ू भी टूट गया। ज़ाहिर है यह जवाब कोई क़यासी राय पर मबनी न था। बल्कि इसकी बुनियाद वह ह़दीसे पाक थी जिसको दार कुतनी ने अपनी सुनन में और इब्ने अबी शैबा ने अपनी मुसन्नफ़ में, इमामे अबू ह़नीफ़ा ने अपनी मुसनद (बरिवायते अबू नुऐम) में, इमामे मोह़म्मद ने अल आसार में, इमामे अबू यूसुफ़ ने किताबुल आसार में और इबनुल आराबी ने अपनी मोजम में रिवायत किया है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्ल्म ने इरशाद फ़रमया कि जिन लोगों ने हालते नमाज़ में क़हक़हा लगाया वह वज़ू और नमाज़ दोबारा लौटायें।

यह बात इल्मे फ़िक़ह का तालिबे इल्म जानता है कि कोई फ़िक़ही मसअला अगर ख़िलाफ़े क़यास ह़दीस से साबित हो तो ह़दीस को उसी मौरिदो मह़ल में ख़ास रखा जायेगा। उसकी नज़ीर दूसरे मसअला को उस पर क़यास नहीं किया जायेगा। ह़ालते नमाज़ में क़हक़हा लगाकर हंसने से नमाज़ का टूट जाना मुवाफ़िक़े ह़दीस भी है और मुवाफ़िक़े क़यास भी। क्योंकि क़हक़हा लगाकर हंसना मुनाफिये सलात है लिहाज़ा नमाज़ का टूट जाना क़यास के मुताबिक़ है लेकिन उससे वुज़ू का टूट जाना ख़िलाफ़े क़यास ह़दीस से साबित है। लिहाज़ा उसको उसके मौरिद (रुकू व सुजूद वाली नमाज़) के साथ ख़ास माना जायेगा क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम का फ़रमान जिस नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ है वह रुकू व सुजूद वाली थी। लिहाज़ा नमाज़े जनाज़ा में अगर क़हक़हा लगाए तो नमाज़ बातिल होगी वुज़ू नहीं।

मुनाज़िरे मजहूल को एक इल्मे फ़िक़्ह के तालिबे इल्म की समझ में आने वाली यह बात समझ में नहीं आई और उन्होंने ह़सन इब्ने ज़ियाद से सवाल कर दिया कि अगर ह़ालते नमाज़ में क़हक़हा लगाने से वुज़ू टूट जाता है तो हालते नमाज़ में किसी पारसा औ़रत पर तुहमत लगाने से भी वुज़ू टूट जाना चाहिए क्योंकि ह़ालते नमाज़ में किसी पारसा औ़रत पर तोहमत लगाना ह़ालते नमाज़ में क़हक़हा लगाने से ज़्यादा बुरा हैं। जब मुनाज़िरे मजहूल की जिहालत का यह आ़लम ह़सन इब्ने ज़ियाद ने देखी तो वहां से उठ खड़े हुए। बशर्ते सिदक़े वाक़ेया ह़सन इब्ने ज़ियाद का मुनाज़िरे मजहूल को जवाब न देना इस आयत पर अ़मल करना था कि *''जब जाहिल उनसे मुख़ातिब होते हैं तो वह सलाम कहकर आगे बढ़ जाते हैं।''* लेकिन मुतअ़स्सिब हाथों ने यहां यह बात गढ़ ली कि ह़सन इब्ने ज़ियाद जूती बग़ल में दबाकर भाग खड़े हुए। यानी ह़सन इब्ने ज़ियाद लाजवाब हो गये । फिर उस पर रंग चढ़ाते हुए यह लिख मारा कि यह सब देखकर इमामे शाफ़ेई ने कहा कि क्या मैंने नहीं कहा था कि ह़सन इब्ने ज़ियाद मुनाज़रा के लाइक़ नहीं। यह सब तअ़स्सुब की कार फ़रमाइयां हैं। हालांकि तअ़स्सुब से हटकर कोई देखे तो इस मसअले तनाजुर में अह़नाफ़ की अ़मल बिलह़दीस पर सख़्ती का सुबूत साफ़ झलकता है कि उनके यहां ह़दीस के मुक़ाबिले में ख़्वाह वह ज़ईफ़ ही क्यों न हो क़यास को तरजीह़ नहीं दी जायेगी। बल्कि ह़दीस पर अ़मल किया जायेगा। इंसाफ़ की नज़र में यह खूबी की बात थी कि लेकिन बुरा हो तअ़स्सुब व तंग नज़री का कि यह खूबी भी ऐब नज़र आने लगी और इमामे शाफ़ेई की तरफ़ मंसूब करके यह वाक़ेया भी गढ़ लिया गया और यह ख़्याल न रहा कि झूट चाहे कितना ही मुज़य्यन करके पेश किया जाये उसका पर्दा फ़ाश ज़रूर हो जाता है। ह़सन इब्ने ज़ियाद के तअ़ल्लुक़ से मज़कूरा वाक़ेया के जाली व झूट साबित होने के बाद क़ारेईने किराम के लिए यह समझना आसान हो गया कि ह़सन इब्ने ज़ियाद को बाज़ ह़ज़रात के कज़्ज़ाब व मतरूकुल ह़दीस वग़ैरह कहने के पीछे क्या राज़ पिनहां हो सकता है? मुआ़सिराना चश्मक, फ़िक़ही इजतिहाद या इस तरह़ का और कोई सबब।

बहर ह़ाल जो भी हो ह़सन इब्ने ज़ियाद पर जारेह़ीन की जरह़ ना मक़बूल व मरदूद है। ज़ैल में हम मशहूर अइम्मये दीन व माहेरीने फ़न्न के अक़वाल से साबित करते हैं:

- अल्लामा ज़हबी ने नाक़ेदीन की जरह़ को ज़िक्र करने के बाद तह़रीर फ़रमाया कि ह़सन इब्ने ज़ियाद के तअ़ल्लुक़ से इन सब जरहों के बावुजूद अबू अ़व्वाना ने अपनी मुस्तख़रज में और ह़ाकिम ने अपनी मुस्तदरक में उनकी ह़दीस ली है।
- मोह़द्दिस मुसलिमा बिन क़ासिम ने फ़रमाया कि ह़सन इब्ने ज़ियाद सिक़ह थे। (लिसानुल मीज़ान 3/48)
- मोह़म्मद बिन समाअ़ा ने फ़रमाया कि ह़सन इब्ने ज़ियाद ने कहा कि मैंने इब्ने ज़ुरैह़ से बारह हज़ार अह़ादीस लिखी हैं जिनकी फ़ुक़हा को ह़ाजत थी। (अत्तबक़ातुस्सुन्निय्यह फ़ी तराजेमिल ह़नफ़िय्यह लेतक़ीइद्दिन अल गज़्ज़ा अत्तमीमी मौतः 1010 हि0 1/225)
- अह़मद अब्दुल हुमैद ह़ारेसी ने कह कि मैंने ह़सन इब्ने ज़ियाद से ज़्यादा हुसने अख़लाक़ वाला, उनसे ज़्यादा क़ुर्ब से रहनुमाई करने वाला और उनसे ज़्यादा नर्म दिल किसी को नहीं देखा बावुजूद इसके कि वह अ़ज़ीम फ़क़ीह, आ़लिम और ज़ुहदो वरा के ह़ामिल थे।
- अह़मद बिन अ़ब्दुल हुमैद हारेसी ने यह भी कह कि ह़सन इब्ने ज़ियाद खुद जो लिबास पहनते थे अपने गुलामों को भी पहनाया करते थे, रसूलुल्लाह सल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वसल्लम की इस ह़दीस पर अ़मल करते हुए कि तुम गुलामों को वही पहनाओ जो तुम पहनते हो। (अत्तबक़ातुस्सुन्निय्यह फ़ी तरजेमिल ह़नफ़िय्यह 1/225)
- इमामे समआ़नी ने फ़रमाया कि ह़सन इब्ने ज़ियाद अबू ह़नीफ़ा की रिवायात कि आ़लिम और हुस्ने खुलक़ वाले थे। (अत्तबक़ातुस्सुन्निय्यह फ़ी तरजेमिल ह़नफ़िय्यह 1/226)
- यह़या इब्ने आदम ने फ़रमाया कि मैंने हसन इब्ने ज़ियाद से बड़ा फ़क़ीह नहीं देखा। (अत्तबक़ातुस्सुन्निय्यह फ़ी तरजेमिल ह़नफ़िय्यह 1/226)

● मेह़म्मद बिन शजा अस्सलजी जो सिक़ह, आ़दिल, साहिबे वरा व तक़वा, मोह़द्दिस व फ़क़ीह थे वह फ़रमाते हैं कि मैंने ह़सन इब्ने ज़ियाद को यह कहते हुए सुना कि मेरे चार साल इस ह़ाल में गुज़रे कि रात को कुतुबे अह़ादीसो फ़िक़ह और इबादत में गुज़ारने की वजह से चिराग़ मेरे सामने हुआ करता था।

● फ़िक़ह व ह़दीस के दर्स के दौरान तालिबे इल्म की ग़फ़लत को हरगिज़ बरदाश्त न करते थे। चुनांचे शैख़ इब्राहीम इब्नुल्लैस अद्दहक़ान ने अपने बाज़ असह़ाब से नक़्ल किया है कि ख़लीफ़ा हारून रशीद ने ह़सन इब्ने ज़ियाद से कह था कि हर हफ्ता एक दिन मामून के साथ मुज़ाकिरये फ़िक्हो ह़दीस किया करें। यह उस ज़माने की बात है जब ह़सन इब्ने ज़ियाद रुक़ा में थे। एक रात मुज़ाकिरये फ़िक़हो ह़दीस में मशगूल थे कि मामून को ओंघ आने लगी, ह़सन इब्ने ज़ियाद ने कहा आपने सुना ऐ! अमीर मामून ने चौक कर आंखें खोलीं मगर उसी वक़्त ह़सन इब्ने ज़ियाद ने उन्हें अपनी मजलिस से निकाल दिया। जब रशीद को यह ख़बर पहुँची तो उन्होंने यह शेर पढ़ाः–

तरजमाः ख़त्ती नेज़ा रगे दरख़्त की तरह़ गुथा हुआ ही होता है, खजूर का दरख़्त उगने की जगह ही लगाया जाता है।

(अख़बारे अबी ह़नीफ़ा व असह़ाबेही 1/137)

इस वाक़ेया से ह़सन इब्ने ज़ियाद के इल्मी रोबो दाब का जहां सुबूत फ़राहम होता है वहीं इल्मे ह़दीसो फ़िक़्ह के अदबो एह़तेराम का अंदाज़ा होता है।

● मोह़म्मद बिन यह़या अलह़जरी क़ाज़ीये मदायन ने कहा कि ह़सन इब्ने ज़ियाद ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस थे। उन्हें कूफ़ा में उ़हदये क़ज़ा दिया गया लेकिन वह ज़िम्मे दारी न उठा सके और मुसताफ़ी हो गये। (अखबाररुल कुज़ात लिइब्ने ह़िब्बान 3/188)

● इब्नुल असीर ने ह़सन इब्ने ज़ियाद की रिवायत से बाज़ अह़ादीस को ज़िक्र किया और उन पर कोई जरह़ नहीं की।

- हाफ़िज़ुल ह़दीस इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने ह़सन इब्ने ज़ियाद लोलुई की रिवायत से इमामे अबू ह़नीफ़ा की जानिब मन्सूब एक वाक़ेया नक़्ल करके उस पर कोई जरह़ नहीं की है बल्कि उसको इमामे अबू ह़नीफ़ा के फ़ज़ाइल में मुसतदल्ल और क़ाबिले एह़तेजाज माना है। (अल इन्तिफ़ा फ़ी फ़ज़ाइलिस्सलासतिल अइम्मतिल फ़ुक़हा 1/153) मालूम हुआ कि हाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र के नज़दीक ह़सन इब्ने ज़ियाद मुत्तहम नहीं और उनकी रिवायत मुनकर व नामक़बूल नहीं।
- इब्ने ह़िब्बान ने सिक़ात में ह़सन इब्ने ज़ियाद की एक रिवायत अ़न जुरैह़ की सनद से बिला जरह़ के ज़िक्र की है। मालूम हुआ कि उनके नज़दीक हसन इब्ने ज़ियाद मुत्तहम नहीं बल्कि सिक़ह हैं। (अस्सिक़ात 8/168 ह़दीस 12792)
- यह़या इब्ने आदम का क़ौल है कि हसन इब्ने ज़ियाद सुन्नत को बहुत ज़्यादा पसंद करते और सुन्नत के पैरोकार को भी। (अल जवाहिरुल मज़िय्यह फ़ी तबक़ातिल ह़नफ़िय्यह 1/193)

यह़या इब्ने आदम के तअ़ल्लुक़ से ज़हबी ने लिखा कि सुफ़याने सौरी के बाद यह़या इब्ने आदम सबसे बड़े मोह़द्दिस थे। (सियरो आलामिन्नुबला 5/175)

- अबुल मआ़ली अल ह़लबी ने ह़सन इब्ने ज़ियाद की बे नफ़्सी ओर उनके जज़्बये इत्तेबाये ह़क़ की दलील में उनका यह क़ौल ज़िक्र किया है कि जिस ग़ैर मन्सूस मसअले में हमने क़यास से कहा है कि यह राय ह़सन है उसका मतलब यह है कि हमने हत्तलमक़दूर कोशिश की है तो यह राय सबसे अच्छी मालूम हुई है। अगर कोई इससे उम्दा राय ले आये तो वह हमारी राय से ज़्यादा दुरुस्त है। (बअलजवाहिरुल मज़िय्यह 1/472)

हसन इब्ने ज़ियाद के तक़वे का एक नादिर वाक़ेया

अ़ल्लामा अ़ज़्ज़ी ने नक़ल फ़रमाया है कि इमामे ह़सन इब्ने ज़ियाद की दीनदारी और वरा का यह ह़ाल था कि एक मरतबा किसी साइल ने उनसे कोई मसअला दरयाफ़्त किया, उनहोंने जवाब में ख़ता की जब

साइल चला गया तो ह़सन इब्ने ज़ियाद के सामने ह़क़ ज़ाहिर हुआ। साइल को तलाश किया गया मगर न मिला तो ह़सन इब्ने ज़ियाद ने एक मुनादी को किराये पर लिया और पूरी आबादी में निदा कराई कि ह़सन इब्ने ज़ियाद से फुलां मसअला पूछा गया था, उन्होंने जवाब में खता की है लिहाज़ा साइल दोबारा उनके पास जाकर सही जवाब ह़ासिल कर ले। मुनादी यह एलान करता रहा यहां तक कि साइल आया और ह़सन इब्ने ज़ियाद ने उसको सही जवाब देकर वापस किया। इस वाक़ेया को सिक़ात की सनद के साथ अ़ल्लामा सैमरी ने *'अख़बारे अबू ह़नीफ़ा'* में भी नक़्ल किया है। (अत्तबक़कतुस्सनिय्यह 1/226)

कुछ ह़ासेदीन व मुतअ़स्सेबीन, फुक़हाये अह़नाफ़ को क़य्यास (क़यास करने वाले) कहते थे और क़यास करने को ऐब समझते थे। ह़ालांकि क़यासे शरई शरीअ़त के दलाइले अरबा में से एक दलील है जो किताबो सुन्नत और इजमा व सह़ाबा से मुस्तफ़ाद होता है। इससे एक नहीं हज़ारहा मसाइल मुस्तख़रज हुए हैं। इस लिहाज़ से क़य्यास, मुजतहिद फ़क़ीह कहा जाता है। लेकिन ह़ासेदीन व मुतअ़स्सेबीन इस को ग़लत माना में स्तेमाल करते थे। वह फुक़हाये मुजतहेदीन को क़य्यास इस माना में कहते थे कि वह ह़दीसे रसूल पर अपनी राये व क़यास को तरजीह़ देने वाले हैं।

किसी आदमी ने आपको और अपके असह़ाब को क़य्यास कहा तो आपने सख़्त बरहमी का इज़हार किया और फ़रमाया कि हमारे असहाब इल्मे ह़दीसो फ़िक़्ह के ख़ज़ाने हैं। हम ह़दीस के ख़िलाफ़ करने वाले नहीं। (अत्तबक़ातुस्सनिय्यह 1/277)

ह़सन इब्ने ज़ियाद फ़रमाते थे कि किताबुल्लाह या सुन्नते रसूल की कोई नस्स या इजमा के होते हुए किसी मुजतहिद को यह ह़क़ नहीं पहुंचता कि वह अपनी राय से कुछ कहे। जब किसी मसअले में सह़ाबये किराम के अक़वाल मुख़तलिफ़ हों तो हम उनमें से उस क़ौल को इख़्तियार करते हैं जो किताबो सुन्नत के ज़्यादा क़रीब होता है क्योंकि फुक़हाये सह़ाबा ने भी इजतिहाद किया है इजतिहाद का ह़क़ फुक़हा को है। उसी को जो इख़्तिलाफ़े अक़वाल का इल्म रखता हो और अच्छा

क़यास कर सकता हो। सहाबये किराम इस तरीक़े पर थे। (अलजौहरुल मज़िय्यह 2/472)

हसन इब्ने ज़ियाद का ही क़ौल है कि जो अल्लाह व उसके रसूल की तरफ़ से हो हम उससे सरे मू इनहेराफ़ नहीं करते और जिस में सहाबये किराम का इख्तिलाफ़ हो तो हम उनके क़ौले मुख़तार को लेते हैं और जो क़ौल उनके सिवा ताबेईन वग़ैरह से मनकूल हो तो हम अहनाफ़ उसे बिला दलील नहीं लेते। (अलजौहरु मज़िय्यह 2/473)

क़ारेईने किराम! आपने मुलाहज़ा फ़रमाया कि अल्लामा ज़हबी, अबू अव्वाना, हाकिम, मुसलिमा बिन क़ासिम, अहमद बिन अब्दुल हमीद हारेसी, समआनी, यहया इब्ने आदम (इमामे बुख़ारी व मुसलिम के दादा उस्ताज़), मोहम्मद बिन शजा सलजी (इन्हें इमामे ज़हबी ने इल्म का समन्दर कह, साठ से ज़ायद जिलदों में किताबुल मनासिक लिखी है। इबादत गुज़ार और तिलावते कुरआन में मशगूल रहने वाले थे, सजदे की हालत मे 266 हि0 में वफ़ात हुई), इब्ने हिब्बान और इब्ने अब्दुल बर्र समेत एक दरजन से ज़ाइद उलमाये हदीसो फ़िक़्ह व रिजाल ने हसन इब्ने ज़ियाद की तारीफ़ व तोसीफ़ की और उनको साहिबे वरा व साहिबे तक़वा कहा है। साथ ही साथ उनके तक़वा व वरा का नादिरे रोज़गार वाक़ेया भी आपने मुलाहज़ा फ़रमाया और उनके अक़वाल भी पढ़ चुके कि वह शरीअत के अहकाम और इत्तेबाये सुन्नत में किस क़द्र मोहतात थे और किस क़द्र ख़ौफ़े खुदा उन पर ग़ालिब था कि एक फ़तवा ग़लत देने के नतीजे में अपने मन्सब को पसे पुश्त डालते हुए ख़ौफ़े खुदा के जज़्बे से मग़लूब होकर अपनी ग़लती का उस वक़्त तक एलान करते रहे जब तक कि फ़त्वा तलब करने वाला दोबारा आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर सही फ़त्वा लेकर वापस नहीं लौटा। एक तरफ़ आपके तक़वा व अदालत पर शवाहिदो दलाइल हैं और दूसरी तरफ़ जारेहीन की मुबहम व ग़ैर मुदल्लल जरहे हैं। क्या इन्साफ़ यही कहता है कि जारेहीन की ग़ैर मुदल्लल जरहों को मान लिया जाए और एक साहिबे तक़्वा मोहद्दिस, मुजतहिद, फ़क़ीह को कज़्ज़ाब हत्ताकि ग़ैर अख़लाक़ी अफ़आल का मुरतकिब क़रार दिया जाए? बल्कि उसके मुसलमान होने को मश्कूक ठहराया जाए?

अइम्मये अह़नाफ़ के ख़िलाफ़ वहाबी ग़ैर मुक़ल्लेदीन को बुग्ज़ो इनाद पर मबनी क़बीह़ अक़वाल मिलते हैं तो वह उनहें अपने लिए रूहानी ग़िज़ा तसव्वुर करके बड़ी लहक के साथ क़बूल करते हैं फिर खूब डंका पीट–पीट कर एलान करते हैं।

देखिए वहाबिया के मशहूर वकील ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई नाक़ेदीन के अक़वाल को आड़ बना कर ह़सन इब्ने ज़ियाद लोलुई जैसे मोह़द्दिसो फ़क़ीह पर कैसी मुग़ल्लज़ात की छींटाकशी की है।

इब्ने मईन ने कहा है कि ''वह कज़्ज़ाब है''। राक़िम ने माक़बल मे इसका तनक़ीदी जायज़ा पेश किया। इब्ने मईन का यह क़ौल ग़ैर मुसतनद है इसकी कोई मोतबर सनद मौजूद नहीं।

मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने नुमैर ने कहा कि ''इब्ने जुरैह़ पर झूट बोलता है'' इब्ने नुमैर का यह क़ौल जम्हूरे नाक़ेदीने ह़दीस के खिलाफ़ है। लिहाज़ा तनहा उनका यह क़ौल हुज्जत नहीं हो सकता।

अबू दाऊद ने 'कज़्ज़ाब' कहा। अबू दाऊद का यह क़ौल एक तो बिला सनद है और दूसरे तनहा इब्ने नुमैर के क़ौल पर मबनी है। लिहाज़ा नामक़बूल है।

मोह़म्मद बिन राफ़े नीसापुरी ने कहा कि यह शख्स इमाम से पहले सर उठाता था और इमाम से पहले सजदा करता था।

तबसराः मोह़म्मद बिन राफ़े नीसापुरी का यह क़ौल एक तो बिला सनद है दूसरे यह कि मोह़म्मद बिन राफ़े नीसापुरी इब्ने नुमैर के शागिर्द हैं तो ज़ाहिर है कि इब्ने नुमैर का नज़रिया ह़सन बिन ज़ियाद के तअ़ल्लुक़ से उसी क़िस्म का है तो क्या बईद कि शागिर्द का भी वही नजरिया हो। इसके अ़लावा ह़सन इब्ने ज़ियाद मोह़द्दिस फ़क़ीह मुजतहिद थे। ज़हबी ने भी उनकी तारीफ़ की है। इमाम से पहले सजदा करना, सर उठाना तो लाइल्मी की वजह से होगा। एक फ़क़ीह मुजतहिद से आ़दतन यह सूरत मुमकिन नहीं और जान बूझ कर ऐसा करना एक ऐसे फ़क़ीह मुजतहिद से क्योंकर मुमकिन है जिसने एक ग़लत मसअला बयान करने पर अपनी ग़लती का उस वक़्त तक एलान करवाया जब तक कि साइल ने दोबारा ह़ाज़िर होकर सही जवाब

हासिल न कर लिया। नीज़ जिसके जुहदो वरा की तारीफ़ जलीलुल क़द्र मोहद्देसीन मसलन यह्या इब्ने आदम, इमामे ज़हबी, मुसलिमा बिन क़ासिम वग़ैरह ने की है और इब्ने अ़व्वामा और हाकिम ने उनकी हदीस की तख़रीज की है।

यह शवाहिद यह साबित कर रहे हैं कि इस क़ौल में सदाक़त नहीं मोहम्मद बिन राफ़े को या तो यह ग़लत बात पहुंची है या उनकी तरफ़ किसी ने ग़लत मन्सूब किया है। चूंकि यह क़ौल लिसानुल मीज़ान में मनकूल है और अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़सक़लानी से मोहम्मद बिन राफ़े तक इसकी कोई सनद मज़कूर नहीं। अगर हाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई साहिब के हमनवा अपनी इस बात में सच्चे हैं कि किसी की कोई बात बिला सनद मक़बूल नहीं तो वहाबी बरादरी मिलकर हसन इब्ने ज़ियाद की जानिब मन्सूब इस नाजाइज़ फ़ेल की कोई सही सनद पेश करें वरना एलान करदें कि अइम्मये अहनाफ़ के ख़िलाफ़ किसी बात के सुबत के लिए उनके यहां सनद की ज़रूरत नहीं।

हाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई ने मज़ीद लिखाः

'' हसन इब्ने हलवानी ने बताया कि मैंने उसे देखा कि उसने सजदे की हालत में एक लड़के का बोसा लिया। अबू सौर ने कहा कि मैंने उससे ज़्यादा झूटा नहीं देखा। नमाज़ की हालत में वह एक नौ उम्र लड़के जिसकी दाढ़ी मोंछ नहीं थी के रुख़सार पर हाथ फेरता था। यज़ीद बिन हारून ने तअ़ज्जुब से कहा कि क्या यह मुसलमान है? उसामा उसे ख़बीस कहते थे। याकूब बिन सुफ़यान, उक़ैली और अस्साजी ने कहा 'कज़्ज़ाब' है।'' (मुलख्खसन मिन लिसानिल मीज़ान 1/208–209, नूरुल ऐनैन प्र0 39 जुबैर अ़ली ज़ई)

यह सब लिखने के बाद हाफ़िज़ साहिब अपने दिल की भड़ास निकालते हुए लिखते हैः

'' ऐसा गन्दा शख़्स डेरवी साहब (कोई देवबन्दी हनफ़ी मोलवी है जिसने जुबैर अ़ली ज़ई को मुखातब किया था) का 'हज़रते इमामे' है। (ऐज़न)

जुबैर अ़ली ज़ई साहिब को हसन इब्ने ज़ियाद के तअ़ल्लुक़ से क़बीह अक़वाल तो नज़र आ गये और फ़ैसला भी सुना दिया कि हसन इब्ने ज़ियाद जो हनफ़ियों का हज़रते इमाम है 'गन्दा शख़्स' है लेकिन

यहां ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई साह़िब के ह़ामियों के जज़्बये अ़दलो इंसाफ़ (अगर है) को दावते फ़िक्र देना चाहता हूँ कि ह़ाफ़िज़ साह़िब के ज़ौक़े जुस्तुजू में आख़िर वह कौन सी फ़िक्र कार फ़रमा थी कि एक दर्जन से ज़ायद उलमा व मोह़द्देसीन के अक़वाल जिनसे ह़सन इब्ने ज़ियाद का जलीलुल क़द्र मोह़द्दिस, फ़क़ीह और मुजतहिद होना, साह़िबे हुस्ने खुल्क़ होना, साहिबे वरा व तक़्वा होना और क़ाबिले मदह़ होना साबित होता है, ह़ाफ़िज़ साहिब की नज़र से ओझल क्यों रह गये ? क्या उन्हें नज़र नहीं आया कि ह़सन इब्ने ज़ियाद से इमामे बुख़ारी व मुसलिम के उस्ताज़ शैख अबू अ़वाना ने अपनी किताब ' मुसतख़रज' में ह़दीस ली है? क्या यह नज़र नहीं आया कि इमामे ह़ाकिम ने 'मुसतदरक' में उनसे रिवायत ली है? क्या यह नज़र नहीं आया कि जलीलुल क़द्र मोह़द्दिस मुसलिमा बिल क़ासिम ने ह़सन इब्ने ज़ियाद को सिक़ह कह? (मुमकिन है कोई ग़ैर मुक़ल्लिद कह दे कि उन्हें अहले तशबीह में से कहा गया है तो उस पर अर्ज़ है कि यह क़ौल मरदूद है। इमामे ज़हबी ने फ़रमाया है कि यह जलीलु क़द्र आदमी हैं इन्हें इनके दुश्मनों ने अहले तश्बीह कहा है। रज़ा 12)

क्या ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली साह़िब को नज़र नहीं आया कि इमामे बुख़ारी व मुसलिम के दादा उस्ताज़ यह़या इब्ने आदम ने ह़सन इब्ने ज़ियाद की मदह़ करते हुए लिखा है कि मैंने उनसे बड़ा फ़क़ीह किसी को नहीं देखा। मज़ीद तअस्सुरात पिछले सफ़ह़ात पर मुलाह़ज़ा करें। इतने सारे मोह़द्देसीन व अइम्मा कि अक़वाल ह़सन इब्ने ज़ियाद की जलालते शान, तफ़क़्क़ो, इल्मे ह़दीस में महारत और उनके तक़्वा व वरा पर मोजूद होने के बावुजूद क्या अह़नाफ़ को यह ह़क़ ह़ासिल नहीं कि उन्हें अपना 'ह़ज़रत इमाम' कहें? इमामे ह़सन इब्ने ज़ियाद के तअ़ल्लुक़ से ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई का इतने सारे अइम्मा व मोह़द्देसीन व फ़ुक़हा के अच्छे अच्छे अक़वाल के पसे पुश्त डाल कर उनके ख़िलाफ़ मुआ़नेदीन के ग़ैर मुसतनद अक़वाल को क़बूल करके ह़सन इब्ने ज़ियाद को 'गन्दा शख़्स' कहना यक़ीनन ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई के खुब्से बातिन की दलील है। रह गये उनके तअ़ल्लुक़ से बाज़ अइम्मा की

जरह़ के अक़वाल नक़ल करना तो नक़्ले अक़वाल चूंकि मह़ज़ बतौर नक़्ल हैं जम्हूरे मोह़द्देसीन ने उन्हें कज़्ज़ाब व मुत्तहम नहीं कहा है। बल्कि नक़्ले अक़वाल के बाद अपनी हुस्ने राय का इज़हार किया है। इसलिए वह इस पर माखूज़ नहीं होंगे। इंशा अल्लाह तआ़ला।

अब ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई के ह़ामियों की ज़ियाफ़ते तबा के लिए हम ह़सन इब्ने ज़ियाद के ख़िलाफ़ ज़िक्र किए गए अक़वाले क़बीह़ा की इसनादी ह़ैसियत का जायज़ा लेते हैं।

(1) ह़सन बिन अ़ली ह़लवानी के ह़वाले से जो क़बीह़ बात नक़्ल की गई है उसके ग़ैर मोतबर व मरदूद होने की दलील के लिए यही काफ़ी है कि ह़सन बिन अ़ली ह़लवानी उन लोंगों में से थे जो मसअलये ख़ल्क़े कुरआन के मुआ़मले में उन लोगों के सख़्त मुख़ालिफ़ थे जो कुरआन यानी मुसह़फ़े कुरआन मसलन नुकूश, अलफ़ाज़ वग़ैरह के मख़लूक़ होने के लिहाज़ से कुरआन को मख़लूक़ कहते थे। ह़सन इब्ने ज़ियाद और इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा और आपके दीगर शागिर्दों को इसी बुनियाद पर हदफ़े मलामत बनाया गया है। हालांकि इन अइम्मा के नज़दीक भी कुरआन कलामुल्लाह ग़ैर मख़लूक़ है। यह एक लफ़्ज़ी इख़्तिलाफ़ था लेकिन इसने जो फ़ित्ना व फ़साद का बाज़ार गरम किया था उससे हर अहले इल्म बाखबर है। कुरआन के नुकूश व अलफ़ाज़ को मख़लूक़ कहने वालों को फ़िरक़ये जहमिया में दाख़िल करके उन पर बिदअ़तो गुमरही की मुहर लगाई गई थी। यह एक अहम सबब था मुजतहेदीन व मोह़द्देसीने अह़नाफ़ पर जरह़ क़दह़ के तीर बरसाने का। यही वजह है कि जिन ह़ज़रात को ह़क़ीक़ते ह़ाल मालूम हुई कि इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा और उनके असह़ाब कुरआन को ग़ैर मख़लूक़ मानते हैं और फ़िरक़ये जहमिया से कोई तअ़ल्लुक़ नही तो उन्होंने इमामे आज़म और आपके असह़ाब की तरफ़ से सफ़ाई भी दी और उनकी खूब मदह़ व सना की। ह़सन बिन अली अलह़लवानी ह़सन इब्ने ज़ियाद के तअ़ल्लुक़ से ऐसी ही ग़लत फ़हमी के शिकार थे। लिहाज़ा उनकी तरफ़ ह़सन इब्ने ज़ियाद के तअ़ल्लुक़ से जो क़ौल मन्सूब है वह नामक़बूल है क्योंकि मुख़ालिफ़ का क़ौल अपने ह़रीफ़ के ह़क़ में बिला दलील नामक़बूल है।

इसके अ़लावा ह़सन बिन अ़ली ह़लवानी के तअ़ल्लुक़ से इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल के साहि़ब ज़ादे अ़ब्दुल्लाह ने यह नक़्ल किया है कि 'मेरे वालिद (इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल) ने ह़सन बिन ह़लवानी को अच्छा नहीं कहा और कहा कि मुझे उनके बारे में कुछ नापसंद बातें पहुंची हैं, फिर कहा अहले सरह़द उनसे राज़ी नहीं हैं। (अल इलल 1616 मोसूअ़तु अक़्वालिल इमामे अह़मद बिन ह़म्बल 1/260)

यहां पर कोई अहले ह़दीस यह कह कर धौंस जमाने की कोशिश न करे कि ह़लवानी साह़ब तो बुख़ारी व मुसलिम के रावी हैं फिर उन पर जरह़ कैसी? यह बात इसलिए नहीं चलेगी हम बरादराने अहले ह़दीस को यही समझाना चाहते हैं कि कोई रावी किसी नाक़िदे ह़दीस के नज़दीक मजरूह हो तो यह लाज़िम नहीं आता सारे मोह़द्देसीन के नज़दीक मजरूह़ हो क्योंकि जरह़ो तादील के उसूल सबके यहां अलग अलग हैं। फिर उलमाये ह़दीस भी तो यह बात मानते हैं कि कभी सिक़ह रावी भी ग़लत बात नक़्ल कर देता है। चुनांचे ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी मौलवी किफ़ायतुल्लाह सनाबिली ने लिखा है।

(2) रह गई यज़ीद बिन हारून की जरह़ तो वह भी नामक़बूल है। क्योंकि तअ़ज्जुब से यज़ीद बिन हारून का यह कहना "क्या यह मुसलमान है"? इस बात का इशारह देता है कि वह ह़सन इब्ने ज़ियाद को या काफ़िर समझते थे या गुमराह व फ़ासिक़ और इस पर कोई शरई दलील नहीं। यज़ीद बिन हारून, ह़लवानी के शैख़ हैं इसलिए ग़ालिबे गुमान यही है कि ह़लवानी की तरह़ यज़ीद बिन हारून भी कुरआन कलामे लफ़्ज़ी को मख़लूक़ कहने की वजह से ह़सन बिन ज़ियाद और उनके असह़ाब को जहमिया में से तसव्वुर करते थे लिहाज़ा यह कह दिया कि क्या वह मुसलमान है?

ह़ालांकि ह़क़ीक़त यह है कि यह बात सरासर ग़लत फ़हमी पर मबनी है। ह़सन बिन ज़ियाद और उनके असह़ाब कुरआन कलामुललाह को मख़लूक़ नहीं कहते बल्कि अल्फ़ाज़ व नुक़ूश को मखलूक़ कहते हैं। जब जरह़ की बुनियाद ही बातिल है तो जरह़ भी बातिल व मरदूद ठहरी।

(3) अबू सौर ह़सन इब्ने ज़ियाद के मुआ़सिर थे और उनकी वफ़ात 240 हि0 में है। लिहाज़ा अबू सौर की जरह़ ह़सन बिन ज़ियाद के तअ़ल्लुक़ से बिला दलील ग़ैर मोतबर है।

(4) अबू उसामा की जरह़ भी ग़ैर मुफ़स्सर है किसी को कोई ख़बीस कहे तो उसकी तौज़ीह़ व सुबूत की शहादत के बग़ैर गाली तसव्वुर की जाती है। यह जरह़ मुबहम है लिहाज़ा मरदूद है।

(5) याक़ूब, उक़ैली और अस्साजी का कज़्ज़ाब कहना बिला दलील व बिला शवाहिद है लिहाज़ा मरदूद है।

एक अ़रब मोह़क़्क़िक़ मोह़म्मद ह़सन इस्माईल, अ़ल्लामा ऐनी की किताब *'मआ़नियुल अख़यार फ़ी शरहे उसामीये रिजाले मआ़निल आसार'* के ह़ाशिये में लिखते हैं:

''तबक़ातुल क़ारी में ह़सन बिन ज़ियाद को इस उम्मत के मुजद्देदीन में शुमार किया गया है। ऐसा ही इब्नुल असीर की किताब *'मुखतसर ग़रीब अह़ादासिल कूतुबिस्सित्ता'* में है। मैं कहता हूं कि उम्मीद यही है कि हसन बिन ज़ियाद पर जरहें सही नहीं और हों भी तो अव्वले ह़ाल में मुआ़मला ऐसा हो सकता है फिर रुजू हो गया होगा। ऐसे ह़ज़रात के बारे में इस तरह़ की तावील ज़रूरी है, वरना अहले सुन्नत व जमाअ़त के सिक़ह व मज़बूत रावियों की एक बड़ी तादाद हमारे हाथ से निकल जायेगी।''

(6) ह़सन ह़लवानी की तरह़ मोह़म्मद बिन हुमैद बिन ह़य्यान राज़ी (मौतः 248 हि0) का क़ौल ''मैंने ह़सन बिन ज़ियाद से ज़्यादा बुरी नमाज़ पढ़ने वाला किसी को नहीं देखा'' भी मरदूद व नामक़बूल है। क्योंकि मोह़म्मद बिन हुमैद राज़ी खुद मोह़द्देसीन के यहां सख़्त मजरूह़ हैं।

ज़हबी ने उन्हें मुनकिरुल ह़दीस, साह़िबे अजाइब कहा।

बुख़ारी ने कहा ''इसमें नज़र है'' यानी उनसे रिवायत लेना जाइज़ नहीं।

निसई ने कहा ''सिक़ह नहीं हैं।'' (सियरो आलामिन्नुबला 11/504–506)

अबू ज़रआ़ और इब्ने वारा ने कहा ''हमारे नज़दीक सही यह है कि वह झूट बोलता था।''

याक़ूब इब्ने शैबा ने कहा ''वह ज़्यादा मुनकर रिवायात लाने वाले हैं।'' (मौसूअ़तो अक़वालिल इमामे अह़मद फ़ी रिजालिल ह़दीस व इललेही 2/255)

कौसज ने कहा ''मैं गवाही देता हूं कि वह कज़्ज़ाब है।''

सालेह़ जज़्रा ने कह '' मैंने उनसे ज़्यादा अल्लाह पर जरी नहीं देखा। लोगों की अह़ादीस लेता था और बाज़ को बाज़ पर उलट फेर कर देता था।''

इब्ने खर्राश ने कहा ''हमसे ह़दीस बयान की इब्ने हुमैद ने और वल्लाह वह झूट बोलता था।'' (मीज़ानुल एतेदाल 3/531, दीवानुज़्ज़ाफ़ा लिज़्ज़हबी 1/348)

सालेह़ बिन मोह़म्मद ने कहा ''मह इब्ने हुमैद को मुत्तहम कहते थे।''

अबुल अ़यास ने कहाः ''मैंने 'फ़ज़लक' को यह कहते हुए सुना कि मैं इब्ने हुमैद के पास आया तो देखा कि वह असानीद को मुतून पर फिट कर रहा था।''

ज़हबी कहते हैं कि यही मतलब है ह़दीस चोरी करने का।

सालेह़ मोह़म्मद अलअसदी ने कहाः ''मैंने सुलैमान शाज़कोनी और मोह़म्मद बिन हुमैद से ज़्यादा झूट का माहिर नहीं देखा।''

अबू अ़ली नीसापुरी ने कहाः ''इब्ने खुज़ैमा से कह गया कि अह़मद बिन ह़म्बल तो इब्ने हुमैद की तारीफ़ करते थे तो इब्ने खुज़ैमा ने कह कि वह (अह़मद इब्ने ह़म्बल) इब्ने हुमैद को नहीं जानते थे अगर जानते जैसा कि हम जानते हैं तो कभी उसकी तारीफ़ न करते।

अबू इसह़ाक़ जौज़जानी ने कहाः ''वह सिक़ह नहीं।''

इतने मुह़द्देसीन ने मोह़म्मद बिन हुमैद राज़ी को मजरूह़, मुनकिरुल ह़दीस, ग़ैर सिक़ह ह़त्ताकि कज़्ज़ाब और वज़्ज़ा कहा है तो ह़सन इब्ने ज़ियाद जैसे इमामे मुजतहिद मोह़द्दिस के ख़िलाफ़ उनकी बात बिला दलील व सनद क्यों मोतबर होगी?

अ़रब मोह़क़्क़ेक़ीन के नज़दीक ह़सन इब्ने ज़ियाद सिक़ह हैं

मशहूर अ़रब मोह़क़्क़िक़ शैख़ शुऐब अरनऊत की निगरीनी में मोह़क़्क़ेक़ीन की एक टीम ने इमामे ज़हबी की किताब सियरो आलामिन्नुबला पर तह़कीक़ व तह़शिया का काम अंजाम दिया है जिसे

मोअस्ससतुर्रिसाला बैरूत ने 25 जिलदों में दूसरी बार 1405 हि0/1985 ई0 में शाये किया है। इस किताब की जिल्द न0 9 प्र0 544 के हाशिया न0 9 में यह लिखा है:

''हसन इब्ने ज़ियाद की एक मारूफ़ मुसनद है जो अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहे अलैहे की मरवियात पर मुशतमिल है। यह मुसनद इमामे अबू हनीफ़ा की 17 मसानीद में से एक है। उन सब की असानीद हाफ़िज़ बिन तूलून की किताब *'अलफ़हरस्तुल औसत'* में, हाफ़िज़ मोहम्मद बिन यूसुफ़ अस्सालिही की किताब *'उक़ूदुल जमान'* में, शैख अय्यूब बिन अहमद अद्दिमशक़ी अलख़लूती की किताब *'सबतुल मुसनद'* में और शैख़ सनदी की *'हस्रुश्शारिद फ़ी असानीदे मोहम्मद इब्ने आबिद'* में मज़कूर हैं। हसन इब्ने ज़ियाद की मुसनद की सनद को मोहद्दिस अली बिन अब्दे मोहसिन दुवैलिबी हम्बली ने अपने नुस्ख़े में ज़िक्र किया हैं जो दिमश्क़ के कुतुबख़ाने में फ़न्ने हदीस में 285 न0 के तहत महफ़ूज़ है फिर हाशिया न0 3 और प्र0 न0 545 के हाशिये पर लिखाः

''इमामे ज़हबी ने तारीखुल इस्लाम मे साफ़ लिखा कि इब्ने कासा नख़ई ने कहा हमसे बयान किया अहमद बिन अब्दुल हुमैद हारिसी ने, उन्होंने कहा मैंने हसन इब्ने ज़ियाद से ज़्यादा हुस्ने खुल्क़ वाला, उनसे ज़्यादा तवाज़ो वाला और उनसे ज़्यादा नर्म दिल नहीं देखा। वह बहुत ज़्यादा इल्मो फ़िक़्ह वाले और ज़ोहदो वरा वाले थे। अपने गुलामों को वही पहनाते थे जो खुद पहनते थे। अल्लामा सैमरी ने अपनी किताब *'अख़बारे अबी हनीफ़ा व असहाबेही'* के प्र0 131 पर, ख़तीब बग़दादी ने अपनी तारीख़ के भाग न0 7 प्र0न0 314– 315 पर यही लिखा और यहया इब्ने आदम ने कहा मैंने हसन इब्ने ज़ियाद से ज़्यादा बड़ा फ़क़ीह किसी को नहीं देखा। जो शख़्स यहया इब्ने आदम को जानता है और यह जानता है कि इल्म में उनका क्या मरतबा है? और फ़ुक़हा में से जिन्होंने उनको देखा है वह यह जानेंगे कि यहया इब्ने आदम की हसन इब्ने ज़ियाद के हक़ में गवाही की क्या अहमियत है? फिर यह कि अबू अव्वाना ने हसन इब्ने ज़ियाद की हदीस को अपनी मुसतख़रज अला सही मुसलिम में तखरीज की है और हाकिम ने भी अपनी मुसतदरक में।

दोनों का यह अ़मल ह़सन इब्ने ज़ियाद की तौसीक़ का शाहिद है और मुसलिमा बिन क़ासिम ने उनको सिक़ह कहा है। इब्ने ह़िब्बान ने सिक़ात में ज़िक्र किया जैसा कि साह़िबे कशफ़ुल अस्तार अ़न रिजाले मआ़निल आसार ने ज़िक्र किया है। बावुजूद इसके कि यह इमामे ह़सन इब्ने ज़ियाद जलीलु क़द्र आ़लिमे दीन, कसीरुर्रिवायत मोह़द्दिस, इमामुल फ़िक़्ह, आ़ली नफ़्स, बुलन्द किरदार और मुत्तबेये सुन्नत थे। बाज़ ह़ासेदीन व मुतअ़स्सेबीन ने ज़ुल्मो सरकशी की बुनियाद पर उन पर तान व तश्नी की ऐसी बातें चस्पां करने से गुरेज़ नहीं किया जिनके ज़िक्र करने से ह़या आती है। उन्होंने यह बातें ऐसी शख़्सियत पर गढ़ी हैं जो उनसे पाक है। ह़ालांकि नोक़ेदीन पर लाज़िम था कि वह अपनी किताबों को तान की इन बातों से आलूदा करने से पाक रखते और अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ करते या कम से कम इतना करते कि उन्हें नक़्ल करके उनके कमज़ोर और जाली होने को बयान कर देते ताकि नाक़ेदीन पर भरोसा करने की वजह से क़ारेईन धोके में न पड़ते। और ज़न्ने ग़ालिब यह है कि ज़हबी ने उन क़बीह़ बातों के ज़िक्र से एराज़ किया है क्योंकि उन्हें पता था कि यह सब बातिल हैं जो ह़सदो तअ़स्सुब के पेट से पैदा हुई हैं। चुनांचे उन्होंने तारीखुल इस्लाम भाग 11 में ह़सन बिन ज़ियाद के तरजमें में लिखा है कि ख़तीब ने उनके तअ़ल्लुक़ से ऐसी बातें नक़्ल की हैं जिनका ज़िक्र करना मुनासिब नहीं। अ़ल्लामा कौसरी ने अपनी किताब *'अलइमतिना'* प्र0 36–50 में तारीख़े बग़दा, कामिल इब्ने अ़दी, उक़ैली की अज़्ज़ोफ़ा के ह़वाले से उन बातों को नक़्ल करके उनका रद्द किया है और उनके बातिल व न मक़बूल होने को वाज़ेह़ तौर पर बयान किया है।

उलमाये अहले ह़दीस जवाब दें

(1) बुख़ारी के रावी सालिम बिन अबिल जाद को मुदल्लेसीन में शुमार किया गया है।

- ज़हबी ने कहाः ''वह मुदल्लिस थे। (अलमुदल्लेसीन लेइब्निल इराक़ी 1/51)

- इब्ने ह़जर असक़लानी ने उनको 'तबक़ाते मुदल्लेसीन' में ज़िक्र किया है। (ऐज़न 1/31)
- सिब्ते इब्निल अजमी ने असमाये मुदल्लेसीन में ज़िक्र किया है। (अत्तबयीन लेअस्माये मुदल्लेसीन 1/25)

बुख़ारी में ह़दीस 266 बाब *'मन अफ़रग़ बियमीनिही अ़ला शिमालिही फ़िलगुस्ल'* में सालिम बिन अबिल जाद की सनद यूं है:

''सालिम बिन अबी अलजाद से वह कुरैब मौला इब्ने अ़ब्बास से वह इब्ने अ़ब्बास से वह मैमूना बिन्ते ह़ारिस से''

उलमाये अहले ह़दीस जवाब दें कि सालिम बिन अबी अल जअ़द मुदल्लिस हैं और उन्होंने कुरैब से रिवायत करने में सिमा की सराह़त नहीं की है बल्कि लफ़्ज़े 'अ़न' से रिवायत किया है और मुदल्लिस की 'अ़न' वाली रिवायत सही नहीं जैसा कि ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई ने लिखा 'ह़दीसे मोअ़म्मल' मोअ़म्मिल की वजह से ज़ईफ़ नहीं बल्कि सुफ़याने सौरी की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है। (नमाज़ में हाथ बान्धने का हुक्म व मुक़ाम प्र0 20)

ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई साह़िब सुफ़यान की तदलीस की वजह से ह़दीस को ज़ईफ़ कह रहे हैं तो सालिम बिन अबिल जअ़द की तदलीस की वजह से बुख़ारी की ह़दीस ज़ईफ़ क्यों नहीं?

(2) कुलैह बिन सुलैमान बुख़ारी व मुसलिम के रावी हैं। उनके तअ़ल्लुक़ से नाक़ेदीन की आरा मुलाह़ज़ा करें।

- यह़या इब्ने मईन ने कहाः ''ज़ईफ़ है, क़वी नहीं न ही क़ाबिले हुज्जत।''
- इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल ने फ़रमाया कि यह़या इब्ने मईन ने कहाः ''तीन आदमियों की ह़दीस से परहेज़ किया जाए। मोह़म्मद बिन तल्ह़ा बिन मुसरिफ़, अय्यूब बिन उत्बा ओर कुलैह बिन सुलैमान।''
- अबूदाऊद ने फ़रमाया कि मुझे पता चला कि यह़या बिन मईन कुलैह बिन सुलैमान की अह़ादीस सुनकर कॉप उठते थे। अबू दाऊद ने कहा कुलैह क़ाबिले एह़तेजाज नहीं।

- अबू उबैद अलआजुरी ने कहा कि मैंने अबूदाऊद से कहा कि यह़या बिन मईन ने कहा कि आ़सिम बिन उबैदुल्लाह, इब्ने अ़क़ील और कुलैह की ह़दीस क़ाबिले एह़तेजाज नहीं तो दाऊद ने कह हॉ सच है।
- निसई ने कहा कि कुलैह ज़ईफ़ है।
- साजी ने कहाः ''उन पर सबसे बड़ी तोहमत वह है जो इब्ने मईन ने अबू कामिल से ज़िक्र किया है। उन्होंने कहा कि हम कुलैह को मुत्तहम (बिलकिज़्ब) मानते थे कयोंकि सह़ाबा को गालियां देता था। (सियरो आलामिन्नुबला 7/354)
- दारकुत्नी ने कहा कि अह़मद बिन शुऐब निसई ने कहा कि मोह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने सुहैल बिन अबू सालेह़ की ह़दीस को अपनी किताब (सह़ी बुख़ारी) में ज़िक्र नहीं किया और इब्ने बक्र, अबू सुलैमान और कुलैह की ह़दीस को ज़िक्र किया। इसकी कोई वजह मेरी समझ में नहीं आती और कोई उज़्र समझ में आता है। (मौसूअ़तो अक़वालिल इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल 2/521)

उलमाए अहले ह़दीस जवाब दें कि कुलैह बिन सुलैमान को मज़कूरा बाला माहेरीने ह़दीस ने ज़ईफ़, ग़ैर सिक़ह, नाक़ाबिले एह़तेजाज और मुत्तहम कहा है फिर भी इमामे बुख़ारी ने सह़ी बुख़ारी में एक नहीं 19 अह़ादीस कुलैह बिन सुलैमान की सनद से तख़रीज की हैं। बुख़ारी की यह अह़ादीस सह़ी हैं या नहीं? अगर सह़ी हैं तो क्यों?

(3) असबग़ बिन अलफ़र्ज (मौतः 225 हि0) बुख़ारी के उसताज़ हैं। उनसे बुख़ारी ने अपनी सह़ी में ह़दीस तख़रीज की है। यह दयारे मिस्र के मुफ्ती थे। इमामे मालिक के क़ौल पर फ़त्वा देते थे।

ज़हबी ने लिखा कि यह मालिकी मुफ्ती थे।

यह़या बिन मईन ने कहाः

''असबग़ इमामे मालिक की राय के सब से बड़े आ़लिम थे। उनके एक एक मसअले का इल्म रखते थे कि इमामे मालिक ने वह मसअला कब बयान किया? और किस मसअले में इमामे मालिक की किसने मुख़ालफ़त की?

उनके सिक़ह होने के बावुजूद इमामे ज़हबी लिखते हैं कि असबग़ और अ़ब्दुल ह़कीम दोनों के दरमियान ऐसी दूरी थी कि दानों एक दूसरी पर बुहतान तराशी किया करते थे। इब्नुल वज़ीर ने असबग़ को ख़बीसुल्लिसान कहा है। मुतरिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह अलअसम ने कहा कि असबग़, अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्दुल ह़कीम से बड़े फ़क़ीह थे लेकिन वह बदजुबान थे इन्हें कोई सलाम नहीं करता था। वह बिजली थे जिससे लोग डरते थे। (सियरो आलामिन्नुबला 10/657–658)

अहले ह़दीस ग़ैर मुक़ल्लेदीन उलमा जवाब दें कि बुख़ारी के रावी असबग़ पर उनके मुआ़सिर की जानिब से बुग़ज़ो अ़दावत की वजह से बुहतान तराशी हो सकती है बल्कि है तो इमामे ह़सन इब्ने ज़ियाद पर बुहतान तराशी की बुनियाद पर बुग़ज़ो इनाद व तअ़स्सुब क्यों नहीं हो सकता? और असबग़ बाज़ लोगों के नज़दीक 'बदजुबान' से मुत्तहम होने के बावुजूद बुख़ारी के सिक़ह रावियों में शुमार हो सकते हैं तो इमामे ह़सन इब्ने ज़ियाद बाज़ के नज़दीक मुत्तहम होने के बावुजूद इमामे आज़म के सिक़ह रावियों में क्यों नहीं हो सकते?

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा पर एक संगीन इलज़ाम का जवाब

ख़वारिजे ज़माना (वहाबी ग़ैर मुक़ल्लेदीन) इमामे अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अलैह पर एक संगीन इलज़ाम का खूब चर्चा करते हैं। वह यह है कि अबू ह़नीफ़ा को कूफ़ा में कुफ्र से तौबा कराई गई "मआज़ल्लाह असतग़फ़िरुल्ला" यह एक झूटा इल्ज़ाम है। इसकी ह़क़ीक़त क्या है? ज़ैल में हम उसको वाज़ेह़ करते हैं:

अबुलफ़ज़ल अलकिरमानी कहते हैं कि ख़वारिज कूफ़ा में दाख़िल हुए। उनका नज़रिया यह था कि गुनाहे कबीरा का मुरतकिब काफ़िर है और उसे जो काफ़िर न कहे वह भी काफ़िर है। जब उनको मालूम हुआ कि इमामे अबू ह़नीफ़ा मुरतकिबे कबीरा को काफ़िर न कहने वालों के शैख़ हैं तो उन्होंने इमाम का मुवाखज़ा किया और कहा कि आप मुरतकिबे कबीरा को काफ़िर न कहने की वजह से कुफ्र के मुरतकिब हो

चुके हैं, इसलिए अपने कुफ़्र से तौबा कीजिए। इमाम ने पुर हिकमत जवाब देते हुए फ़रमाया कि मैं हर कुफ़्र से ताइब हूँ (हर कुफ़्र से अलग होकर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह हूँ)। आपकी यह पुर हिकमत बात हर एक की समझ में न आ सकी। किसी ने यह बात समझ ली और उनसे कहा कि यह शैख़ कहते हैं कि मैं तुम्हारे कुफ़्र से ताइब (अलग) हूँ। यह सुनकर फिर उन्होंने आप को पकड़ा और जवाब तलब किया तो आपने उनसे पूछा कि मुरतकिबे कबीरा को तुम लोग इल्मो यक़ीन (दलीले क़तई) की बुनियाद पर काफ़िर कहते हो या ज़न्न (दलीले ज़न्नी) की बुनियाद पर। उन्होंने कहा कि ज़न्न की बुनियाद पर। आपने फ़रमाया कि कुरआन में है कि बेशक बाज़ ज़न्न असम्म (गुनाह) है। इसलिए तुम खुद मुरतकिबे गुनाहे कबीरा हो और मुरतकिबे गुनाहे कबीरा तुम्हारे तज़दीक मुरतकिबे कुफ़्र है लिहाज़ा तुम अपने कुफ़्र से तौबा करो। उन्होंने कहाः आप भी कुफ़्र से तौबा कीजिए। इमाम ने फ़रमायाः मैं हर कुफ़्र से ताइब (अलग) हूँ। इमामे किरमानी फ़रमाते हैं कि यही वाक़ेया है जिसको ग़लत अंदाज़ में मुख़ालेफ़ीन ने फैलाया और कहा कि इमामे अबू ह़नीफ़ा को कुफ़्र से तौबा कराई गई। (अलजौहरुल मज़िय्यह फ़ी तबक़ातिल ह़नफ़िय्यह 1/486)

इमामे अबू ह़नीफ़ा के मुतअ़ल्लिक़ एक मनगढ़त वाक़ेया

अहले ह़दीस ग़ैर मुक़ल्लेदीन और इमामे आज़म अबूह़नीफ़ा के मुआ़नेदीन एक झूटे वाक़ेये को इमामे बुख़ारी के ह़वाले से बहुत ज़्यादा ज़िक्र करते हैं। वह वाक़ेया यह है कि इमामे अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक इमामे आज़म के पहलू में नमाज़ अदा कर रहे थे। जब दोनों नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो इमामे अबू ह़नीफ़ा ने इमामे इब्निुल मुबारक से फ़रमायाः क्या बात है मैने देखा कि नमाज़ में तुम तकबीरे तह़रीमा के अ़लावा बार–बार रफ़ेयदैन करते रहे थे क्या तुम्हारा उड़ने का इरादा था? इसके जवाब में इब्नुल मुबारक ने कहा कि जब आपने तकबीरे तह़रीमा के वक़्त रफ़यदैन किया तो क्या उड़ने का इरादा था? इस पर इमामे आज़म लाजवाब हो गये ।

यह वाक़ेया सरासर मनगढ़त और झूट है। इसको दलाइल से हम साबित कर रहे हैं:

(1) इस वाक़ेये के ग़लत होने की पहली दलील यह है कि इमामे बुख़ारी ने अ़ब्दुल्लाह इब्नुल मुबारक के ह़वाल से इस वाक़ये को ''जुज़्ए रफ़ेयदैन'' मे ज़िक्र किया है लेकिन बे सनद। इमामे अबू ह़नीफ़ा जैसी अ़ज़ीम शख़्सियत के तअ़ल्लुक़ से ऐसी कमज़ोर बात का इन्तिसाब बिला सनद व बिला दलील हर गिज़ मोतबर नहीं हो सकती।

खुद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्नुल मुबारक ने फ़रमायाः

इसनाद मेरे नज़दीक दीन से है। अगर इसनाद न होती तो जिसके जी में जो आता कह देता। (मुक़द्दमये सह़ी मुसलिम)

ह़ज़रते इब्नुल मुबारक के फ़रमान के मुताबिक़ उनकी तरफ़ मन्सूब यह वाक़ेया बिला सनद नामक़बूल है।

(2) मज़कूरा वाक़ेया के बातिल होने की दूसरी दलील यह है कि एक तरफ़ इब्नुल मुबारक की जानिब मन्सूब यह वाक़ेया है और दूसरी तरफ़ इब्नुल मुबारक के तअ़स्सुरात इमामे अबू ह़नीफ़ा के तअ़ल्लुक़ से यह हैंः

(अलिफ़) इब्नुल मुबारक ने इमामे अबू ह़नीफ़ा के हुस्ने ख़ुल्क़, ह़िल्मो बुर्दबारी और वक़ार को यों बयान फ़रमायाः

''एक दिन हम जामे मस्जिद में थे, अचानक एक सांप ऊपर से अबू ह़नीफ़ा की गोद में गिर गया। यह देख कर लोग भाग खड़े हुए लेकिन अबूह़नीफ़ा ने सिर्फ़ दामन को झाड़कर सांप को फेंक दिया और पुर वक़ार अंदाज़ में अपनी मजलिस में बैठे रहे।'' (अख़बारे अबीह़नीफ़ा वअसह़ाबिही लिस्सैमिरी 1/87, तारीख़े बग़दाद खतीब बग़दादी 15/459)

(ब) इब्नुल मुबारक से पूछा गया कि आदमी फ़त्वा देने और मन्सबे क़ज़ा के लाइक़ कब होता है? तो इब्नुल मुबारक ने फ़रमायाः

''मुफ्ती और क़ाज़ी बनने के लाइक़ उस वक़्त होता है जबकि ह़दीस का आ़लिम हो, साहिबुर्राय बाबसीरत हो। इमामे अबूह़नीफ़ा के अक़वाल का आ़लिम हो और उनको मह़फ़ूज़ रखने वाला हो। (अखबारे अबूह़नीफ़ा लिस्सैमिरी 1/87)

(जीम) कुछ लोगों ने इमामे इब्नुल मुबारक से कहा कि अबूह़नीफ़ा ह़दीस का इल्म नहीं रखते तो उन्होंने जवाब दियाः तुम यह कैसे कह

सकते हो कि हव ह़दीस का इल्म नहीं रखते? उनसे पूछा गया कि रतब को तमर के बदले में बेचना जाइज़ है तो उन्होंने कहा कोई ह़रज नहीं। लोगों ने कहा कि ह़दीसे सअ़द तो उसके ख़िलाफ़ है, तो अबू ह़नीफ़ा ने फ़रमाया कि हव ह़दीस शाज़ है। ज़ैद अबी अ़य्याश की रिवायत के मुक़ाबिले में क़बूल नहीं की जायेगी जिसने कहा कि अबू ह़नीफ़ा को ह़दीस का इल्म नही तो उसे ह़दीस का इल्म नहीं। (अखबारे अबी ह़नीफ़ा व असह़ाबिही लिस्सैमिरी 1/78)

(दाल) इब्नुल मुबारक ने इमामे अबू ह़नीफ़ा की ह़ाज़िर दिमाग़ी और ह़िकमत व दानाई की तारीफ़ करते हुए एक वाक़ेया बयान किया हैः

हम मक्के के रास्ते में थे, लोगों ने क़ाफ़िले वालों के लिए एक ऊंटनी का बच्चा ज़िबह़ करके उसको भूना फ़िर उन्होंने चाहा कि उसको सिरका से खाएं, सिरका था लेकिन उसको डालने के लिए कोई बरतन वग़ैरह न था। अभी वह इसी फ़िक्र में थे कि फ़ौरन अबू ह़नीफ़ा ने रेत में एक गढ़ा खोदा और दसतर ख़्वान बिछा दिया और उस पर सिरका उंडेल दिया। इस ह़िकमत से लोगों ने सिरका के साथ भुना हआ गोश्त खाया। लोगों ने यह देखकर कहा आप हर चीज़ उम्दा तरीक़े से करते हैं। (अखबारे अबीह़नीफ़ा व असह़ाबिही लिस्सैमिरी 1/32)

(ह) अ़ली बिन मुसहिर का बयान है कि हम अबूह़नीफ़ा रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के पास थे। उनके पास अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक आये। उन्होंने अबूह़नीफ़ा से पूछाः आप क्या फ़रमाते हैं उस आदमी के बारे में जो हांडी में गोश्त पका रहा था। एक चिड़िया उड़कर हांडी में गिर गई और मर गई? इमामे अबूह़नीफ़ा ने अपने असह़ाब से उनकी राय दरयाफ्त की तो उन्होंने कहा कि इस बारे में तो ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहो तआ़ला अन्हुमा की रिवायत है कि शोरबा फेंक दिया जाए और गोश्त धोकर खाया जाए। इमामे अबूह़नीफ़ा ने फ़रमाया मेरी भी यही राय है लेकिन इसमें एक शर्त भी है। वह यह है कि अगर चिड़िया हांडी में उस वक़्त गिरी है जब जोश में थी तो शोरबा भी फेंक दिया जायेगा और गोश्त भी और अगर हांडी पकने के बाद चिड़िया गिरी थी तो शोरबा फेंका जायेगा और गोश्त धोकर खाया जायेगा। इब्नुल मुबारक

ने पूछा कि आपने यह कहां से कहा? इमामे अबूहनीफ़ा ने कहाः जब चिड़िया हांडी के जोश मारने के वक़्त गिरी तो चिड़िया का असर सिरका की तरह शोरबा और गोश्त और हांडी को पहुँचा, और हांडी पकने के बाद चिड़िया गिरी तो उसके असर ने सिर्फ़ शोरबे में नुफ़ूज़ किया लिहाज़ा शोरबे को फेंक दिया जायेगा और गोश्त धोया जायेगा क्योंकि उसका असर उसमें दाख़िल नहीं हुआ। यह सुनकर इब्नुल मुबारक ने कहाः यह पुख़्ता राय वाले है। (अखबारे अबीहनीफ़ा व असहाबिही लिस्सैमिरी 1/38)

(वाव) इब्ने मईन ने इब्नुल मुबारक के बारे में फ़रमायाः

''अ़ब्दुल्लाह इब्नुल मुबारक अबूहनीफ़ा की जितनी ज़्यादा खूबियां बयान करते थे उतनी खूबियां बयान करते मैंने किसी को नहीं देखा।'' (अखबारे अबीहनीफ़ा व असहाबिही लिस्सैमिरी 1/41)

(ज़) इब्ने मुक़ातिल ने कहा कि मैंने इब्नुल मुबारक को यह कहते हुए सुना कि जब मैं सुनता हूँ कि कोई आदमी अबूहनीफ़ा पर ऐब लगाता है तो मैं उसको देखना गवारा नहीं करता और उसके साथ उठना बैठना पसंद नहीं करता, इस ख़ौफ़ से कि कहीं उसपर अल्लाह का क़हर नाज़िल न हो जाए और उसके साथ मैं भी उसकी ज़द में आ जाऊँ। (अखबारे अबीहनीफ़ा व असहाबिही लिस्सैमिरी 1/44)

(ह) इब्नुल मुबारक ने हसन बिन अ़म्मारह की इस बात की ताईद कीः

''बखुदा हमने इल्मे फ़िक़्ह में आप (अबूहनीफ़ा) से ज़्यादा बलीग़ कलाम करने वाला, ग़ैरों की ईज़ारसानियों पर आपसे ज़्यादा सब्र करने वाला और आपसे ज़्यादा हाज़िर जवाब किसी को नहीं पाया। आप पर ऐब लगाने वाले आपके हासिद हैं'' (अखबारे अबीहनीफ़ा व असहाबिही लिस्सैमिरी 1/65)

क़ारेईने किराम! ज़रा इंसाफ़ से फ़ैसला करें कि वह अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक जो इमामे अबूहनीफ़ा के बारे में इतने उम्दा तअस्सुरात रखते थे और फ़रमाते थे जो अबूहनीफ़ा पर ऐबजोई करे मुझे उसका चेहरा देखना भी गवारा नहीं, वह फ़रमाते थे कि मैंने अबूहनीफ़ा जैसा हाज़िर

जवाब किसी को नहीं देखा, मैंने अबूहनीफ़ा जैसा फिक़्हुल ह़दीस का आ़लिम किसी को नहीं देखा, वह इब्नुल मुबारक जो अबूफ़नीफ़ा के बारे में यह फ़रमायें कि जब तुम देख लो किसी क़ौल पर सुफ़याने सौरी और अबूह़नीफ़ा का इत्तिफ़ाक़ है तो उसको इख्तियार कर लो। (अलइत्क़ान , इब्ने अ़ब्दुलबर्र 1/132) वह इब्नुल मुबारक जो हमेशा इमामे अबूह़नीफ़ा का ज़िक्र ख़ैर के साथ करते थे, उनकी तारीफ़ करते थे, उनका दिफ़ा करते थे हत्ताकि अबुल ह़सन फ़राज़ी जो इमामे अबूह़नीफ़ा को दिल से नापसंद करते थे लेकिन जब वह इब्नुलमुबारक के सामने होते तो अबूह़नीफ़ा का ज़िक्र खैर ही से करते थे और बुराई करने की जुरअत नहीं होती थी, वह इब्नुल मुबारक कि उनके सामने किसी ने इमामे अबू ह़नीफ़ा पर तान किया तो उनहोंने बरजस्ता फ़रमायाः चुप रह अगर तू अबूह़नीफ़ा को देख लेता सरापा अक़्लो ज़कावत को देख लेता। (इलइन्तिफ़ा 1/132)

वह इब्नुल मुबारक जिनका क़ौल है कि अगर अल्लाह तआ़ला ने अबूह़नीफ़ा और सुफ़याने सौरी के ज़रिये मेरी मदद न की होती तो मैं आ़म आदमियों की तरह़ होता। (तहज़ीबुत्तहज़ीब 10/450)

भला वह अपने ममदूह़ शेख़ इमामे अब ूह़नीफ़ा के बारे में ऐसा कैसे कह सकते थे कि रफ़ेयदैन के तअ़ल्लुक़ से मेरी बात पर वह लाजवाब हो गये । ह़ाशा कल्ला ऐसा हरगिज़ नहीं। बल्कि इब्नुल मुबारक की जानिब मज़कूरा वाक़ेया गढ़कर मन्सूब किया गया है।

लगे हाथों इब्नुल मुबारक के चंद अ़रबी अशआ़र जो इब्नुल मुबारक ने इमामे आज़म की मदह में कहे हैं का तरजमा नज़रे क़ारेईन कर रहा हूँ:

" मैंने देखा अबू ह़नीफ़ा की ज़कावत और भलाई का चर्चा रोज़ बरोज़ बढ़ता जा रहा है। वह सही बात कहते और उसे मुन्तख़ब कर लेते जब कि दूसरे लोग दुरुस्तगी से परे रह जाते। उनका जो भी क़यास होता अ़क़्ले ख़ालिस पर मबनी होता। कौन है वह जिसे तुम उनका नज़ीर में पेश कर सको? अबू ह़नीफ़ा ने ह़म्माद की जगह पुर कर दी हालांकि उनकी वफ़ात हमारे लिए बड़ी मुसीबत थी। मैंने देखा

अबूह़नीफ़ा से कोई मसअला पूछा जाता तो वह इल्म का बह़रे ज़ख़्ख़ार साबित होते थे। जब उलमा से इल्मी इश्कालात ह़ल न होते थे तो अबूह़नीफ़ा उनकी तह तक पहुँच जाया करते थे।'' (अल इन्तिफ़ा 1/33)

अबू ह़नीफ़ा की शान में ऐसे अशआ़र कहने वाला खुद कहे कि अबू ह़नीफ़ा मेरी ह़ाज़िर जवाबी के आगे लाजवाब हो गये, यह बात निहायत ग़ैर माकूल है। यक़ीनन इब्नुल मुबारक की जानिब इसका इंतेसाब ग़लत किया गया है। इसी तरह़ उनके ह़वाले से जो भी अक़वाल उनके मज़कूरा बाला तअस्सुरात के ख़िलाफ़ पेश किये जायें वह ग़ैर मोतबर हैं और उनकी जानिब ग़लत मन्सूब हैं।

(3) मज़कूरा वाक़ेया के ग़लत होने की तीसरी दलील यह है कि इस वाक़ेया को वकी बिन जर्राह़ के ह़वाले से पेश किया गया है हालांकि वकी बिन जर्राह़ रफ़ेयदैन के मसअले में इमामे अबू ह़नीफ़ा के क़ौल पर खुद अ़मल करने वाले थे और अबू ह़नीफ़ा के अक़वाल पर फ़त्वा दिया करते थे। किसी सही सनद से साबित नहीं कि वकी इब्ने जर्राह़ मसअलये रफ़ेयदैन में इमामे अबूह़नीफ़ा के ख़िलाफ़ फ़त्वा दिया करते थे।

ख़तीब बग़दादी ने यह़या बिन मईन का यह क़ौल नक़्ल किया है:

''मैंने वकी से अफ़ज़ल किसी को नहीं देखा। वह क़िबला रू होकर ह़दीस याद करते थे, रात भर जागते थे, दिन में मुसलसल रोज़े रखते थे और क़ौले अबू ह़नीफ़ा पर फ़त्वा देते थे। उनहोंने अबू ह़नीफ़ से बहुत सी चीज़ें सुनी हैं। (तारीख़े बग़दाद 15/647)

इब्ने मईन के इस क़ौल को इब्ने अ़साकर ने तरीख़े दिमश्क़ में, इमामे अ़सक़लानी ने तहज़ीबुत्तहज़ीब में, मुज़ी ने तहज़ीबुल कमाल में, ज़हबी ने तारीखुल इसलाम और सियरो अलामिन्नुबला में, सुयूती ने तबक़ातुल हुफ़्फ़ाज़ में और अ़ल्लामा दाऊदी मालिकी ने तबक़ातुल मुफ़स्सेरीन में नक़्ल किया है।

यह एक नाक़ाबिले तरदीद ह़क़ीक़त है कि इमामे वकी बिन जर्राह़ इमामे अबूह़नीफ़ा के क़ौल पर फ़त्वा देते थे। अगरचे मुजतहिद फ़िल मज़हब थे लेकिन उसूले इसतिंबात में इमामे अबू ह़नीफ़ा की तक़लीद

करने वाले थे इस लिहाज़ से उन्हे ह़नफ़ी कहा जाता है। क्योंकि उसूल में मुक़ल्लिद थे अगरचे बाज़ फ़ुरू में इमामे से इख़्तिलाफ़ भी करते थे। लेकिन ग़ैर मुक़ल्लेदीन इल्मे फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह से नाबलद होते हैं इसलिए यह बात एक ग़ैर मुक़ल्लिद शैख़ अ़ब्दुर्रह़मान मुबारकपुरी साहि़बे तोह़फ़तुल ऐह़वज़ी की समझ में नहीं आई और उन्होंने यह लिख मारा कि बाज़ ह़नफ़ी यह कहते हैं कि वकी बिन जर्राह़ क़ौले इमामे अबू ह़नीफ़ा पर फ़त्वा देते थे और वह ह़नफ़ी मुक़ल्लिद थे, यह बात ग़लत है। (तोह़फ़तुल ऐह़वज़ी 1/20)

बहर ह़ाल यह बात तै शुदा है कि वकी बिन जर्राह़ इमामे आज़म के ख़ास तलामिज़ा में से थे और फ़िक़्ह में उनके अक़वाल ही पर फ़त्वा देते थे। लिहाज़ा तर्के रफ़ेयदैन के मुआ़मले में भी वह इमामे आज़म के क़ौल से मुत्तफ़िक़ थे। फिर कैसे हो सकता है कि वह यह कहें कि इब्नुल मुबारक के साथ रफ़ैयदैन के सुबूत पर मुबाह़सा में इमामे आज़म लाजवाब हो गये ? इससे भी अंदाज़ा होता है कि इस वाक़ेये के रावी की हैसियत से वकी बिन अलजर्राह़ का नाम ग़लत तौर पर जोड़ा गया है।

(4) मज़कूरा वाक़ेये के ग़लत होने की चौथी दलील यह है कि इमामे बुख़ारी ने इसकी सनद ज़िक्र नहीं की लेकिन इमामे बैहिक़ी शाफ़ेई ने ह़ाकिम के ह़वाले से जो सनद ज़िक्र की है वह तारीक व नामक़बूल है। ज़ैल में सनद का तनक़ीदी जायज़ा पेश किया जा रहा है:

''हमको ख़बर दी अ़ब्दुल्लाह अल ह़ाफ़िज़ ने उन्होंने कहा हमे बताया अल ह़सन बिन ह़लीम अस्साइग़ अम्र ने वह कहते हैं हमसे ह़दीस बयान की अबुल मूजह ने उन्होंने कहा मुझे ख़बर दी अबू नस्र मोह़म्मद बिन अबिल ख़त्ताब अस्सुलमी ने और वह एक सालेह़ शख़्स थे, उन्होंने कहा मुझे ख़बर दी अ़ली बिन यूनुस ने उन्होंने कहा हमसे ह़दीस बयान वकी ने'' (अस्सुननुल कुबरा लिलबैहक़ी 2/117)

इस सनद का एक रावी जिसका नाम अलह़सन बिन ह़लीम साइग़ लिया गया है, यह मझहूलुल ऐन भी है और मझहूलुल ह़ाल भी। कुतुबे तराजिमो तबक़ात इस नाम के ज़िक्र से ख़ाली नज़र आती हैं। बरादराने अहले ह़दीस में से कोई इस रावी के बारे में मालूमात फ़राहम करा दें

कि यह कौन है? और माहेरीने ह़दीस में से किस किस ने इसकी तौसीक़ की है? अबुल मोजह मोह़म्मद बिन अ़म्र अलफ़ज़ारी को इमामे ज़हबी और दीगर नाक़ेदीने ह़दीस ने सिर्फ़ इस हैसियत से ज़िक्र किया है कि वह मरो के इमामे मोह़द्दिस हाफ़िज़ुल ह़दीस थे लेकिन उनकी सिक़ाहत व अ़दमे सिक़ाहत के तअ़ल्लुक़ से सब माहेरीन ख़ामोश हैं। माहेरीने ह़दीस के अक़वाल से जबतक उनकी तादीलो तौसीक साबित नहीं कर दी जाती उनकी रिवायत में तवक़्क़ुफ़ ज़रूरी है।

सनदे मज़कूर के चौथे रावी अबुन्नस्र अबिल ख़त्ताब भी मजहूल हैं। अबुल मोजह के *"वह एक सालेह़ शख़्य थे"* कहने से उनकी तोसीक़ साबित नहीं होगी क्योंकि अबुल मोजह का सिक़ह होना खुद तिश्नये दलील है तो उनकी तौसीक़ किसी के तअ़ल्लुक़ से कब मोतबर होगी? पहले यह तो साबित हो कि यह *"शख़्स"* हैं कौन? और असमाये रिजाल में इस नाम के शख़्स का पता नहीं तो फिर वह *"सालेह़ शख़्स "* कहां से निकल आये?

यह थे सनदे मज़कूर के चौथे रावी जो मजहूलुलह़ाल बल्कि मजहूलुलऐन भी हैं। अब रहे अ़ली बिन यूसुफ़ तो उनके तअ़ल्लुक़ से उक़ैली ने कहा *"उनकी ह़दीस की मुताबे नहीं मिलती "* यानी उनकी ह़दीस शाज़ व मुनकर होती है। (लिसानुल मीज़ान 6/40)

क़ारेईने किराम! ज़रा ग़ौर करें कि ऐसा वाक़ेया जिसकी सनद में पांच रावी ज़िक्र किये गये हैं उनमें तीन मजहूल हैं और चौथे ऐसे हैं जिनकी रिवायत शाज़ व मुनकर यानी नामक़बूल होती है फिर भी इस वाक़ेये को इमामे अबूह़नीफ़ा जैसी मुसल्लमुस्सुबूत शख़्सियत की तनक़ीस में वहाबी अहले ह़दीस मुस्तनद व मोतबर मानते हैं आख़िर इसकी वजह क्या है? इमामे बुख़ारी की किताब जुज़्ए रफ़ेयदैन में तो यह वाक़ेया बिला सनद नक़्ल किया गया है और बैहक़ी की अस्सुननुल कुबरा में सनद के साथ नक़्ल किया गया है लेकिन उसकी सनद का जो ह़ाल है वह क़ारेईन के सामने है।

यह सनद मुज़लिम व तारीक और शाज़ व मुनकर है फिर भी एक ग़ैर मुक़ल्लिदे ज़माना अबू अ़ब्दुर्रह़मान मक़ील बिन हादी ने एक किताब

'नश्रुस्सहीफ़ा फ़ी ज़िक्रिस्सही मिन अक़वाले अइम्मतिल जरह़े वत्तादील फ़ी अबी ह़नीफ़ा' के नाम से लिखी है उसके प्र0 149 पर यह लिखा है:

''मैंने इस वाक़ेये को बैहक़ी से नक़्ल किया है इसलिए कि उन्होने पूरे वाक़ेया को बेहतर सनद के साथ ज़िक्र किया है।''

ग़ैर मुक़ल्लिद आ़लिम इस सनद को बेहतर कह रहे हैं हालांकि सनदे मज़कूर तारीक, मुनकर और शाज़ है। नीज़ मुसन्निफ़े किताब के खुब्से बातिनी की दलील है कि उसने किताब के शुरू मे यह लिखा है:

''इमामे अबूह़नीफ़ा के मुत्तबेईन ने उनकी शान में गुलू किया है। चुनांचे वह लोग उन्हें इमामे आज़म के लक़ब से याद करते हैं।'' (नश्रुस्सहीफ़ा 1/9)

मुसन्निफ़े किताब के बुग़ज़ो इनाद और खुब्से बातिनी की चुग़ली खाने वाला यह जुम्ला मुसन्निफ़ के मबलग़े इल्म को भी जग ज़ाहिर करने के लिए काफ़ी है। मुसन्निफ़े मज़कूर के नज़दीक इमामे अबू ह़नीफ़ा को अगर इमामे आज़म कहना उनके मुत्तबेईन का गुलू है तो दर्ज ज़ैल असलाफ़े उम्मत के बारे में क्या ख़्याल है जिन्होंने इमामे अबूह़नीफ़ा को इमामे आज़म तह़रीर फ़रमाया है? क्या इन सब असलाफ़ ने इमामे अबू ह़नीफ़ा को इमामे आज़म लिखकर गुलू किया है? वहाबी ग़ैर मुक़ल्लेदीन जवाब दें। इमामे अबू ह़नीफ़ा को इमामे आज़म के लक़ब से याद करने वाले उलमाये असलाफ़ के नाम यह हैं:

1) इमामे अबुल ह़सन अशअ़री {मौतः 324 हि0} (अलइबाना फ़ी उसूलिद्दयाना 1/90)
2) ख़तीब अबूबक्र बग़दादी 1) {मौतः 463 हि0}(तारीख़े बग़दाद 22/148)
3) शैख़ अस्समआ़नी अलमरूज़ी {मौतः 562 हि0}(अल अन्साब 8/21/28)
4) ह़ाफ़िज़ शमसुद्दीन क़ाये माज़ ज़हबी {मौतः 748 हि0} (तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़ 1/126)
5) शैख़ इब्राहीम अत्तरतोसी {मौतः 758 हि0} (आयानुल अ़स्र व आवानुन्नस्र 1/102)
6) शैख़ सलाहुद्दीन अस्सफ़दी {मौतः 764 हि0}(अलवाफ़ी बिल वफ़यात 13/129)

7) शैख़ अह़मद बिन अ़ली अलफ़ज़ारी {मौतः 821 हि0} (सुबहुल आशा फ़ी सनाअ़तिल इंशा 1/499)
8) शारेह़ बुख़ारी अ़ल्लामा ऐनी {मौतः 855 हि0} (मग़ानियुल अख़यार 3/504)
9) अ़ल्लामा इब्नुल जज़्री {मौतः 832 हि0} (मनाक़िबे असदिल्लहिल ग़ालिब़ 1/83)
10) अ़ल्लामा इब्नुल असीर {मौतः 630 हि0} (अल उकूदुल्लोलुइया फ़ी तारीख़िद्दौला 2/173)

यह नाम बतौरे नमूना ज़िक्र किये गए वरना दो दर्जन से ज़ायद असलाफ़े उम्मत के असमा (नाम) मैंने अपने रिसाला *'लक़बे इमामे आज़म का सुबूत'* में ज़िक्र किये हैं। इन असलाफ़े उम्मत ने इमामे अबू ह़नीफ़ा को इमामे आज़म के लक़ब से याद किया है। ग़ैर मुक़ल्लेदीन से सवाल किया जाये कि क्या यह सब असलाफ़े उम्मत गुलू और ज़ियादती करने वाले थे?

अब ज़रा ग़ैर मुक़ल्लेदीने वहाबिया उनके घर तक पहुँचा दिया जाये और दिखा दिया जाए कि उनके घर वालों ने कहां कहां इमामे अबू ह़नीफ़ा को इमामे आज़म लिखा है। देखिएः

- शैख़ नासिरुद्दीन अलबानी ने अपनी किताब *अल आयातुल बय्येनात* में इमामे अबू ह़नीफ़ा को इमामे आज़म लिखा है।
- इब्नुल क़य्यिम अलजौज़िया ने *अलक़सीदतुन्नूनिया* में इमामे अबू ह़नीफ़ को इमामे आज़म लिखा है।
- नवाब सिद्दीक़ ह़सन खां ने *अद्दुररुल बहिय्यह, अबजदुल उ़लूम* और *अल ह़ित्ता* में इमामे अबू ह़नीफ़ा को इमामे आज़म लिखा है।

यह सब ग़ैर मुक़ल्लेदन के पेशवा हैं। क्या इन सबने इमामे अबू ह़नीफ़ा को इमामे आज़म लिखकर गुलू किया है? और क्या यह सब इमामे आज़म के मुत्तबेईन थे?

ज़रा और आगे बढ़िए! वहाबियों ने शैख़ इब्ने तैमिया को इमामे आज़म लिखा है। (अल उकूद्दुर्रियह फ़ी मनाक़िबे शैखिल इसलाम इब्ने तैमियह लिश्शैख़ अद्दकूक़ी 1/419)

वहाबी ग़ैर मुक़ल्लेदीन से जवाब तलब किया जाये कि शैख़ इब्ने तैमियह और शैख नजदी को इमामे आज़म कहना दीन में गुलू है या नहीं?

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहे अलैह को इमामे आज़म कहने पर पूरी अहले ह़दीस बरादरी के कैम्प में आग लग जाती है और क़िस्म क़िस्म के एतेराज़ात किये जाते हैं लेकिन इसी लक़ब को वह अपने इमामों के लिए स्तेमाल करें तो कोई एतेराज़ की बात नहीं राक़िम ने बिहम्दिही तआ़ला लक़बे इमाम के सुबूत पर निहायत तह़क़ीक़ी रिसाला संजीदा और आ़म फहम उसलोब में तह़रीर किया हैं इन्शा अल्लाह उसके मुतालआ से इंसाफ़ पसंद क़ारेईन के शुकूको शुबहात दूर हो जायेंगे। वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़।

रफ़ेयदैन के तअ़ल्लुक़ से एक गढ़ी हुई रिवायत

इमामे बैहक़ी ने फ़रमायाः हमें ख़बर दी अबू अ़ब्दुल्लाह अल ह़ाफ़िज़ (अलह़ाकिम) ने, उन्होने कहा मुझसे बयान किया अबू सईद अह़मद बिन मोह़म्म्द बिन रुमैह़ ने, उन्होंने कहा हमसे बयान किया अबू नस्र अह़मद बिन मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लह मरोज़ी ने मरौ में। उन्होंने कहा हमसे बयान किया मोह़म्मद बिन सईद तिबरी ने, उन्होंने कहा हमसे बयान किया मोह़म्मद बिन सुलैमान बिन दाऊद शाज़ कूफ़ी ने, उन्होंने कह मैंने सुफ़यान बिन उऐना को कहते हुए सुना औज़ाई और सौरी दोनों मिना में एक साथ थे। औज़ाई ने सुफ़याने सौरी से कहा कि आप रुकू में जाते वक़्त और रुकू से उठते वक़्त रफ़ेयदैन क्यों नहीं करते? तो सुफ़याने सौरी ने कहा (इसलिए कि) हमसे ह़दीस बयान की यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ने। उस पर औज़ाई ने कहाः मैं आपके सापने सनद बयान कर रहा हूँ जुहरी की सालिम से, उनकी उनके वालिद से वह नबीये करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहे वसल्लम से और इस मुक़ाबिले में यज़ीद बिन अबी ज़ियाद को पेश कर रहे हैं हालांकि यज़ीद ज़ईफुल ह़दीस हैं। उनकी हदीस सुन्नत के ख़िलाफ़ है। यह सुनकर सुफ़याने सौरी का चेहरा सुर्ख़ हो गया। तो औज़ाई ने कहा शायद आपको यह बात नागवार हुई? सौरी ने कहा हां। औज़ाई ने कहा कि चलिए उठिए और

मक़ामे इब्राहीम के पास चल कर हम एक दूसरे पर लानत भेजें कि कौन ह़क़ पर है? यह सुन कर औज़ाई मुसकुरा पड़े। क्योंकि देखा कि औज़ाई बड़े जोश में आ गये हैं। (अस्सुननुल कुबर लिलबैहक़ी 2/117)

इस रिवायत का तनक़ीदी जायज़ा लेने से पहले मालूम होता है कि यह रिवायत मौजू और मनगढ़त है।

यह रिवायत के लिहाज़ से भी बातिल है और दिरायत के लिहाज़ से भी।

सनद का तनक़ीदी जायज़ा

इस रिवायत की सनद में ह़ाकिम के सिवा दर्ज ज़ैल पांच रावी हैं:

(1) अबूसईद अह़मद बिन मोह़म्मद बिन रुमैह़: इस रावी पर मोह़द्देसीन की जरहें मुलाह़ज़ा कीजिए:

- अबू नुऐम ने इन्हें ज़ईफ़ कहा।
- अबू ज़रआ़ कशी ने ज़ईफ़ कहा।
- इमामे इब्ने हजर असक़लानी ने उन्हें ज़ईफ़ कहने की वजह यह बयान की है:
  उसको ज़ईफ़ कहने की वजह यह है कि वह ज़ैदी मज़हब से तअ़ल्लुक़ रखता था और अपनी बदमज़हबी का प्रचार भी करता था। (लिसानुल मीज़ान 1/600)
- इब्ने ताहिर ने कहा: वह रिवायत के मुआ़मले में ज़ईफ़ है। (लिसानुल मीज़ान 1/600)
- दार कुत्नी ने उसको ज़ईफ़ कहा। (लिसानुल मीज़ान 1/600)
- सहमी ने कहा:

"मैंने अबू ज़रआ मोह़म्मद बिन यूसुफ़ से अह़मद बिन मोह़म्मद बिन रुमैह के बारे में पूछा तो उन्होंने इन्दिया दिया कि वह ज़ईफ़ है या कज़्ज़ाब है।"(अलमौसूअतो अक़वाले अबिल ह़सन अद्दार कुत्नी 1/84)

ह़ाकिम और ख़तीब ने उन्हे सिक़ह कहा है लेकिन कसीर माहेरीने ह़दीस की जरह़ के मुक़ाबेले में उनकी तौसीक़ मरजूह़ व नामकबूल है।

(2) अबुन्नस्र अह़मद बिन मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अलमरूज़ीः यह रावी मजहूल है। राक़िम ने हत्तलमक़दूर कोशिश की लेकिन इस नाम के रावी के बारे में मालूमात ह़ासिल न कर सका। अबुन्नस्र कुन्नियत के रावी सैंकड़ों की तादाद में हैं। यहां पर मुतअ़य्यन नहीं कि यह अबुन्नस्र कौन हैं? अह़मद बिन मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह नाम के सैकड़ों रावी हैं, यह कौन है? मालूम नहीं। अह़मद बिन मोहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह नाम के एक रावी जिसकी कुन्नियत अबुन्नस्र मिली लेकिन वह अलमरूज़ी नहीं। तारीखे बग़दाद में उसका ज़िक्र है लेकिन सिक़ह है कि ग़ैर सिक़ह इसका कुछ ज़िक्र नहीं।

(3) मोह़म्मद बिन सईद बिन अत्तबरीः इस नाम के दो रावी हैं।

(अलिफ़) मोह़म्मद बिन सईद बिन ह़स्सान अलमसलूब (मौतः 141–150 हि0 के दरमियान)

(ब) मोह़म्मद बिन सईद अत्तबरी अलअरज़क़ (मौतः 291–300 हि0 के दरमियान)

नीचे दोनों का ह़ाल मुलाह़ज़ा करेंः

मोह़म्मद बिन सईद बिन तिबरीः वही मोह़म्मद बिन अबुल क़ैस है, वही मोह़म्मद बिन अत्तिबरी है, कुरैशी, उरदूनी, मशरिक़ी है। इब्नुत्तिबरी मारूफ़ है। कुन्नियत अबू अ़ब्दुर्रह़मान है।

मकहूल, उबादा बिन नसी, नाफ़े, जुहरी, रबीया बिन यज़ीद वग़ैरहुम से रिवायत ली है। इससे रिवायत लेने वालों में सुफ़याने सौरी, बक्र बिन खुनैस अबूबक्र बिन अ़य्याश वग़ैरुहम हैं। उनके तअ़ल्लुक़ से माहेरीने ह़दीस की आरा यह हैंः

- इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल वग़ैरुहुम ने कहाः उसे अबू जाफ़र मन्सूर ने ज़िन्दीक़ हो जाने की वजह से क़त्ल किया है।

  इमामे बुख़ारी ने फ़रमायाः ज़िन्दीक़ होने की वजह से उसको फांसी दी गई है।
- निसई ने कहाः वह ग़ैर सिक़ह ग़ैर मामून है और बारहा कहा कि वह कज़्ज़ाब है।

- अबू ह़ाकिम ने कहाः वह ह़दीस गढ़ता था।
- अबू ज़रआ़ दिमशक़ी ने मोह़म्मद बिन ख़ालिद के ह़वाले से कहा कि मैंने मोह़म्मद बिन सईद को यह कहते हुए सुना कि अगर बात अच्छी हो तो उसकी सनद गढ़ लेने में कोई गुनाह नहीं।
- ईसा बिन यूनुस ने कहाः सुफ़याने सौरी मोह़म्मद बिन सईद के पास गये । कुछ देर बाद हमारे पास आए तो कहने लगे 'वह कज़्ज़ाब है' ।
- इमामे अह़मद इब्ने हम्बल ने कहाः मोह़म्मद बिन सईद कज़्ज़ाब था।
- दार कुत्नी वग़ैरह ने कहाः वह मतरूक है। (तारीखुल इस्लाम लिज़्ज़हबी 3/961)

मोह़म्मद बिन सईद अत्तिबरी अलअरज़क़ के बारे में माहेरीने ह़दीस के अक़वालः

- इब्ने अ़दी ने कहाः यह शख़्स ह़दीस गढ़ता था।(तारीखुल इस्लाम 6/1028)
- दार कुत्नी ने मजहूल कहा (मौसूअ़तो अक़वाले अबिल ह़सन अद्दार कुत्नी 3/578)
- इब्ने अ़दी ने उसकी बाज़ मौजू रिवायात को ज़िक्र करने के बाद लिखाः उसकी मज़कूरा रिवायात के अ़लावा और भी मौजू रिवायात हैं। (अलकामिल फ़िज़्ज़ोअ़फ़ाइर्रिजाल 7/556)
- ज़हबी ने लिखाः पता नहीं यह कौन है? (मीज़ानुल एतेदाल 3/565)

मालूम हुआ कि रिवायते मज़कूरा का तीसरा रावी मोह़म्मद बिन सईद अत्तिबरी ख्वाह तिबरी 'अलअरज़क़' हो या 'अलमसलूब' कज़्ज़ाब व नामक़बूल है।

(4) सुलैमान बिन दाऊद शाज़ कूफ़ीः इनके तअ़ल्लुक़ से माहेरीने ह़दीस की आरा मुलाह़ज़ा करेंः

- इमामे बुख़ारी ने कहाः वह मुत्तहम बिलकिज़्ब है। उससे ह़दीस लेना दुरुस्त नहीं।
- अबू ह़ातिम ने कहाः वह मतरूकुल ह़दीस है।
- निसई ने कहाः वह सिक़ह नहीं।
- सालेह़ बिन मोह़म्मद अलह़ाफ़िज़ ने कहाः वह ह़दीस के मुआमेले में झूट बोलता था।
- अह़मद इब्ने ह़म्बल ने कहाः शाज़कोनी ने ह़म्माद बिन ज़ैद, बशीर बिन मुफ़ज़्ज़ल और यज़ीद बिन जुरै की सुह़बत इख़्तियार की लेकिन अल्लाह ने उसे तीनों से कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचाया।
- बग़वी ने कहाः अइम्मा ने इसे मुत्तहम बिलकिज़्ब क़रार दिया है।
- यह़या इब्ने मईन ने कहाः शाज़कोनी ह़दीस गढ़ता था।
- अबू ज़रआ ने कहाः शाज़कोनी ने उन्हें शरमिन्दा करने के लिए फ़ौरन एक ह़दीस गढ़ कर पेश कर दी और अबू ज़रआ को पता न चल सका। बाद में मालूम हुआ कि यह गढ़ी हुई ह़दीस है। (लिसानुल मीज़ान 4/142)

मालूम हुआ कि वाक़ेये मज़कूरा का चौथा रावी माहेरीने ह़दीस के नज़दीक ग़ैर सिक़ह और कज़्ज़ाब व ग़ैर मामून है। उसकी रिवायत नामक़बूल और मरदूद है।

वाक़ेये मकज़कूरा का रिवायतन मौज़ू व मनगढ़त होना साबित हो गया। दिरायतन भी यह वाक़ेया मनगढ़त है। वह इसलिए कि इमामे औज़ाई जैसे फ़क़ीह मोह़द्दिस से यह बात बईद है कि वह सुफ़यान सौरी को रफ़ेयदैन न करने की बुनियाद पर मक़ामे इब्राहीम में 'मुबाहला' की दावत दें। क्योंकि मुबाहला कुफ़्रो ईमान और ह़क़ो बातिल के दरमियान होता है। रफ़ेयदैन करने वाले अइम्मये मोह़द्देसीन व मुजतहेदीन और उनके मुत्तबेईन भी अहले ह़क़ हैं और रफ़ेयदैन न करने वाले मोह़द्देसीन व मुजतहेदीन और उनके मुत्तबेईन भी ह़क़ पर हैं तो फिर मुबाहला किस बात पर?

इमामे औज़ाई जैसे जलीलुलक़द्र मोह़द्दिसो फ़क़ीह रफ़ेयदैन और तर्के रफ़ेयदैन पर अपने मुख़ालिफ़ को दावते मुबाहला दें वह भी मक़ामे इब्राहीम में, दिरायतन इस बात का मौजू व मनगढ़त होना ज़ाहिर है। इस वाक़ेये को अगर सही मान लिया जाए तो क्या ग़ैर मुक़ल्लेदीन वहाबिया इस बात को दलील व बरहीने शरई से साबित कर सकेंगे कि रफ़ेयदैन करने वाले मुसलमान का रफ़ेयदैन न करने वाले मुसलमान पर लानत की बद्दुआ करना दुरुस्त है? जबकि वाक़ेये मज़कूरा में लानत करने का ज़िक्र भी है।

बिला शुबह वाक़ेये मज़कूरा सनदन भी बातिल और दिरायतन भी। इमामे सुफ़याने सौरी और इमामे औज़ाई की जानिब इसका इंतिसाब झूट है जो तअ़स्सुब व तन्ग नज़री और बुग़ज़ व इनाद का शाख़साना हो सकता है।

ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई की झूटी बातें

जुबैर अ़ली ज़ई ने लिखा।

''इमामे अह़मद अपनी मशहूर किताब 'मुसनद' में इमामे अबू ह़नीफ़ा का नाम लेना भी पसंद नहीं करते थ।''

फिर जुबैर अ़ली ज़ई ने लिखाः ''देखिए मुसनदे अह़मद 5/357, ह़दीस 23415।'' (नूरुलऐनैन प्र0 351)

ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई के झूट का पर्दा तो हम थोड़ी देर बाद फ़ाश करेंगे लेकिन अभी क़ारेईन को हम दिखाना चाहते हैं कि इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा की शान में इस तरह़ की बात लिखने का मक़सद ही यह है कि उनसे लोगों को बदज़न्न किया जाये और लोगों के ज़हनों में यह ग़लत ख़याल बिठाया जाये कि इमामे अबू ह़नीफ़ा ऐसे नापसंदीदा आदमी का नाम है कि इमामे अह़मद उनका नाम लेना भी पसंद नहीं करते थे। अब आइए हम जुबैर अ़ली ज़ई और उनकी तरह़ इमामे अबू ह़नीफ़ा से बुग़ज़ो अ़दावत रखने वालों को अइम्मये मोह़द्देसीन के सच्चे अक़वाल का एक आईना दिखा देते है।

- इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ ह़फ़्स बिन ग़यास जिनसे बुख़ारी में अह़ादीस मरवी हैं वह फ़रमाते हैं: इमामे अबूह़नीफ़ा का कलाम फ़िक़्ह में शेर से ज़्यादा दक़ीक़ है। उनपर ऐबजोई करने वाला जाहिल ही है।
- इमामे बुख़ारी के शैख़ के शैख़ अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद अलख़रीबी ने कहाः इमामे अबू ह़नीफ़ा पर ऐब नहीं लगाता मगर वह जो ह़ासिद है या जाहिल है। (तारीखुल इस्लाम लिज़्ज़हबी 3/990)
- इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ के उस्ताज़ इब्नुल मुबारक ने कहाः जब यह सुनता हूँ कि कोई अबू ह़नीफ़ा पर ऐब लगाता है तो मैं उसका चेहरा भी देखना गवारा नहीं करता और उसके साथ उठना बैठना पसंद नहीं करता। इस ख़ौफ़ से कि कहीं उस पर अल्लाह का क़हर नाज़िल न हो जाये और मैं भी उसके साथ उसकी ज़द में न आ जाऊँ। (अख़बारे अबी ह़नीफ़ा व असह़ाबिही लिस्सैमिरी 1/44)

ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई और उनके ह़ामियों का चेहरा इमामे बुख़ारी के उस्ताज़ के उस्ताज़ के अक़वाल के आईने में साफ़ दिखाई दे रहा है। यह लोग या तो इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा की जलालते शान से जाहिल हैं या फिर उनसे बुग़ज़ो ह़सद रखने वाले हैं।

ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई ने इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल के ह़वाले से लिखा है कि इमामे अबू ह़नीफ़ा की ह़दीस और उनकी राय को ज़ईफ़ कहते थे। इसके सुबूत में उन्होंने यह क़ौल पेश किया हैः

''अबूह़नीफ़ा की ह़दीस ज़ईफ़ है और उनकी रिवायत ज़ईफ़ है और ह़वाले में उक़ैली की किताब 'अज़्ज़ोफ़ा' को पेश किया है और लिखा है कि ''उनकी सनद सही है''।

इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल की जानिब मन्सूब यह क़ौल झूट है। क्योंकि उक़ैली की किताब 'अज़्ज़ोफ़ा' या दीगर नाक़ेदीन की कुतुबे तराजिम में अबू ह़नीफ़ा नाम से मुतअ़ल्लिक़ मुतआ़रिज़ अक़वाल मिलते हैं। बाज़ अक़वाल तौसीक़ो तादील के और बाज़ तजरीह़ो तज़ईफ़ के। बल्कि एक ही शख़्स के मुतआ़रिज़ अक़वाल भी मौजूद हैं। इब्नुल मुबारक, सुफ़याने सौरी, यह़या इब्ने मईन वग़ैरुहुम के अक़वाल अबूह़नीफ़ा से मुतअ़ल्लिक़ तौसीक के भी हैं

और तज़ईफ़ के भी। इसकी वजह यह है कि अबू ह़नीफ़ा कुन्नियत के कई अफ़राद हैं बल्कि अबू ह़नीफ़ा कुन्नियत और नोमान नाम के कई अफ़राद हैं जिनमें बाज़ सख़्त ज़ईफ़ अल्कि कज़्ज़ाब भी हैं। मसलनः

(1) अबू ह़नीफ़ा मोह़म्मद बिन ह़नफ़िया बिन हामान अलकुसै अलवासेती (वफ़ातः 291–330 हि0 के दरमियान)

इनके तअ़ल्लुक़ से दारकुत्नी ने कहाः ''क़वी नहीं।'' (तारीखुल इस्लाम लिज़्ज़हबी 6/1022)

(2) अबू ह़नीफ़ा सलम बिन मुग़ीरहः इनको दारकुत्नी ने ज़ईफ़ कहा और इब्ने अबी ह़ातिम ने कसीरुल वहम कहा। (मीज़ानुल एतेदाल 2/186, लिसानुल मीज़ान 4/111)

(3) अबू ह़नीफ़ा अह़मद बिन दाऊद अद्दैनूरी (मौतः 28 या 29 हि0) नह़व व लुग़त के इमाम, किबारे अह़नाफ़ में से थे, सदूक़ थे। (सियरो आलामिन्नुबला 13/422)

(4) अबू ह़नीफ़ा कसीर बिन अलवलीद अलह़नफ़ीः यह मजहूल हैं। (अलइकमाल फ़ी रफ़इल इरतियाब लेइब्ने माकूला 22/463)

(5) अबू ह़नीफ़ा अलयमामी : इनके बारे में कुतुबे तरजिम में कुछ नहीं मिला अलबत्ता उनके लड़के इब्राहीम को इब्ने ह़िब्बान ने सिक़ात में ज़िक्र किया है लेकिन अज़दी ने मुनकिरुल ह़दीस कहा है।

अस्सिक़ात लेइब्ने हिब्बान में हैः बहुत कम रिवायत में खता करते थे। (7/545, लिसानुल मीज़ान 1/269)

(6) अबू ह़नीफ़ा अन्नोमान बिन इस्माईल अस्सिमालीः इन्हें फ़क़ीह सालेह़ कहा गया है। (अत्तबह़ीर फ़िलमोजमिल कबीर लिस्समआ़नी 2/346)

(7) अबू ह़नीफ़ा अह़मद बिन अल मुसद्दक़ बिन मोह़म्मद नीसापुरी। (अलजवाहिरुल मुज़ीया 1/126)

(8) अबू ह़नीफ़ा जाफ़र बिन अह़मद बिन बहराम अलबाहिली अलफ़क़ीह अस्सतरबादी मारूफ़ बशहीद। (अलजवाहिरुल मुज़ीया 1/178)

(9) अबू ह़नीफ़ा अ़ब्दुल मोमिन अत्तैमी अलह़नफ़ी। (अलजवाहिरुल मुज़ीया 1/332)

(10) अबू ह़नीफ़ा क़ैस बिन असरम अश्शैबानी। (अलजवाहिरुल मुज़ीया 1/414)

अ़ल्लामा सफ़दी ने इनके अ़लावा मुतअ़द्दिद नाम शुमार कराये हैं, वह लिखते हैः ''अबूह़नीफ़ा लक़ब की एक जमाअ़त है जिनमें साह़िबे मज़हब इमामे आज़म नोमान हैं।''

फिर उन्होंने दर्ज ज़ैल नाम ज़िक्र किये हैं।

अबू ह़नीफ़ा अस्सग़ीर अबू जाफ़र मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह।

अबू ह़नीफ़ा अन्नोमान अलक़ाज़ी अल मग़रेबी अलमालिकीः इनका नाम नोमान बिन मोह़म्मद बिन मन्सूर है।

अबू ह़नीफ़ा ख़तीबी मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह, मोह़म्मद बिन उसमान।

अबू ह़नीफ़ा अस्सालबी अश्शाइर, अबू ह़नीफ़ा क़हदम अल असवानी।

अबू ह़नीफ़ा मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल ग़नी। (अलवाफ़ी बिल वफ़यात 13/129)

इनमें से अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन मोह़म्मद अलमग़रिबी (मौतः 363 हि0) के तअ़ल्लुक़ से इमामे इब्ने हजर अ़सक़ालानी और ज़हबी ने लिखा हैः

मुसबेही ने कहाः दीनदार बुलन्द रुत्बा फ़क़ीह थे।

मुसबिही के अ़लावा दूसरों ने कहाः वह मालेकी थे। फिर रियासत के लालच में शीआ हो बये थे और बनू उबैद के मज़हब में दाखिल हो गये थे। अइम्मा के रद्द में किताबें लिखी हैं। उनकी तसानीफ़ से मालूम होता है कि वह ज़िन्दीक़ हो गये थे और दीन से निकल गये थे या मुनाफ़िक़ थे। (तारीखुल इस्लाम, लिसानुल मीज़ान 8/286)

ह़ासिले कलाम यह है कि बाज़ मोह़द्देसीन ने अबू ह़नीफ़ा नाम के मजरूह़ लोगों की मज़म्मत में जो अक़वाल ज़िक्र किये हैं उन्हें ख़लत मलत करके इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा पर चस्पॉ कर दिये गये हैं। इसके अ़लावा ह़ासेदीन व मुआ़नेदीन की तरफ़ से भी यह साज़िश हुई है कि उन्होंने मुसतनद मोह़द्देसीन के ह़वाले से इमामे आज़म के तअ़ल्लुक़ से झूटे अक़वाल गढ़कर किताबों में नक़्ल कर दिये हैं। ज़्यादा तर खवारिजो रवाफ़िज़ की तरफ़ से ऐसी साज़िश हुई है। क्योंकि इमामे आज़म के सबसे बड़े दुशमन खवारिज व रवाफ़िज़ थे। कूफ़ा में जिस ज़माने में खवारिज का ग़लबा था उस ज़माने में इमामे आज़म के

ख़िलाफ़ बहुत ज़्यादा झूटी अफ़वाहें और गलत पिरोपैगंडे फैलाये गये। मसलन यह कि:

अबू ह़नीफ़ा आमाल को ईमान के लिए ज़रूरी क़रार नहीं देते। उनके नज़दीक ईमान घटता बढ़ता नहीं। मोह़द्देसीन का कहना है कि आमाल ईमान में दाखिल हैं और ईमान घटता बढ़ता है। दर अस्ल इमामे अबू ह़नीफ़ा और आपके असह़ाब और मुतकल्लेमीन और मोह़द्देसीन के दरमियान 'लफ़्ज़ी इख्तिलाफ़' था। लेकिन एक लफ़्ज़ी इख्तिलाफ़ को दुश्मनाने इस्लाम ने खुफ़िया साज़िश से बड़ी हवा दी। नतीजा यह हुआ कि उसकी बुनियाद पर उम्मत दो धड़ों में तक़सीम हो गई और एक दूसरे पर लान तान बल्कि ज़लालतो गमरही के फ़त्वे भी दिए गए। हालांकि इस इख्तिलाफ़ की ह़क़ीक़त सिर्फ़ इतनी थी कि इमामे अबू ह़नीफ़ा और जो ह़ज़रात यह कहते थे कि आमाल ईमान का जुज़ नहीं, उनकी मुराद यह थी कि ईमान की ह़क़ीक़त तसदीक़े क़लबी है और तसदीक़ इज़आनो यक़ीन का नाम है जिसका मह़ल क़लब (दिल) है और आज़ा व जवारेह़ से सादिर होने वाले आमाल मसलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात और सदक़ात वग़ैरह ईमान की ह़क़ीक़त यानी तसदीक़े क़लबी के अजज़ा नहीं कि उनमें से कोई एक न पाया जाए तो ईमान ही न पाया जाए। चुनांचे कुरआने ह़कीम में ईमान का मह़ल दिल को कहा गया है। और कुरआने ह़कीम और अह़ादीसे सह़ीह़ा में मुतअ़द्दिद जगहों में आमाल की नफ़ी के साथ ईमान को साबित माना गया है। लिहाज़ा ऐसा हो सकता है कि अमल न हो लेकिन ईमान हो। फ़ासिक़ मोमिन है अगरचे उसका ईमान कामिल नहीं। अब सवाल यह उठता है कि फ़िर अ़मल वाले का ईमान कामिल और बेअ़मल का ईमान नाक़िस कैसे है? जबकि ईमान ज़्यादा और कम नहीं होता। तो इसका जवाब यह है कि कैफ़ियते ईमान की कमी और ज़्यादती मुराद है कि अ़मल होगा तो ईमान का नूर कामिल होगा और अ़मल नहीं होगा तो नूर नाक़िस होगा।

उसके बर ख़िलाफ़ दीगर मोह़द्देसीन का कहना है कि आमाल ईमान का जुज़ हैं, इससे उनकी मुराद यह नहीं थी कि अगर अ़मल नहीं होगा तो ईमान वाला ईमान से ख़ारिज हो जायेगा बल्कि मुराद यह थी कि

ईमान वाला रहेगा लेकिन उसका ईमान नाक़िस रहेगा। यानी फ़ासिक़ व बेअ़मल मोमिन के मामिन होने में इमामे अबू ह़नीफ़ा और दीगर मोह़द्देसीन का कोई इख्तिलाफ़ नहीं था। लेकिन ख़वारिज का कहना था कि बेअ़मल फ़ासिक़ मोमिन ही नहीं रहता। गुनाह के इर्तिकाब से वह ईमान से ख़ारिज और काफ़िर हो जाता है। इमामे आज़म ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं। इर्तिकाबे कबीरा से मोमिन ईमान से ख़ारिज नहीं होता। ख़वारिज के मुक़ाबिले में तमाम अहले सुन्नत का यह नज़रिया था, ख़्वाह मोह़द्देसीन हों या फ़ुक़हा या मुतकल्लेमीन। शुरू शुरू में ऐसे लोगों को जो मुरतकिबे कबीरा को काफ़िर नहीं कहते थे बल्कि अहले निजात कहते थे इन्हें अहले इरजा (मुरजिया) कहा जाता था। यानी यह लोग मुरतकिबे कबीरा के तअ़ल्लुक़ से मग़फ़िरत की रिजा और उम्मीद रखने वाले हैं। लिहाज़ा मुरजी या अहले इरजा होना ऐब नहीं था बल्कि यह अहले सुन्नत की अ़लामत के तौर पर बोला जाता था। लेकिन दुश्मनों ने साज़िश की और अहले इरजा के नाम पर ऐसे लोग पैदा हो गए जिन्होंने अपने आप को मुरजिया कहा और अपना यह नज़रिया पेश किया कि अगर ईमान है तो अ़मल की कोई ज़रूरत नहीं। लिहाज़ा ईमान की ह़ालत में चाहे जितना गुनाह किया जाए उससे ईमान कुछ मुतअ़स्सिर नहीं होगा। ज़ाहिर है कि यह नज़रिया अहले सुन्नत के नज़रिये के ख़िलाफ़ था। लिहाज़ा अहले सुन्नत ने उन्हें मुरजिया गुमराह फ़िर्क़ा क़रार दिया। लेकिन इस ख़ुफ़िया साज़िश में दुश्मनों के साथ मुआ़नेदीन ने इमामे आज़म और उनके असह़ाब के ख़िलाफ़ यह पिरोपेगन्डा फैलाया कि यह लोग मुरजिया हैं। हालांकि ह़क़ीक़त से इसका कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। इमामे आज़म और आपके असह़ाब को मुरजिया कहने वाले आपके दुश्मन या तो ख़वारिज व रवाफ़िज़ हैं या आपके ह़ासेदीन व मुआ़नेदीन। दुश्मनों और ह़ासिदों के पिरोपैगन्डे के जाल में फंस कर बाज़ मोह़द्देसीन ने इमामे आज़म और आपके असह़ाब पर जरह़ो क़दह़ के ख़ुब तीर बरसाए और शुऊरी या लाशुऊरी तौर पर ख़वारिज के मिशन को ख़ूब तक़वियत पहुंचाई गई और आज भी ख़वारिज की रूह़ ग़ैर मुक़ल्लेदन और अहले ह़दीस के जिस्मों में

दाख़िल होकर इन्हें उसी मिशन को तक़वियत पहुंचाने के लिए मुज़तरिब व बेचैन कर रही है।

इसकी एक मिसाल ह़ाफ़िज़ जुबैर अ़ली ज़ई और उनके हमनवा हैं जो इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा और आपके असह़ाब को ग़ैर सिक़ह, ग़ैर मामून, ज़ईफ़, मुनकिर, मतरूक बल्कि मुरजी गुमराह साबित करने में पूरी दाख़िली व ख़ारिजी ताक़त सर्फ़ कर रहे हैं।

इमामे आज़म के तअ़ल्लुक़ से यह प्रोपेगन्डा भी फैलाया गया कि वह कुरआन को मखलूक़ कहते हैं। उसको अल्लाह का कलाम नहीं मानते। लिहाज़ा वह फ़िर्क़ये बातिला फ़िर्क़ये जहमिया से तअ़ल्लुक़ रखते हैं। क्योंकि फ़िर्क़ये जहमिया अल्लाह की सिफ़ते कलाम को नहीं मानता। कुरआन के मख़लूक़ और ग़ैर मख़लूक़ हाने का मसअला भी बहुत ख़तरनाक था। जिसने उम्मते मुसलिमा को क़त्लो खूरेज़ी तक पहुचा दिया था। हालांकि कुरआन के मख़लूक़ और ग़ैर मख़लूक़ होने का मसअला भी दर ह़क़ीक़त निज़ाई नहीं था बल्कि उसमें इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ लफ़्ज़ी था। अहले सुन्नत में से जो लोग उसको मख़लूक़ कहते थे उनकी मुराद यह थी कि यह कुरआन जो अलफ़ाज़ व नुक़ूश के साथ हम तिलावत करते हैं, जो काग़ज़ में लिखा हुआ है, जिसको अलफ़ाज़ो सूरत के साथ हम तिलावत करते हैं, वह कुरआन यानी अलफ़ाज़ो नुक़ूश और खुतूत वग़ैरा को मख़लूक़ कहते थे और कुरआन कलामुल्लाह जो अल्लाह की ज़ात के साथ उसकी सिफ़ते लाज़िमा दाइमा है वह ग़ैर मख़लूक़ है। दानों फ़रीक़ मन्शा व मुराद में मुत्तफ़िक़ होने के बावुजूद इस बात के बोलने में इख़्तिलाफ़ रखते थे कि कुरआन को मख़लूक़ कहना दुरुस्त है या नहीं। बाज़ उसको दुरुस्त कहते थे और बाज़ दरुस्त नहीं कहते थे। फिर जो लोग इसको दुरुस्त नहीं कहते थे उनमें बाज़ मुतशद्दिद थे और बाज़ एतेदाल सपंद मुतशद्देदीन ने अपने मुख़ालिफ़ीन पर सख़्त तनक़ीद की और उनकी तफ़्सीक़ व तज़लील बल्कि तकफ़ीर भी कर दी। यानी उन्हे फ़ासिक़, गुमराह और काफ़िर तक कह डाला। ऐसे ही मुतशद्देदीन की तरफ़ से इमामे आज़म पर जरह़ व क़दह़ की गई है जिसका जवाब एतेदाल व ह़क़ पसंद उलमाये अहले सुन्नत न दिया है।

एक अहम पैग़ाम–जवानाने अहले सुन्नत के नाम

अहले सुन्नत के नौजवानों को बातिल गमराह फ़िर्क़ों से महफ़ूज़ रखने के लिए कुछ ज़रूरी हिदायात पेश की जाती हैं। अगर उनको अपने दिलो दिमाग़ में बसा लें और उन पर अ़मल करें तो इंशा अल्लाह गुमरही व बद अ़क़ीदगी के दलदल में फंसने से महफ़ूज़ रहेंगे।

➢ यह याद रखें कि अहले सुन्नत के सिवा सब बातिल व बद अ़क़ीदा और गुमराह फिर्क़े हैं। इसलिए उलमाये अहलेसुन्नत के सिवा किसी फ़िर्क़े के आ़लिम, मुबल्लिग़ व दाई से कुरआन व ह़दीस की तालीम ह़ासिल न करें। अगर कोई बद अक़ीदा गुमराह कुरआन व ह़दीस के ह़वाले से कोई बात कहे तो उसको उलमाये अहले सुन्नत की जानिब रुजू किये बग़ैर आंख बंद करके क़बूल न करें। क्योंकि कुरआन व ह़दीस को आड़ बना कर बातिल फ़िर्क़े अपनी बदअ़क़ीदगी को आ़म करते हैं। इमामे मुसलिम ने सह़ी मुसलिम शरीफ़ के शुरू में जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते मोह़म्मद बिन सीरीन रह़मतुल्लाहे अलैह के ह़वाले से लिखा है कि अहले सुन्नत के सिवा किसी से कोई ह़दीस न सुनी जाऐ।

➢ यह बात वाज़ेह़ रहे कि फ़ुरूई व फ़िक़ही मसाइल में अहले सुन्नत ह़नफ़ी, मालेकी, ह़म्बली और शाफ़ेई में मुनह़सिर हैं। चारों मज़ाहिब से हटकर कोई भी बात करना इजमा के ख़िलाफ़ और गुमरही है। चारों फ़िक़ही मज़ाहिब के ह़क़ होने और उनके अ़लावा के गुमराह होने पर इजमा क़ाइम हो चुका है।

अल्लामा तह़तावी (मोतः 1231 हि0) ने ह़ाशियतुद्दुर्र में फ़रमाया है कि निजात वाली जमाअ़त जिसे अहले सुन्नत व जमाअ़त कहा जाता है आज मज़ाहिबे अरबा के मानने वालों हनफ़ी, मालेकी, शाफ़ेई और ह़म्बली में मुनह़सिर है। इस ज़माने में जो जमाअ़त उनसे बाहर है वह अहले बिदअ़त यानी गुमराह और अहले नार है।

➢ रफ़ेयदैन, आमीन बिलजहर (नमाज़ में ज़ोर से आमीन कहना), इमाम के पीछे क़िरअत करना वग़ैरह फ़िक़ही मसाइल में चारों इमामों में से जिस इमामे की तक़लीद करता है उसके मुताबिक़ अ़मल किया करे।

क्योंकि चारों इमामे अहले सुन्नत हैं। ग़ैर मुक़ल्लेदीन, अहले ह़दीस वहाबी वग़ैरह किसी के कहने पर अपने इमाम के तरीक़े को हरबिज़ न छोड़े। क्योंकि ह़नफ़ी, मालेकी, शाफ़ेई और ह़म्बली ही अहले सुन्नत हैं बाक़ी सब गुमराह व बद अ़क़ीदा हैं। अहलुल ह़दीस गिरोहे मोह़द्देसीन को कहा जाता है, मोह़द्देसीन में बाज़ खुद मुजतहिद थे। यानी कुरआन व अह़ादीस से मसअला निकालते थे। जैसे इमामे अह़मद इब्ने ह़म्बल और इमामे मालिक और बाज़ मुक़ल्लिद थे जैसे इमामे तिरमिज़ी शफ़ेई थे। जो मोह़द्दिस मुजतहिद थे वह मुक़ल्लिद नहीं थे और जो मुक़ल्लिद थे वह मुजतहिद नहीं थे। लेकिन दौरे ह़ाज़िर में हर कसो नाकस जिसे कुरआन व ह़दीस की नुसूस के मदारिज, उसूले इस्तिंबात, नासिख़ो मन्सूख़, ज़ाहिर, नस्स, मुफ़स्सर, मोह़कम, मुश्किल, मुजमल, मुताहशबेह, मोअव्वल में तमीज़ करने की सलाह़ियत नहीं, रिवायत व दिरायत और सनदो मतन के एतेबार से अक़सामे अह़ादीस का इल्म नहीं ह़द यह है कि जिसे कुरआन व ह़दीस की इबारत ख्वानी नहीं आती बल्कि क़यामत यह है कि जिसे अ़रबी ज़बान की बिल्कुल पहचान नहीं वह भी अपने आप को ''अहले ह़दीस'' बलफ़ज़े दीगर मोह़द्दिस कहलाता है। और कुरआन व ह़दीस से खुद फ़िक़ही अह़काम समझने का दावा करता है। ऐसे लोगों से सुन्नी नौजवान दुर रहें और अपने आपको उलमाये अहले सुन्नत व जमाअ़त से हमेशा जोड़े रखें। इंशा अल्लह गुमराह फ़िर्क़ों की गुमराहियों से मह़फ़ूज़ रहेंगे।

अल्लाह तआ़ल इस्लाम को बातिल फ़िरक़ों के शर से बचाए और सिवादे आज़म अहले सुन्नत व जमाअ़त को कुव्वत व इस्तेहकाम व इजतेमाइयत अता फ़रमाये ।

माख़ज़ व मराजे (बाएतबारे हुरूफ़े तहज्जी)

किताब	मोअल्लिफ़	मौत	मतबा	सन
अलकुरआनुल करीम	–	–	–	–
अल आसार	इमामे अबू यूसुफ़	182 हि0	दारुल कुतुब अल इल्मिया, बैरूत	–
आसारुस्सुनन				
अल इबाना अ़न उसूलिद्दियाना	अबूल हसन अशअ़री	324 हि0	दारुल अंसार क़ाहिरा	1397 हि0
इतहाफुल ख़ैरतिल महरा	शहाबुद्दीन किनानी शफ़ेई	840 हि0	दारुल वतद लिन्नश्र	1999 ई0
इतहाफुल महरा	इब्ने हजर अ़सक़लानी	852 हि0	मजमउल मलिक फ़हद मदीनये मुनव्वरा	1994 ई0
असरुल हदीसिश्शरीफ़...	शेख़ अ़व्वामा			
अखबारे अबी हनीफ़ा व ...	हसन बिन अ़ली सैमिरी	436 हि0	आलिमुल कुतुब, बैरूत	1985 ई0
अखबरुल कुज़ात	मोहम्मद बिन ख़लफ़ बिन हयान	306 हि0	अल मकतबा अत्तिजारियह मिस्र	1947 ई0
अदबुल मुफ़रद	मो0 बिन इस्माईल बुख़ारी	256 हि0	दारुल बशइरिल इस्लामिया, बैरूत	1989 ई0
अलइरशाद फ़ी मारफ़ते उलमाइल हदीस	अबुल याला ख़लीली	446 हि0	मकतबा अर्रुश्द, रियाज़	1409 हि0
अज़ाहरुर्रियाज फ़ी अखबारिल क़ाज़ी अ़याज़	शहाबुद्दीन तिलमिसानी	1041 हि0	मतबअ़तो लजनतित्तालीफ़ वत्तरजमा, क़ाहिरा	1939 ई0
अतराफुल मुसनद अलमोतली	इब्ने हजर असक़लानी	852 हि0	दारे इब्ने कसीर, दिमश्क़	
असदुल ग़ाबा	इब्नुल असरी अलजज़री		दारुलकुतुब अलइल्मिया, बैरूत	1994 ई0
आयानुल अस्र व आवानुन्नस्र	सलाहुद्दीन सफ़दी	764 हि0	दारुल फ़िक्र अल मुआसिर	1998 ई0
अलइग़्तिबात लेमन रवा मिनर्रोवात...	बुरहानुद्दीन हलबी	841 हि0	दारुल हदीस, क़ाहिरा	1988 ई0
अलइक़तिराह फ़ी	इब्ने दक़ीकुल ईद	702 हि0	दारुलकुतुब	

बयानिल इस्तिलाह़			अलइलमिया, बैरूत	
इकमाल तहज़ीबुल कमाल	मुग़ल्लता बिन कुलैह ह़नफ़ी	762 हि0	अअफ़ारूकुल ह़दीसा लित्तबाअह वन्नश्र	2001 ई0
अलइन्तिक़ा फ़ी फ़ज़ाइलिल अइम्मा. .	इब्ने अ़ब्दुल बर्र मालिकी	463 हि0	दारुलकुतुब अलइलमिया, बैरूत	
अलअन्साब	अ़ब्दुल करीम समआ़नी	562 हि0	मजलिसे दायरतुल मआ़रिफ़ अलउसमानिया, हैदराबाद	1962 ई0
बिदायतुल मुजतहिद	इब्नो रुश्दिल ह़फ़ीद	595 हि0	दारुल ह़दीस, क़ाहिरा	2004 ई0
अल बदरुल मुनीर	इब्नो मुलक़्क़िन शाफ़ेई	804 हि0	दारुल हिजरा लिन्नश्र वत्तोज़ी, रियाज़	2004 ई0
अल बिनाया शरहे हिदाया	बदरुद्दीन ऐनी	855 हि0	दारुलकुतुब अलइलमिया, बैरूत	2000 ई0
तारीखुल इस्लाम	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0	दारुल ग़रबिल इस्लामी	2003 ई0
तारीख़े बग़दाद	इब्ने ख़तीब बग़दादी	463 हि0	दारुल ग़रबिल इस्लामी, बैरूत	2002 ई0
अत्तारीखुल कबीर	मो0 बिन इस्माईल बुख़ारी	256 हि0	मजलिसे दायरतुल मआ़रिफ़ अलउसमानिया, हैदराबाद	
अत्तबईन लेअसमइल मुदल्लेसीन	बुरहानुद्दीन ह़लबी	841 हि0	दारुल ग़रबिल इस्लामी, बैरूत	1986 ई0
अत्तहबीर फ़िल मोजमिल कबीर	अ़ब्दुल कारीम समआ़नी	562 हि0	रियासतो दीवानिल औक़ाफ़, बग़दाद	1975 ई0
तह़रीरो उलूमिल ह़दीस	अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ जदी	मुआ़सिर	मोअस्सतुर्रय्यान बैरूत	2003 ई0
तोह़फ़तुल एह़वज़ी	अ़ब्दुर्रह़मान मुबारक पुरी	1353 हि.0	दारुलकुतुब अलइलमिया, बैरूत	

तोहफ़तुल अशराफ़ बेमारेफ़तिल अतराफ़	जमालुद्दीन मुज़ी	742 हि0	अलमकबतुल इस्लामी	1983 ई0
अत्तह़क़ीक़ फ़ी मसाइलिल ख़िलाफ़	जमालुद्दीन इब्ने जौज़ी	597 हि0	दारुलकुतुब अलइलमिया, बैरूत	
तखरीजे अहादीसे इह़याउल उलूम	जमाअ़तुन मिनलउलमा		दारुल आ़सिमा लिन्नश्र रियाज़	1987 ई0
तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0	दारुलकुतुब अलइलमिया, बैरूत	1998 ई0
अत्तक़रीब	यह़या बिन शरफ़ नौवी	676 हि0	दारुल किताब अल अ़रबी, बैरूत	1985 ई0
अत्तलख़ीसुल हबीर	इब्ने ह़जर असक़लानी	852 हि0	दारुलकुतुब अलइलमिया, बैरूत	1989 ई0
तन्क़ीहुत्तह़क़ीक़ फ़ी अह़ादीसित्तालीक़	इब्नो अ़ब्दिल हादी	744 हि0	अज़वाउस्सलफ़, रियाज़	2000 ई0
तन्क़ीहुत्तह़क़ीक़	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0	दारुल वतन, रियाज़	2000 ई0
तहज़ीबुत्तहज़ीब	इब्ने ह़जर अ़सक़लानी	852 हि0	दायरतुल मआ़रिफ़ अन्निज़ामिया, हैदराबाद	1326 हि0
तहज़ीबुल कमाल	जमालुद्दीन मुज़ी	742 हि0	मोस्सतुर्रिसाला, बैरूत	1980 ई0
अस्सिक़ात	मोह़म्मद बिन ह़िब्बान बुस्ती	354 हि0	दायरतुल मआ़रिफ़ अन्निज़ामिया, हैदराबाद	1973 ई0
जामिउल अह़ादीस	जलालुद्दीन सुयूती	911 हि0		
जामे तिरमिज़ी	मोह़म्मद बिन ईसा तिरमिज़ी	279 हि0	शिरकतो मकतबा व मतबआ मुस्तफ़ा अलबानी, मिस्र	1975 ई0
जामउल मसानीद	मोह़म्मद बिन मह़मूद ख्वारज़मी	665 हि0		
अलजरह़ वत्तादील	इब्नो अबी ह़ातिम राज़ी	327 हि0	दायरतुल मआ़रिफ़ अन्निज़ामिया, हैदराबाद	1952 ई0

जुज़ये रफ़ेयदैन	मोह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी	256 हि0		
अलजौहरुन्नक़ी	अ़लाउद्दीन इब्ने तुरकमानी	750 हि0	दारुल फ़िक्र	
अलजवाहिरुल मुज़ीअह फ़ी तबक़ातिल ह़नफ़ियह	अ़ब्दुल क़ादिर मोह़य्युद्दीन ह़नफ़ी	775 हि0	मीर मोह़म्मद कुतुब ख़ाना, कराची	
लख़ैरातुल ह़िसान	अह़मद बिन ह़जर हैसुमी मक्की	973 हि0	दारुलकुतुब अलइलमिया, बैरूत	1983 ई0
अद्दिराया	इब्ने ह़जर असक़लानी	852 हि0	दारुल मारेफ़त, बैरूत	
अद्दुररुस्सुन्निय्यह फ़िल अजवेबतिल नजदिय्यह	उलमाये नजद			1996 ई0
दीवानुज़्ज़ोफ़ा	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0	मकतबतुन्नहज़ह अल ह़दीसिय्यह, मक्कतुल मुकर्रमह	1967 ई0
ज़ैलुल क़ौलिल मुसद्दद	मोह़म्मद सिबग़तुल्लाह अलमदारेसी	1280 हि0	मकतबा इब्ने तैमियह, क़ाहिरा	1401 हि0
रिजालुल मुन्ज़िरी	ज़कीउद्दीन मुन्ज़िरी	656 हि0	दारुलकुतुब अलइलमिया, बैरूत	1417 ई0
अल रौज़तुल नदिय्यह	सिद्दीक़ ह़सन ख़ां क़न्नौजी	1307हि0	दारुल मरेफ़त	
सफ़रुस्सआ़दा	मोहम्मद बिन याकूब फ़ीराज़बादी	817 हि0		
सुनने इब्ने माजा	मोह़म्मद बिन यज़ीद कज़वीनी	273 हि0	दरोएहयाइल कुतुबिल इल्मिय्यह, बैरूत	
सुनने अबू दऊद	सुलैमान बिन अशअ़स सजिस्तानी	275 हि0	अलमकतबा अलसरिय्यह, बैरूत	
सुनने दार कुत्नी	अ़ली बिन उमर दार कुत्नी	385 हि0	मोअस्ससह अल रिसाला, बैरूत	2004 ई0

अस्सुननुस्सुग़रा	अह़दम बिन शुऐब निसई	303 हि0	मकतबा अलमतबूआत अल इस्लामियह, बैरूत	2004 ई0
अस्सुननुल कुबरा	अ़मद बिन हुसैन बैहक़ी	485रहि0	दरोएह़याइल कुतुबिल इल्मिय्यह, बैरूत	2003 ई0
अस्सननुल कुबरा	अह़मद बिन शुऐब निसई	303 हि0	मोअस्ससतुर्रिसाला , बैरूत	1421 हि0
सुननुस्साई	अह़मद बिन शुऐब निसई	303 हि0	मकतबुल मतबूआ़तिल इस्लामियह, ह़लब	1986 ई0
सियरोआलिमन्नुबलT	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0	मोअस्ससतुर्रिसाला , बैरूत	1985 ई0
शरहे अबीदाऊद	बदरुद्दीन ऐनी	855 हि0	मकतबा अर्रुश्द, रियाज	1999 ई0
शरहे मश्किलिल आसार	अह़मद बिन मोह़म्मद बिन सलामा तह़ावी	321 हि0	मोअस्ससतुर्रिसाला , बैरूत	1994 ई0
शरहे मुसनदे अबी ह़नीफ़ा	अ़ली बिन सुलतान अलक़ारी	1014 हि0	दारुल कुतुबिल इल्मिया,बैरूत	1985 ई0
शरहे मआ़निल आसार	अह़मद बिन मोह़म्मद सलामा तह़ावी	321 हि0	आ़लिमुल कुतुब	1994 ई0
सुब्हुल आशा फ़ी सनाअ़तिल इंशा	अह़मद बिन अ़ली फ़ज़ारी	821 हि0	दारुल कुतुबिल इल्मिया,बैरूत	
सह़ी इब्ने ह़िब्बान	मोह़म्मद बिन ह़िब्बान	354 हि0	मोअस्ससतुर्रिसाला , बैरूत	1988 ई0
सह़ी अबी अ़वाना				
सह़ीहुल बुख़ारी	मोहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी	256 हि0	दारो तौक़िन्नजात	1422 हि0
सह़ी मुसलिम	मुसलिम बिन ह़ज्जाज कुशैरी	261 हि0	दारो एह़यातित्तुरास अल अ़रबी	
अज़्ज़ोफ़ा वल मतरूकून	अबुल फ़र्ज इब्नो जोज़ी	597 हि0	दारुल कुतुबिल इल्मिया,बैरूत	1406 हि0
तबक़ातुल हुफ़्फ़ाज़	जलालुद्दीन सुयूती	911 हि0	दारुल कुतुबिल इल्मिया,बैरूत	1403 हि0
अत्तबक़ातुस्सुन्निय	तक़ियुद्दीन ग़ज़्ज़ी	1010 हि0		

ह फ़ी तराजिमिल हनफ़ियह				
तबक़ातुल मुदल्लेसीन	इब्ने ह़जर असक़लानी	852 हि0	मकतबतुल मिनार, उम्मान	1983 ई0
उकूदुल जमान फ़ी मनाक़िबिल इमामे अबी ह़नीफ़ा	मोह़म्म्द बिन यूसुफ़ सालेही दिमशक़ी	942 हि0		
अलउकूदुर्रियह फ़ी मनाक़िबे इब्ने तैमियह	इब्नो अ़ब्दुल हादी	744 हि0	दारुल कातिबिल अ़रबी, बैरूत	
अल उकूदुल्लोलुइया फ़ी तारीख़िद्दौलति र्रसूलियह	अ़ली बिन हुसैन जुबैदी	812 हि0	मरकज़ुद्दिरासात वल बुहूसुल यमनी, सनआ	1983 ई0
अलइलल	इमामे अह़मद बिन ह़म्बल	241 हि0	दारुल खानी, रियाज़	2001 ई0
उमदतुल क़ारी	बदरुद्दीन ऐनी	855 हि0	दारो एह़यातित्तुरास अल अ़रबी, बैरूत	
अलकाशिफ़	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0	दारुल क़िबला लिस्सक़ाफ़तुल इस्लामियह, जद्दा	1992 ई0
अलकामिल फ़िज़्ज़ोफ़ा	अबू अह़मद बिन अ़दी	365 हि0	अलमकुतुबुल इल्मियह, बैरूत	1997 ई0
किताबुल आसार	मोह़म्मदबिन ह़सन शैबानी	189 हि0	दारुल कुतुबिल इल्मिया,बैरूत	
किताबुल हुज्जह अ़ला अहलिल मदीना	मोह़म्मदबिन ह़सन शैबानी	189 हि0	आलिमुल कुतुब, बैरूत	1403 हि0
कशफ़ुल मोअ़ज़्ज़लात				
कन्जुल उम्माल	अ़ली मुत्तक़ी हिन्दी	975 हि0	मोअस्ससतुर्रिसाला , बैरूत	1981 ई0
अलकवाकेबुन्नीरान	बरकात बिन अह़मद बिन अल अकयाल	929 हि0	दारुल मामून, बैरूत	1981 ई0
लिसानुल मीज़ान	इब्ने ह़जर अ़सक़लानी	852 हि0	दायरतुल मआ़रिफ़ अन्निज़ामियह, हैदराबाद	1971 ई0

अलमजरूहीन मिनल मोहद्देसीन	मोहम्मद बिन हिब्बान	354 हि0	दारुल वई, हल्ब	1396 ई0
मुखतसरुल अहकाम	हसन बिन अल तोसी	312 हि0	मकतबतुल गुरबा अल असरियह, मदीना मुनव्वरह	1415 हि0
अलमुखतलेतीन	ख़लील बिन कैकलदी अलाई	761 हि0	मकतबतुल ख़ान्जी, क़ाहिरा	1996 ई0
अमुदल्लेसीन	वलीयुद्दीन इब्नो इराक़ी	826 हि0	दारुल वफ़ा	1995 ई0
अलमदूनतुल कुबरा				
मिरक़ातुल मफ़ातीह	अली बिन सुलतान क़ारी	1014 हि0	दारुल फ़िक्र, बैरूत	2002 ई0
मुस्तखरजे अबी अवाना	याकूब बिन इसहाक़ सफ़राइनी	316 हि0	दारुल मारेफ़ा, बैरूत	1998 ई0
मुसनदे अबी हनीफ़ा	अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद हारेसी	340 हि0		
मुसनदे अबी हनीफ़ा	अहमद बिन अब्दुल्लाह अबू नऐम असबहानी	430 हि0	मकतबतुल कौसर, रियाज़	1415 हि0
मुसनदे अबी नुऐम				
मुसनदे अबी याला	अहमद बिन अली अबुल याला मूसिली	307 हि0	दारुलमामून लित्तुरास, दिमश्क़	1404 हि0
मुसनदुल इमामे अहमद	इमामे अहमद इब्ने हम्बल	241 हि0	मोअस्ससतुर्रिसाला, बैरूत	1429 हि0
मुसनदे अबिल जअद	अली बिन जअद अल बग़दादी	230 हि0	मोअस्ससतुर्रिसाला, बैरूत	1990 ई0
मुसनदुल हुमैदी	अब्दुल्लाह बिन जुबैर हुमैदी	219 हि0	दारुल सिक़ह दिमश्क़	1996 ई0
मुसनद अत्तयालिसी	सुलैमान बिन दाऊद तयालिसी	204 हि0	दारे हिज्र, मिस्र	1999 ई0
अलमुसन्नफ़	अबूबक्र बिन अबी शैबा	235 हि0	मकतबा अर्रुश्द, रियाज़	1409 हि0
अलमुसन्नफ़	अब्दुर्रज़्ज़ाक़ सनआनी	211 हि0	अल मकतबुल इस्लामी, बैरूत	1403 हि0
अल मतालेबुल आलिया	इब्ने हजर असक़लानी	852 हि0	दारुल आसिमा, सऊदिया अरबिया	1419 हि0

तारीखुस्सिक़ात	अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अल अ़जली	261 हि0	दारुल बाज़	1984 ई0
अलमोजमुल कबीर	सुलैमान बिन अह़मद तिबरानी	360 हि0	मकतबा इब्ने तैमिया, क़ाहिरा	1994 ई0
मारेफ़तुस्सुनन वल आसार	अह़मद बिन हुसैन अबू बक्र बैहक़ी	485 हि0	जामिया अद्दिरासातिल इस्लामिया, पाकिस्तान	1412 हि0
मग़ानिल अख़यार	बदरुद्दीन ऐनी	855 हि0	दारुल कुतुबिल इल्मिया,बैरूत	2006 ई0
अलमुग़नी फ़िज़्ज़ोफ़ा	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0		
मनाक़िबे अबी ह़नीफ़ा	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0	अलमआ़रिफ़ अन्नोमानिया, हैदराबाद	
मनाक़िबे असदिल्लाहिल ग़ालिब	इब्नुल जज़्री	832 हि0		
मनाक़िबुल इमामे अबी ह़नीफ़ा	मुवफ़्फ़ेकुद्दीन मक्की	567 हि0	हैदराबाद, दकन	1321 हि0
मौसूअ़तो अक़्वालिल इमामे अह़मद	जमाअ़त मिनल उलमा		आ़लिमुल कुतुब, बैरूत	1997 ई0
मौसूअ़तो अक़्वाले अबिल हसन दार कुत्नी	मजमूआ़ मिनल मोअल्लेफ़ीन		आ़लेमुल कुतुब, बैरूत	2001 ई0
मुअत्ता इमामे मोह़म्मद	मोह़म्मद बिन ह़सन शैबानी	189 हि0	अलमकतबतुल इल्मिया, बैरूत	
मीज़नुल एतेदाल	शम्सुद्दीन ज़हबी	748 हि0	दारुल मारेफ़त लित्तबाआ़ वन्नश्र, बैरूत	1063 ई0
नशरुस्सहीफ़ा	अबू अ़ब्दिर्रह़मान हमदानी	1422 हि0	दारुल ह़रमैन, क़ाहिरा	
नस्बुर्राया	जमालुद्दीन ज़ैलेई	762 हि0	मोअस्ससतुर्रय्यान, बैरूत	1997 ई0
अलवाफ़ी बिल वफ़यात	सलाहुद्दीन सफ़दी	764 हि0	दारो एह़यातित्तुरास अल अ़रबी, बैरूत	2000 ई0

मुसन्निफ़ की किताबें

1. अक़ाइदे अहले सुन्नत (कुरआन व ह़दीस की रौशनी में) (मतबूआ़)
2. फ़ज़ाइले शाबान व शबे बराअ़त (अह़ादीसे मोतबेरा की रौशनी में) (मतबूआ़)
3. ईद मीलादुन्नबी की शरई हैसियत। मतबूआ़
4. फ़ज़ाइले माहे रजब (मतबूआ़)
5. शबे बराअ़त कैसे मनाये ? (मतबूआ़)
6. मग़फ़िरत का सामान माहे रमज़ान मारिसाला 20 रकआ़त तरवीह़ (मतबूआ़)
7. क़व्वाली का शरई हुक्म(मतबूआ़)
8. तज़किरये मौलाना सय्यद अह़मद अशरफ़ कछौछवी (मतबूआ़)
9. सरकारे कलां बहैसियते मुरशिदे कामिल (मतबूआ़)
10. मकतूबाते सरकाले कलां (मतबूआ़)
11. ख़ुतबाते सरकारे कलां (मतबूआ़)
12. आदाबे सुह़बत व ज़ियारते मशाइख़ (मखदूम अशरफ़ सिमनानी) तरजमा व तह़शिया (मतबूआ़)
13. नमाज़ में नाफ़ के नीचे हाथ बांधना (अह़ादीस व आसारे मोतबेरा की रौशनी में)(मतबूआ़)
14. तर्के रफ़ेयदैन (अह़ादीस व आसारे सहीह़ा की रौशनी में) (मतबूआ़)
15. फ़िस्क़े यज़ीद (अह़ादीस व आसारे मोतबेरा के ह़वाले से) (मतबूआ़)
16. इमामे ह़सन रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो को ज़हर किसने दिया? (ग़ैर मतबूआ़)
17. लक़बे इमामे आज़म (ग़ैर मतबूआ़)
18. क्या तरावीह़ आठ रकअ़त सुन्नत है? (इंगलिश) (मतबूआ़)
19. मोजिज़ये रद्दे शम्स (जलालुद्दीन सुयूती व यूसुफ़ सालेही दिमश्क़ी) तरजमा व तह़शिया (मतबूआ़)
20. फ़ज़ाइले ज़िक्रो ज़ाकेरीन (जलालुद्दीन सुयूती) तरजमा (मतबूआ़)